Jaina Vividha Sâhitya Shâstra Mâlâ No. 8.

JAINA INSCRIPTIONS.

Containing Index of Places, glossary of names of Shrâvaka Castes and Gotras of Gachhas and Achâryas with dates.

Collected & Compiled

BY

Puran Chand Nahar, M.A.,B.L., M.R.A.S.,

Vakil, High Court; Examiner, Calcutta University; Member, Asiatic Society of Bengal; Behar & Orissa Research Society; Sahitya Parishad, Calcutta; Jaina Shwetambar Education Board, Bombay; &c. &c.

PART I.

(With plates)

CALCUTTA.
1918

Price Rs. 5/-

C.C. BOOK STALL,
9, Shama Ch. De St.,
Calcutta.

जैन-विविध-साहित्य-शास्त्रमाला [८]

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकायों से युक्त ।

प्रथम खण्ड ।

संग्रह कर्त्ता

पूरणचन्द नाहर, एम. ए., बि. एल.,

वकील, हाईकोर्ट; रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक सोसायटी बेंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार-उड़िसा आदि के मेंबर, विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता

वीरसंवत् २४४४

मूल्य —५)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही है। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हों के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुइ है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूं ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखतेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्गरेजी जर्नेल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी घुस पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहां के लेख देखे बिना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े है इतने इकट्ठे हो गये कि उसका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूं। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूं, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से शीघ्र क्षय हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं:—

१ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
३ । कुशिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदि के नाम ।
५ । आचार्यों के नाम, शिष्यों के नाम, पट्टावली ।
६ । देश, नगर, ग्रामों के नाम । ७ । कारिगरों के, खोदनेवालों के नाम ।
८ । राजाओं के, मंत्रियों के नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरोक्त विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्यों के गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संवत्, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुज्ञ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरीतिसे पाया नहीं जाता है:—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि "ओसवाल" ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उवएश [४] ऊएश [५] उयसवाल [६] ओसवाल [७] ओश [८] ओसवाल। लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक 'ओसवाल' हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्यों के नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें बिलकुल नहीं है। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसी बहुतसी कठिनाइयां मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नहीं गया है।

यह "लेख संग्रह" संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुज्ञ पाठक समझ सक्ते हैं; "नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।" अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहांके जैन लेखों को प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना।

कलकत्ता
इ० स० १९१५

निवेदक—
पूरणचन्द नाहर।

सूचीपत्र।

पत्रांक

अजमेर।

जयपुर।

जोधपुर।

दिनाजपुर।

धुलेवा रिखभदेव (मेवाड़)

पालीताणा (काठियावाड़)

पत्रांक

शत्रुंजय पर्वत।

राणकपुर।

सादड़ी।

नाकोडा।

बालोतरा।

बाड़मेड़।

मेड़ता।

प्रतिष्ठा स्थान ।

लेखांक

लेखांक

लेखांक

लेखांक

Metal Image (Ardha Padmasan) with inscription in Southern Character (back), in possession of the Author.

JAIN INSCRIPTIONS

जैन लेख संग्रह।

प्रान्त – पूर्व।

जिला मुर्शिदाबाद। स्थान अजिमगञ्ज।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर * ।

धातुओं के मूर्ति पर।

[1]

ॐ ॥ श्री सरवाल गछे असामूकेन कारित ॥ संतु ११९० × ।

---

* नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है। स्वर्गीया श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलालचन्दजी तत्पुत्र संग्रह कर्त्ताके परम पूज्य पिता राय सेताबचन्द नाहार बाहादुर हैं। पूर्व मन्दिर गङ्गास्रोतसे नष्ट हो जानेसे आप यह नवीन चैत्य संवत १९५४ में निर्माण करवाया है। प्रथम मन्दिरका लेख– ॥ श्री ॥ सं १९१३ मिति वैशाख सुदि ५ शुक्रवासरे श्री जिन भक्ति सूरि साखायो उ० श्री आनन्द वल्लभ गणि। तत् शिष्य पं। प्र। सदालाभ मुनि उपदेशात् श्री अजिमगञ्ज वास्तव्य नाहर श्री खड्गसिंहजी तत्पुत्र श्री उत्तमचन्दजी ततभार्या श्री मयाकुमर एषः श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संघाय समर्पितश्च विधिना सतां ॥ जं। यु। प्र। श्री जिन सौभाग्य सूरिजी विजय राज्ये ॥ श्री रस्तुः ॥ कल्याणमस्तुः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ १ ॥

× यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्तिके पीछे खुदा भया है, अक्षर बहोत प्राचीन है। मुसल्मानोंने चितोर दखल करनेके पूर्वमें यह मूर्त्ति वहां पर थी।

[2]

सं० १४६ए वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गछे प्रग्वाट ज्ञातीय व्य० ऊदा जार्या-ल्हत्त तत्पुत्र जोखा जार्या डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मूंडनेन श्री गछेश श्री मेरुतुंग सूरीणामुपदेशेन ज्राता श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्टितं श्री सूरिजिः ।

[3]

संवत् १४७ए वर्षे पोष वदि ५ शुक्रे मेहृमी वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातो श्रे० प्रतापसींह ज्ञा० सोहृगदे सुत डूदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंबं कारितं पूर्णिमा गछे प्रतिष्टितं श्री सूरि जिनवल्लज सूरि ।

[4]

सं० १५१० व० फा० शु० १२ उकेश वंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रतना सु० साजण ज्ञा० जइसिरि पु० षेढा ज्ञा० कणसिरि षेता ज्ञा० लषमसिरि पुत्र ३ कालु खेमधर देवराज ज्ञा० चांपू सा० हापाकेन ज्ञा० ३ गूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पट्टः कारितः तपा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिजिः प्रतिष्टितः ।

[5]

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञाती नाहर गोत्रे सा० लेला पु० लाषा ज्ञा० सोहिगि पु० चांपा सालू लादा सहितैः पितु श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ विंबं का० प्रति० श्री धर्मघोष ग० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे ज० श्री साधु रत्नसूरिजिः ।

[6]

संवत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० व्यव० आका जार्या रातलदे सुत लांगकेन ज्ञा० मानू नापा निजि । श्री शांतिनाथ विंबं कारा० प्र० पिप्प० श्री मुनि सिंधु सूरि पट्टे श्री अमरचंद्र सूरिजिः ॥ नापलिया ग्रामे ।

[7]

संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे । सी० श्री राजा जा० रजमलदे पु० दोसा ठाकुर धना हाथी लीवा हाथा जा० हरषमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतैः श्री पार्श्वनाथ विंबं कारा पितं श्री संडेर गछे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० हेमासुंदर पट्टे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

[8]

संवत १४९३ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे उकेश वंशे लूणीया गोत्रे साः षीमा पुत्र साः सधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः खरतर गछे ।

[9]

संवत १५१९ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीमाल ज्ञातीय सा० लाईयाकेन भार्या गांगी पुत्र हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रमाई श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । धंधूका वास्तव्य ॥

[10]

संवत १५५८ वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ ओकेश ज्ञातीय भारदा सुत मेहा भार्या पदमाई श्रेयसे भणसाली पताकेन श्रीवासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्रीजिनहंस सुरिभिः ।

[11]

संवत १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्त्तमाने मालवक देस ॥ उपकेस ज्ञातौ सा० देवली भा० देमा पु० सा० सागा भा० रूपणं पुत्र जलपाल भा० लषमी पुत्र रत्ना विंबं प्रतिष्ठितं । तपा गछे श्री हेमविमल (विमल) सूरिभिः ॥

[12]

संवत १९०० मिति आषाढ़ सित ९ गुरौ श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर भट्टारक गच्छेश भ० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं च श्रीमाल वंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य भार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थं ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उसवाल ज्ञाती लिगा गोत्रे समदडीया भडकेण० सुहडा भा० सुहागदे पु० कम्माकेन भा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक सूरिभिः ।

[14]

संवत १५२३ वर्षे वैशाख बदि ४ गुरौ उसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० सरवण भा० राणी सुत सा० सिंघा भा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना भार्या विरणि सुत सा० पुनपाल सा० सोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत १५५३ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० षेता भार्या मदी सुत व्य० भोजाकेन भा० राजू भ्रातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः सिरूआ वास्तव्य ।

[16]

संवत १६१५ वर्षे वैशाख बदि १० सोमे जवाछ वास्तव्य हुवड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

दो० स० हेमाकेन भा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सुरिभिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उंशवाल ज्ञातीय भण्डारी गोत्रे सा० गेल्हा पु० सो*पी भा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थं श्री अभिनंदन विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः।

[18]

संवत १५२५ वर्षे चै० व० ११ बुधे लांवडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० भीमसी भा० वानू पुत्र व्य० गणमा भा० वाबू पुत्र व्य० केल्हाकेन भा० मानू वृद्ध भा० घूघा पुत्र मेघादि कुटुंब युनेन श्री मुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः ॥ *वप्रगत चांइसगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंवदणीक * गच्छे प्रतिष्ठा कारिता। * (अक्षर अस्पष्ट है)।

[19]

संवत १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दली० वंश डुङ्गड़ गोत्रे ठ० पाल्हणसीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ विंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सूरयस्तत्पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[20]

संवत १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० बगा भा० वाल्हदे सु० रूदा भा० पल्ह सु० गिरा पिरा आंबा सह लषा युतेन श्री पद्मप्रभु विंबं कारितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने भ० श्री देवगुप्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[25]

संवत १५६३ वर्षे माह बदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघु शाषायां । व्य० केसव जा० जरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । ज्रा० व्य० आसाकेन जार्या अमरादे जातृ व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिजिः श्री स्तम्ज तीर्थे । कुतबपुर वास्तव्यः ॥ शुजं जवतु ।

[26]

संवत १५७३ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे उेसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे साह शिवदास जिनदासकेन पट्टे जार्या नाई नारिग सुत जातृ राजपाल सहितेन मातृ नारिग श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे नंदिवर्द्धन सूरि पट्टे नयचंद सूरिजिः ॥

[27]

संवत १५७७ वर्षे फागुण सु० १२ — — — — — — — — गच्छे जट्टारक शुनकीर्ति उपदेसात् अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सं । वीर राज जार्या सेदल पुत्र सं० चैरङ्ग राज जार्या जीरी पुत्र कालूभार्या निन्त्यं प्रणमंति ॥

[28]

॥ श्री शांतिनाथजी का मंदिर ॥

संवत १५२० वर्षे पौ० सु० १५ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय फ० शिवा जा० श्रीमलदे सुत फ० रामाकेन जा० आसु प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सुरिजिः ॥

[29]

॥ राय बुधसिंहजी दुधेड़िया का घरदेरासर ॥

संवत १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश वंशे सेठि गोत्रे श्रे० सोधरेण जा०

[25]

संवत १५६३ वर्षे माह वदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघु शाषायां। व्य० केसव भा० भरमी सुत व्य० वीका भा० संपू। भ्रा० व्य० आसाकेन भार्या अमरादे भ्रातृ व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे। कुतवपुर वास्तव्यः॥ शुभं भवतु।

[26]

संवत १५७३ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सुराणा गोत्रे साह शिवदास जिनदासकेन पुत्र भार्या बाई नाथि सुत लालू रतनपाल सहितेन मातृ नारिंग श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे नंदिवर्द्धन सूरि पट्टे [illegible] सूरिभिः॥

[illegible]

संवत १५७५ वर्षे फागुण सु० [illegible] — — — — — — — गच्छे [illegible] सुमतिकीर्ति उपदे- [illegible] ज्ञातीय [illegible]। [illegible] भार्या [illegible] पुत्र सं० [illegible] भार्या [illegible] [illegible] जिन [illegible]॥

[illegible]

॥ श्री शांतिनाथजी का मंदिर॥

संवत १५०० वर्षे पौष सु० १५ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय व्य० शिवा भा० प्रीमलदे सुत व्य० [illegible]साकेन भा० श्रास्तू प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः॥

[29]

॥ राय बुधसिंहजी दुधेड़िया का घरदेरासर॥

संवत १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश वंशे सेठि गोत्रे श्रे० सीधरेण भा०

बिरी सुलूणी पु० थावरसिंह। जटादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री खर तर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिभिः ।

॥ श्री सांवलियाजी का मंदिर – रामबाग ॥

[30]

संवत १५४६ माघ बदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासू भा० लाडो नाम्न्या पु० सिवराज भार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिभिः ॥

जिला – मुर्शिदाबाद । स्थान – बालूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परका लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मद्विक्रमादित्य राज्यात् संवत १८४५ मिते । श्री शालिवाहन शकाब्दाङ्के १७१० प्रवर्त्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे श्री तपगच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय जिनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर वास्तव्य लजलानी गोत्र । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्म्मभार धुरंधर साहजी श्री केशरी सिंहजी तस्यभार्या धर्म कर्मणि रता बीबी सरूपांजी पं । श्री भावविजय गणिरुपदेशात् । स्वगृह जिन बिंब स्थापनार्थं ॥ बालोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं० भाव विजय पं० गंभीर विजय गणिभिः । यावल्लवणसमुद्रोऽस्ति । यावन्नक्षत्रमण्डितो मेरुः (?) ... यावत्स्वरासुमेरोद्रि । यावत्त्रैलोक्य भास्वरं । तावत्तिष्ठतु प्रासादं निर्विघ्नन्तु सुनिश्चलं ॥ १ ॥ लिपिकृतं पं० भूपविजयेन ।

[32]

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुजांबर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर विजयोर्ज्जित ज्ञान लक्ष्मी ॥ यस्योपदेश वचनाच्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो बजूव १ ॥ तत्पट्टे क्रमतोरवीव विजय जैनेंद्र सूरीश्वर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो वाव्रोचरे डुंगके ॥ श्री संघेश सहायता शुजरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज जक्ति वशतः कारापितोयं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरीश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम जूमान्यः श्री ऋद्धि विजयोजवत् ॥ ३ ॥ तच्छिष्य जाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्यं. प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुजतः ॥ ४ ॥ जद्रं जवतु संघस्य जद्रं प्रासाद कारके तथा जद्रं तपा गछे जद्रं जवतु धर्मिणां ॥

[33]

॥ धातुयोंपरका लेख ॥

सबत १४९० वैशाख सुदि ५ जार लडिया गोत्रे । सा० जोंदा सुत । सा० पदाकेन पु० फासु रजनादि सहितेन स्वजार्या पदम श्री पुण्यार्थं श्री बिमलनाथ बिंबं श्रीहेमहंस सूरिजिः ।

[34]

संवत १५१३ वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत महीया श्रेयसे ज्रातृ हीराकेन ज्रातृज कुकूया सुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥

[35]

संवत १५३० बर्षे माघ वदि ५ गुरौ ऊपकेश ज्ञातीय श्रे० तेजा जा० तेजलदे पुत्र जूठा जा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयोर्थं संजवनाथ बिंबं का० श्री साधु पुर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री बिजयजद्र सूरिणा कडी वास्तव्यः ॥

कर्म सीहन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० लाखा जा० खलनादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा वेला खीला रामपाल जार्या आंहू पुत्र सोहट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[42]

ॐ संवत १५७६ वर्षे श्री खरतर गछ जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पाल्ह सा० सकू जा० नीष्पा रा—सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ जौमे श्रीमाल ज्ञातीय ढोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदास जार्या वा० ईंद्राणी ताज्यां पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिजिः। श्री जिनजानु सूरीणामुपदेशेन। अजाईः ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये।

[44]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि। आसोज सुदि ए तिथो बुधवारे रू। बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र लछमीपत्त चि। धनपत्त उत्रसिंघ श्री आदिजिन बिंबं कारापितं वा० सदालाज प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिर्थी। मिः मिगसर सुद १ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पत्थरोंपरका लेख ॥

[45]

संवत १८४४ मिते बैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचर पुरे । ज० श्री जिनचंद्र सूरि जी बिजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० क्षमाकल्याण गणिः । तच्च कुमारादि युतानामुपदेशतः श्री मक्सूदाबाद वास्तव्य समस्त श्री संघेन श्री सम्भव जिन प्रासादः कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण वृध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चैत्य वर्णनं । निधान कल्पैर्नवनिर्मनोरमै । विशुद्ध हेम्नः कलशैर्विराजितं ॥ सुचारु घंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चलत्पताका प्रकरैः प्रकाम । माकारयन्नूनमंनिन्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टबुद्धीन् । पापात्मनश्चावनतः कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीभि । र्भव्यात्मनिर्झ्नुरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्य प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोंके मूर्त्तिपर ।

[47]

ॐ संवत १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ उकेश वंशे डोंक गोत्रे म० सिवा भा० हर्षु पु० म० हीराकेण भा० रङ्गादे पुत्री सेनाढ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठ० साधू भार्या धर्मिणि पुत्र ठ० अचल- दासेन पुत्र उमसेन लक्ष्मीसेन सुर्गसेन बुद्धिसेन देवपाल श्रीरसेन पहिराजादि युतेन स्वश्रे-

यसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनहर्ष सूरिवरैः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्री उपकेश वंशे स० देल्हा भार्या दूल्हादे पुत्र वकूआ सुश्रावकेण भार्या मेघू पुत्र जयजइता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रेयसे श्री अञ्चल गच्छेश्वर श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर पुत्र स० कालण भा० कपूरी पुत्र स० क्षेमपाल भा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन भातृ पास दत्त देवदत्त भार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः श्री भट्टनगरे ॥

[51]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुक्रे उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा भा० कपूरी पु० सा० आसा भा० नाऊं पु० हर्षा भा० मर्नी भा० साइआ रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी नमि० श्री वासुपूज्य बिंबं उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[52]

ॐ संवत १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय वु० गांगा वु० मुजा पुत्र वु० महिराज भा० रमाइ श्राविकया श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणं भूयात् ।

[53]

सं १५३४ वर्षे उपकेश ज्ञातीय बांभ गोत्रे सङ्घवी भाटा भा० जयतलदे पु० माणिक

भगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाल्हा पुत्र म० पांचा भार्या बाई देऊ पुत्र म० नाथा भार्या श्रा० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज भीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कुतव पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपट्टे श्री सौभाग्य नन्दि सूरिभिः श्री पत्तन वास्तव्यः ॥

[55]

सं० १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जेठा भा० मल्हाई पुत्र सोनाकर भा० वाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि रत्न सूरिणा-मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्त्तिपर ॥

[56]

संवत १९०३ शाके १७६७ प्र। माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मक्सुदावाद वास्तव्य उसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां साह निहालचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ जिन बिंबं कारापितं। खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं। तप्पा सागर गच्छे।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर।

[57]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ भार्या महताव कुंवर चंद्रप्रभ पञ्च-तीर्थीका। ज। सवा लाखेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९४७ आषाढ़ शुक्ल १० आत्मनः कल्याणार्थं।

किरतचन्दजी सेठिया का घरदेरासर—चावलगोला।

[58]

सं० १५३३ वैशाख वदि ४ प्राग्वाट व्य० श्रपा भा० श्राल्हदी पुत्र व्य० नरसीहेन भा० पद्द पु—साल्हादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर—कीरतबाग।

[59]

पाषाण के मूर्त्तियोंपर।

॥ श्री सं० १८३० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गच्छे उ० श्री हर्षचंदजी नित्यचंद्र-जीत्कानामुपदेशेन। ऊंस बंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा ऊंस बं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फत्तेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री महापार्श्वनाथ बिंबं कारापितं। प्रतिष्ठितञ्च वि० सूरिभिः श्री ज्ञानुचंद्रणेति आचंद्रार्कचिरं नन्दतात्भद्रं भूयाच्छ्रियं।

[60]

॥ श्री सं० १८३० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गच्छे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र जीत्कानामुपदेशेन ऊंस बं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा ऊंस बंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फतेचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं। प्र० सूरि श्री ज्ञानुचंद्रणेति भद्रं भूयाछिवं सदा॥

[61]

पाषाणके चरणोंपर।

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रवासरे ऊंस बंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द जी तद्भार्या बाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यदिन्न गण-धर पादुका कारापितं ।

[62]

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा० श्री उदयचंद जी तद्धर्मपत्नी बाइ अजबांजीकेन श्री वासुपूज्य प्रथम सुभूम गणधर पादुका कारापितं ।

[63]

सं० १८६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुलाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां चरण स्थापनं श्री सङ्घग्रहेण श्री जिनहर्ष सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द भा० राजू पुत्र नाथू भार्या कपिथि भ्रातृ—नाल्हा केन भार्या खीमू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्यः ठ ॥ कालधरी ॥

[65]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरु रजीआण गोत्रे हुवड़ ज्ञातीय दोसी ठाकुर सी भा० नाइ दूसी सुत दोसी धाधाकेन हरपाल दासा पोगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं हुवड़ गच्छे श्री सिंघदत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीलकुञ्जर गणि ।

[66]

सं० १५३१ वर्षे वेशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० गोआ भा० भाऊ सु० सा० साजण भा० मदोअरि सु० सा० हरखा भा० अुराइ सु० सा० सोम सा० पासा

सहसाख्यैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्टः पूर्णिमा पक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितश्च विधिना श्री अहमदावाद नगरे।

श्री दादास्थान का मन्दिर।

पाषाण के चरणोंपर।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत १८२१ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय जी श्री १०८ श्री समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन जी शाखायां पंडितोत्तम प्रवर श्री ३ श्री जीमजा श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० हजारी नन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रभावक कातेल गोत्रे साहजी श्री सोजाचन्द जी तत् जातृ मोतीचन्द जी श्री मत् बृहत खरतर गच्छे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूड़ामणि भट्टारक प्रभु श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०३ श्री जिनकुशल सुरि सूरीश्वराणां पादुका कारापिता मक्शूदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिभिः ॥ शुभमस्तु।

[68]

सं० १८३६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रवारे बृहत श्री खरतर गच्छे जं०। यु०। भ०। श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सकल शास्त्रार्थ पाठन प्रधान बुद्धि निधान। श्री महुपाध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर गणिजिद्वराणां चरण स्थापनं ॥ साहजी डूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधसिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रतापसिंह जी आग्रहेण प्रतिष्ठितं श्री रस्तुः कल्याणमस्तुः।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर — कठगोला।

[69]

ॐ संवत १४८९ वर्षे पोष वदि १० गुरौ श्री नीमा ज्ञातीय मं० गड़ना जार्या सलष तयोः

सुतेन सह स्वपरेषा स्वश्रेयसे श्री जीवत्स्वामि श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः शुभंभवतु ।

[70]

सं० १५३० बर्षे माघ सुदि ४ शुक्रे सांबोसण वासि प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सोना भा० माऊ पु० व्य० नारद बंधु व्य० बिरूआकेन भा० वील्हणदे पु० देधर मेला साइयादि कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[71]

सं० १५०३ शाके १३६८ प्रवर्त्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञाती बृद्ध शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह बिसंघजि ततभार्या रुषमणी स्वश्रर्थे श्री आदिश्वर जिन बिंबं भरापितं श्री शांतिसागर सूरिभिः प्र० ॥

श्री जगतसेठजी का मन्दिर — महिमापूर ।

[72]

सं० १५२२ बर्षे माघ बदि १ गुरो प्रा० ज्ञा० म० जेसा भा० सुगी पुत्र सर्वणेन भा० रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरीणामुपदेशेन बिधिना श्री बिजयचंद्र सूरिभिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ ब० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० हीरा भा० रूपादे पुत्र व्य० देपा भा० गीमति पु० गांगाकेन भा० नार्थी पुत्र मेरा भातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । पींडरवाड़ा ग्रामे मुंठलिया बंशे श्रीः ।

[74]

सं १५३० वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश ज्ञातौ बलहि गोत्रे राका शाखायां सा० पासड जा० हापू पु० पेथाकेन जा० जीका पु० २ देपा डूंगरादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः दन्तराइ वास्तव्यः।

[75]

स्फटिक के बिंब पर।

सं १७१० व० ज्ये० सु० १ श्री स्तम्भ तीर्थ वा० उकेश ज्ञा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति भा० शिवा श्री कुन्थुनाथ बिंबं प्र० श्री विजयानन्द सूरिभिः। तप (नय) करण।

[76]

रौप्यके मूर्त्ति पर।

सं० १७७६ वर्षे बैशाख शुक्ल ५ तिथौ। ओसवाल वंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक चन्दजी स्वधर्म पत्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन बिंबं चिरं जयतात्॥ श्रेयोस्तुः॥ मङ्गलमस्तुः॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमबजार॥

[77]

धातुयोंके मूर्तिपर।

सं० १४०० वर्षे ज्येष्ठ बदि ५ उपकेश ज्ञातीय आयचणाग गोत्रे सा० आसा भा० वाछि पु० काजू नाढू भा० रूपी पु० खेमा तारल्हा सावड़ श्री नमीनाथ बिंबं का० पूर्वतलि० पु० आत्मा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः।

[78]

सं० १५२९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्रे श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा भा० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्त्ति और चरणपर।

सम्बत १५४९ वर्षे बैशाख सुदि ७ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल ---।

[80]

॥ सं० १७७९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पादुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० बीरदास पुत्र लषमीपतिकेन।

[81]

सम्बत् १७०० वर्षे मिती माह बदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंडित मुनिभद्र गणिवरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः --- कासमाबाजार --।

[82]

सं० १७८१ मिति आषाढ़ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पादुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः। श्री पार्श्वचंद्र सुरि गच्छे।

[84]

॥ सम्वत १७६७ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि ९ शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सूरिजी सद्गुरूणां चरणन्यासः कारितः श्री सङ्घेन । कासमाबाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोत्सवैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — भिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पाषाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्वत १९३३ शालिवाहन १७९८ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने बङ्गदेशे मक्षुदाबादांतर्गताजिमगञ्ज वासी बृहत ओस वंशे लुंपक गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तद्भार्या महताब कुमर्य तत् बृहत पुत्र राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु भ्राता राय धनपतसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतसिंह नरपतसिंह सपरिवारेन श्री सम्भवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महावीर जी परिकर सहित कारापितं भिक्टुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ भगवते नमः ॥ सम्वत अठारह से ग्यारह (१८११) कृष्ण द्वादसी भृगु बैशाख । ऊसवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मज्जैन धर्मकी साख ॥ सभाचन्द के अमरचन्द सुत तिन सुत सुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह भागीरथी तीर बिश्राम ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्वत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १८७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशी १७३९ । संवत्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलपष्ठि तिथौ बुधवासरे श्री शांतिनाथ जिनेंद्राणां प्रासादोयम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्घेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर गच्छेश भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

[88]

धातुओं के मूर्त्तिपर ।

सम्वत ११०४ माघ सु० १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो ------ ।

[89]

सं० १२५९ बैशाख सु० ३ बुधे सो० जेहड़ सुत सा० बहुदेव हीर भ्राताभ्यां मातृ राज श्री श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिभिः ।

[90]

सम्वत १३४९ बर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बर्षे प्राग्वाट जाति० मह० सादा सुत मह० राजा श्रेयसे ससुत मह० मालहिवि श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[91]

सं० १३७५ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद्र भार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्तिनाथ का० श्री हेमप्रभ सूरिभिः प्र० मड़ाहड़ाय ।

[92]

सं० १४३४ वर्षे ज्यैष्ठ वदि १ गुरौ बरडुड़िया गोत्रे सा० जोजदेव पुत्र मु० सरसति श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० देवाचार्य सं० – – सूरिभिः ।

[93]

सम्बत १४४७ आषाढ़ सुदि १ गुरौ श्री अञ्चल गच्छे ऊकेश बंशे गोखरु गोत्रे सा० नाल्हण भार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितञ्च श्री सूरिभिः ।

[94]

स० १४५७ वष ज्यष्ठ वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रत्ना भार्या लखलादे पुत्र सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री – – ।

[95]

सं० १४५७ वर्षे मासि चैत वदि १ उवएस ज्ञातीय व्य० देवराज भार्या जसमादे पुत्र वूषा भा० धलूणादे सहितेन पित्रो भातृ रामसी श्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्माणीय गच्छे श्री उदयानन्द सूरिभिः ।

[96]

स्वस्ति ॥ सम्वत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीमाल महरोल गोत्रे सा० ईदा सुत सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ बिंबं प्र० श्री बिजयप्रभ सुरिभिः ॥

[97]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ ओस बंशे काकरिया गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० साभिग भार्य्या पद्माईना शान्तिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं कृष्णर्षीय श्री नयचंद्र सुरिभिः ।

[98]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ ऊस वंशे थलकरीया गोत्रे सा० पाइदेव जा० करणू पुत्र सामल जार्या नयणादे पु० श्रीवछ सहिता आत्म पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० — — र्षि गछे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

[99]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे ऊपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा० चंजी पुत्र श्रीरत्नेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं का० प्र० श्री कृष्णर्षि गछे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

[100]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय ठकुर धरणी जार्या बाई गाङ्गी सुत ठकुर मांफण जार्या बाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गछे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कल्याण ॥

[101]

सम्वत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ ऊंसवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० खीमा पुत्र बरषा जा० वालहदे स० जातृ रल्हा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल गछे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

[102]

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने बपुड़ाणा गोत्रे तुंभिला गोत्रे सुत देवराजेन पु० पहराज युने बिंबं का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[103]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ सुदि १० मंत्रिदलीय श्री काथा गोत्रे स० लाघू जा० धर्मिणि

पु० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन महिराजादि युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनचंद्र सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्वत १५१९ वर्षे कार्त्तिक वदि ४ गुरू श्रीमाली ज्ञातीय मंत्रि देपा भार्या सहिजू सुत वरजांगकेन भातृ जेसा नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गच्छे श्री मुनिचंद्र सुरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ श्रेपा वास्तव्यः श्री शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५२४ वै० शु० १० उकेश वेदर वासि स० महिराज भार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन भगिनी पद्माई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सुरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता भा० बाबू पुत्र जोगाकेन भा० भावड़ि पु० रामदास भातृ अर्जुन भा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[107]

सं० १५३२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री उकेश वंशे आयु सन्ताने भ० जोजा पुत्र नखाता डूना भ० जोल्हा नारदाभ्यां श्री अभिनन्दन जिन बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[108]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सु० १० शुक्रे श्री उपकेश वंशे जोर गोत्रे सा० सरवण भा०

काल्ही पुत्र सा० सीहा सुश्रावकेण जा० सूहविदे पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाजड रव शिवदास पौत्र सिद्धपाल प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री अञ्चल गच्छेश श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन मातृ पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्घेन ॥

[109]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय ठ० धरणी जा० जसी सु० देठाला जा० कुंती कनसू जतृ आत्म श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्रति० श्री नाणवाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिजिः । कोरड़ा वास्तव्यः ।

[110]

सम्वत १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय माथलपुरा गोत्रे म० हंसराज जा० हासलदे पु० सा० षेढा जा० षीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं कारापितं श्री धम घोष गच्छे ज० कमलप्रज सूरि तत्पट्टे ज० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ ठ ॥

[111]

सम्वत १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि लाम्पण जार्या अजी सुत वासण रूढ़ा जेसिंग टूड़ा जा० रमादे स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्री आगम गच्छे श्रीमुनिरत्न सूरि पट्टे श्री आनन्दरत्न सूरिजिः प्रतिष्ठितं बूबूयाणा वास्तव्यः ॥

[112]

सं० १५७८ वर्ष फागुण सु० ए बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तद्भार्या श्री मरु देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ बिंबं का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मक्षयार्थ श्रेयोस्तु शुजं जवतु ॥

[113]

सं० १६५८ वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य ऊसवाल ज्ञातीय । सा० बोघा जार्या कव्हा सुत सा० राजा जार्या अवकू सुत सा० जयतमाल । जार्या

जीबादे सुत सा० ठाकुर नाम्ना भ्रातृ सा० पुण्यपाल सा० नाकर स्वभार्या गमतादे सुत लालजी बीरजी प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गच्छे महानृप प्रतिबोधक भ० श्री हीरविजय सूरि तत्पट्ट प्रभावक सुविहित भ० श्री बिजयसेन सूरिभिः आचार्य श्री ५ श्री बिजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणबिजय गणि प्रमुख परिवृतैः ॥

[114]

सम्बत १६९७ बर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री स्तम्भतीर्थ बास्तव्य बृद्ध शाखायां ऊपकेश ज्ञातीय सा० सद्धर्मधर भार्या बाई लखमादे पुत्री बा० कहु बाई नाम्न्या स्वभ्रातृ सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख युतया श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री बिजयसेन सूरीश्वर पट्टालङ्कार श्री बिजयदेव सूरीश्वर पट्टप्रभाकराचार्य श्री श्री बिजयसिंह सूरिभिः ॥

॥ श्री महावीरस्वामी का मन्दिर — माणिकतला ॥

[115]

सं० १३४० बर्षे – – – – – उयसवाल ज्ञातीय सा० लाखण श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं माता चापल श्रेयोर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कुमर सिंहेन आत्म पुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ भार्या लखमादेवी श्रेयोर्थं श्री महाबीर बिंबं सुत खेतसिंह पुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गच्छे श्री नन्न सूरि सन्ताने श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सर्बदेव सूरिभिः ।

[116]

सं० १४७४ बर्षे श्री श्रीमाल बंशे सा० लामा सा० हापा सुश्रावकेण पुत्र आढ़ा सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री बर्द्धमान बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

[117]

सं० १५११ वर्षे पोष बदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांइया भा० राणा सु० बस्ता भा० अलवेसरि नाम्न्या स्वभर्तृ श्रे० श्री कुन्थुनाथ बिं० प्र० श्री विमल सूरिभिः । बगुड़ा वास्तव्यः ॥

[118]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख बदि ५ रवौ श्री भावड़ार गच्छे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे व्य० भीमण भा० हलू पु० सादा भा० सूहगदे पु० नेमीचन्द --- भ्रातृ नेमा पुण्यार्थं समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य सन्ताने भ० श्री भावदेव सूरिभिः ॥ सीरोही वास्तव्यः शुभम्भवतु ॥

[119]

सम्वत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीवंशे सा० अदा भा० धर्मिणि पुत्र सा० बस्ता सा० तेजा सा० षीमा सा० तेजा भार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री अंचल गच्छेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन ॥ श्रीः ॥

[120]

सं० १६६७ ब० उ० ज्ञा० जड़िया गो० स० ढोला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० भूपतिना श्री विमलनाथ बिंबं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तपा गच्छेन्द्र भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[121]

सं० १५११ वर्षे आषाढ़ बदि ९ भागा उकेश ज्ञातीय सा० जैसिंग भा० चंभी पुत्रेण

सा० वीराकेन जा० नषी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खर-तर गछे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री कूंकणु वास्तव्य ।

[122]

सं० १५१६ कार्त्तिक बदि २ रवौ श्री उपस बंशे लोढ़ा गोत्रे सा० भाजू जा० षीमिणि पु० सा० गजसी जा० जूराइ पु० सा० धना जा० धर्मादे पु० सा० समधरेण जा० सूहवदे सहितेन वृद्ध भ्रातृ नरपति संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र पल्लीय गछे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[123]

सम्वत १५२२ वर्षे कार्त्तिक बदि ५ गुरौ श्री उपस बंशे। स० घड़ीया भार्या कपूरी पुत्र स० गोवल जा० लखमादे पुत्र खेताकेन भ्रातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगछा-धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन श्री चंद्रप्रभ स्वामी बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्घेन ॥ कछदेशे धमड़का ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६३४ वर्षे फा० श्रु० — शः पत्तने सं० माड़णना समस्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस नाथ बिं० का० प्र० श्री बृहत्तपा गछाधिराज श्री हीरबिजय सूरिभिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[125]

सं० १५२६ वर्षे बैशाख बदि १ रवौ श्री श्रीमाल श्रेष्ठि श्रवण जा० काउं सु० पितृ वीरा मातृ नाणादे श्रेयोर्थं सुत काहाकेन श्री नेमिनाथ बिंवं कारितं श्री – पू – ण – रत्नसूरि पट्टे श्री साधुसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितो बिधिना श्री सङ्घेना आमेण वास्तव्यः ।

[126]

सम्वत १५५३ वर्षे माघ बदि १२ बुधे प्रा० सा० गेला ना० चाहू सुत सा० गजा वना तपा हरपाल ना० जीवणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्थुनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं सूरिभिः सीणोत नगरि गोत्र लीवां ।

[127]

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० शिवा ना० सिरियादे श्रृङ्गारदे सुत दो० धनसिंहेन ना० नांविहा सा० कुंअरि ना० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं कारितं श्री सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[128]

सं० १५६२ वर्षे बै० सु० १० रवौ श्री तातहड़ गोत्रे स० जेतू भार्या लिपूही पुत्र० ३ सा० आह्न सा० बुडू सा० ठाहड़ तन्मध्यात् सा० ठाहड़ भार्याया मेघाही नाम्न्या स्वश्रेयसे स्वपुण्यार्थंच श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

माधोलालजी डुगड़ का घरदेरासर — बड़तला ।

[129]

ॐ सं० १५१५ वर्षे आषाढ़ बदि २ श्री ऊकेश वंशे बरड़ा गोत्रे सा० हरिपाल सुत ना० आसा साधू तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण भार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सपरिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पदे श्री जिनभद्र सूरिभिः ।

माधोलाल बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

[130]

सं० १६९४ बर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री द्वीप बंदिर वास्तव्य श्री ऊकेश

ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० श्री करण जार्या श्री सिरा आदि सुत सा० सोपसी जार्या श्री संपुराई पुत्र रत्न सा० शवराज नाम्ना श्री आदिनाथ बिंबं कारितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं तपा गछे ज० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[131]

सं १४७५ वर्षे जे० व० ११ रवौ श्रे० धणारी जार्या मच्चू सुत सा० ठ० वराकेन स्वजगिनी श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागछमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[132]

सं १५७७ व० वैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाली श्रे० वहजा जा० वहजलदे पु० सा० करणसी जा० जीवादे काना सहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि चन्द्र सूरिजिः वरजा वा० ॥

[133]

सं १६०४ वर्षे वैशाख वदि ७ सोमे श्री उंसवाल ज्ञातीय सा० देवदास जार्या वा० देव लदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाल जा० वा० रतनादे सपत्ने सा० जावड़ जा० वा० जासलदे तस पुत्री वा० जीवण श्री धरमनाथ श्रा० — जिदास परिवार वृतेः ।

४० नं० इंण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतला ।

श्री रत्नप्रभ सूरी प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध उपकेश (ओसियां) नगर की श्री महावीर स्वामीके मन्दिरके पार्श्वमें धर्मशालाकी नींव खोदनेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्त्तिके परकरके पश्चातका लेख ।

[134]

ॐ संवत १०११ चैत्र सुदि ६ श्री ककाचार्य्य शिष्य देवदत्त गुरुणा उपकेशीय चैत्य गृहे अस्वयुज् चैत्र षष्ठ्यां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिवालिका जासुल प्रतिमा इति ।

तीर्थ श्री चंपापूरी ।

यह प्राचीन जैनतीर्थ है, आई रेलवेके लुप लेनके भागलपुरके पास नाथनगर ष्टेसन से मिला हुवा है। यहां चंपापुरी—चंपानगर—चंपा—हालमें जिस्को चम्पनालाजी कहते हैं १२ मां तीर्थङ्कर श्री वासुपुज्य स्वामीके पञ्चकल्याणक जये हैं। यहां श्वेताम्बरी दिगम्बरी दोनो सम्प्रदायके जुदे २ मन्दिर वर्त्तमान हैं। राजगृहके श्रेणिक राजाका बेटा कोणिक जिस्को अजातशत्रु वा अशोकचंद्र जी कहते हैं राजगृहसे अपनी राजधानी उठाकर यहां चंपामें लायाथा। सुभद्रा सतीजी इसी नगरकी रहनेवाली थी। तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने यहां ३ चौमासे कियेथ और उन्के आनन्दादि मुख्य श्रावकोंमें कामदेव श्रावक यहांका रहनेवाला था और जैनागमके प्रसिद्ध दश वैकालिक सूत्रजी श्री शय्यंभव सूरी महाराजने इसी चंपापुरीमें रचा था। वसुपूज्य राजा जया रानीके पुत्र श्री वासुपूज्यस्वामीका चवन जन्म फाल्गुण वदि १४, दिक्षा—फाल्गुण सुदि १५, केवल ज्ञान—माघ सुदि २ और मोक्ष—आषाढ़ सुदि १४ यह पांच कल्याणक इसी नगरमें जयथे इस कारण यह पवित्र क्षेत्र है।

पाषाणोंके बिंब और चरणोंपर।

[135]

सं १६६० । श्री धर्मनाथ बिंबं का० सा० हीरानंदन * । प्र० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[136]

सं १०२० वर्षे वै० सु० ११ – – – श्री तपा गच्छे श्री वीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री संघेन ।

* यह मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध जगत्सेठके पूर्वज साह हीरानन्दजी है, ऐसा सम्भव है।

[137]

सम्वत १८५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे। तृतीयायां। चंपापुरी तीर्थाधिराज। श्री देवाधिदेव श्री वासुपूज्य जिन बिंबं समस्त श्री सङ्घेन कारितं। कोटिक गण चंद्र कुलालङ्कार। श्री मत् श्री सर्व सुरिभिः प्रतिष्ठितं।

[138]

संवत १८५६ वैशाख मास शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री अजितनाथ स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं। श्री जिनचंद्र सुरिभिः बृहत् खरतर गच्छे कारितं मकसूदावाद वास्तव्य – – –।

[139]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ ॥ बुधवासरे। श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं ज०। श्री जिनचंद्र सुरिभिः। बृहत् खरतर गच्छे कारितं च। बीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोपचंद तत्पुत्र जेठमलेन श्रेयोर्थं।

[140]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे। तृतीया तिथौ। श्री महावीर स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं। ज०। श्री जिनचंद्र सूरिभिः। बृहत् खरतर गच्छे कारितं समस्त श्री सङ्घेन श्रेयोर्थं।

[141]

संवत १८५६ वैशाख मासे शुक्ल प० ३ दिने। श्री शान्तिनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं। खरतर गच्छाधिराज ज०। श्री जिनलाभ सूरि पट्टालङ्कार। ज० श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं। – – – समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं॥

[142]

सं १८५६ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री वासुपूज्य स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं

श्री जिनचंद्र सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेछा गोत्रे – –
– – श्राविकया कारि ॥
(२। शान्तिनाथ ३। चंद्रप्रभु ४। विमलनाथ – – – अभयराजेन श्रेयोर्थं।)

[143]

॥ सं। १७५६ फाल्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथो श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र। सर्व सूरिभिः। कारितं। सर्व संघेन। चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संवत। १७५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथो श्री जिनकुशल सूरि पादुके। प्रतिष्ठितं भः श्री जिनचंद्र सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे कारितं। समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं।

[145]

संवत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गच्छे पुस्कर गणे लोहाचार्याम्नाय भट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदाम्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र रूपजदास पुत्र सन्नूलाल – – – अगरवाल प्रभा सा – – श्री पद्मप्रभ – – – प्रतिष्ठा कारिता।

[146]

सं १९०० आषाढ शित ९ गुरो श्री संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बृहत – – – सूरिभिः कारितं च डूगड़ सरूपचंद भ्रातृ करमचंद हुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयोर्थं।

[147]

संवत १९०७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने। श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं मकसुदाबाद वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च भ। श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार भ। श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे।

Footprints, Champāpuri Temple, dated S. 1856 (1799 A.D.)

[148]

सं १९२० मि । फा० कृष्ण २ बुध -- डूगड़ प्रताप ---

[149]

॥ संबत १९२५ मिति जेष्ठ शुक्ल द्वीतीया तिथौ रवीवारे डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तद्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लछमीपत्तसिंघ बाहादुर तत् लघुभ्राता राय धनपतसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं । जं । यु० ज० श्री जिनहंस सूरिजी बिजेराज ॥ उ० श्री आणन्दवल्लभ गणि तत् शिष्य उ० श्री सदालाभ गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द सूरि लुंपक गछे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवपदजी श्री चंपापुरीजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९२५ मिः फाल्गुन कृष्ण ५ तिथौ । डूगड़ श्री प्रतापसिंघजी तत्पुत्र राय लछमीपत्तसिंघ बहादुर तद्भ्रात्र श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारापितं जं० । यु० । प्र० । ज० । श्री जिनहंस सूरिजी बिजेराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभंभूयात् ।

[151]

धातुयोंके मूर्त्तिपर ।

सं १५०९ वर्षे ज्ये० सु० – रवौ रंगू जा० रमाई -- हेमा हापा लापा पु० साइस जा० लक्ष्मीरूपिणि पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गछे श्री शांति सूरिभिः ॥ श्रीः

[152]

संवत १५२३ वर्षे माघ ब० १ सोमे प्रा० सं० धारा जा० लखपू सुतेन सा० वेला बंधुना

स० बनाकेन भा० सीत्र् प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं का प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ माख्यबन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३७ श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं – – – ।

[154]

सं० १५५१ बर्षे मा० सु० १३ गुरू ऊकेश बंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा भा० रा पु० सा० जोला भा० लहिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कालु स काजा भा० कुनिगदे इत्यादि परिबृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्बिंशति पट्ट का प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जि हर्ष सूरिभिः ॥

[155]

संबत १५७१ बर्षे माघ बदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञा० बृद्धशाखायां व्य० सहिस सु० व्य० समधर भा० बड़धू सुत व्य० हेमा भार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा बर्द्धमान एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रभावक श्री आणंदसागर सूरिभिः ॥ श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री रस्तु श्री पतन नगरे ॥

[156]

संबत १५७५ बर्षे आषाड़ सुदि ५ सोमे श्री ऊसवाल ज्ञातीय आइचणी गोत्रे चोर बेड़ीया शाखायं सं० जइता भार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा भार्या भूरी सुत ऊधरण चंद्र पाल आत्म श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री ऊपकेश गछे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिभिः । – – – –

[157]

संवत १६०३ बर्षे मार्गशिर सुद ३ शुक्रे प्रा० ज्ञा – – बास्तव्य – – भा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champâpur Temple, dated S. 1551 (1494 A.D.)

सुरा जा० सूरमादे सा० श्री रङ्ग सदारङ्ग अमीपलादि कुटुम्ब युतेन साह स० चवीरेण श्री सुमतिनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री विशालसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५ — सूरिभिः ।

[158]

ह्रींकार यंत्रपर ।

सम्वत १६६० वर्षे शुक्लपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बला-त्कार गणे चंपापुरी नगर शुभस्थाने — — —

[159]

सम्वत १६७३ वर्षे मूलसंघे भ० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयकीर्त्ति प्रतिष्ठितं — — ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर

पाषाणके मूर्त्तिपर ।

[160]

सं० १७७७ माघ सुदि १३ बुधे ओस वंशे कठारा गोत्रीय लाला जमनादास तद्भार्या आसकुंवर तया श्री वासुपूज्य जिन बिंवं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गच्छीय श्री जिन — — — — ।

पञ्चतीर्थीयों पर ।

[161]

सं० १५१० — — — मंत्रिदलीय श्री कालागोत्र ठ० लाधू भा० धर्म्मिणि पु० स०

अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः।

[162]

सम्बत १५७१ बर्षे बैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ भिधूज गोत्रे । स० इम ज० — — — सुश्रावकेण भा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिल प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे ॥ श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

ह्रींकारके यंत्रपर।

[163]

सम्बत १८५६ बर्षे बैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिभिः जयनगर बास्तव्य श्री मालान्वये जरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रामनराय बृद्धिचन्द खुस्यालचन्द सरूपचन्द मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयार्थं ॥

स्थान — भागलपुर।

श्री बासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

पाषाणपर।

[164]

॥ शुभ सं० वीर गताब्दा २४०५ बिक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री बासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक भूम्युपरि ओश बंशे दूगड़ गोत्र वृ। शा। बा। श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ बधूः महताबकुमरी स्वजन्म सफल करणार्थं इच्छा कृतासिच कालबशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्मं प्राप्तस्य मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर

Footprints from Mithilâ, dated S. 1875 (1818 A.D.)
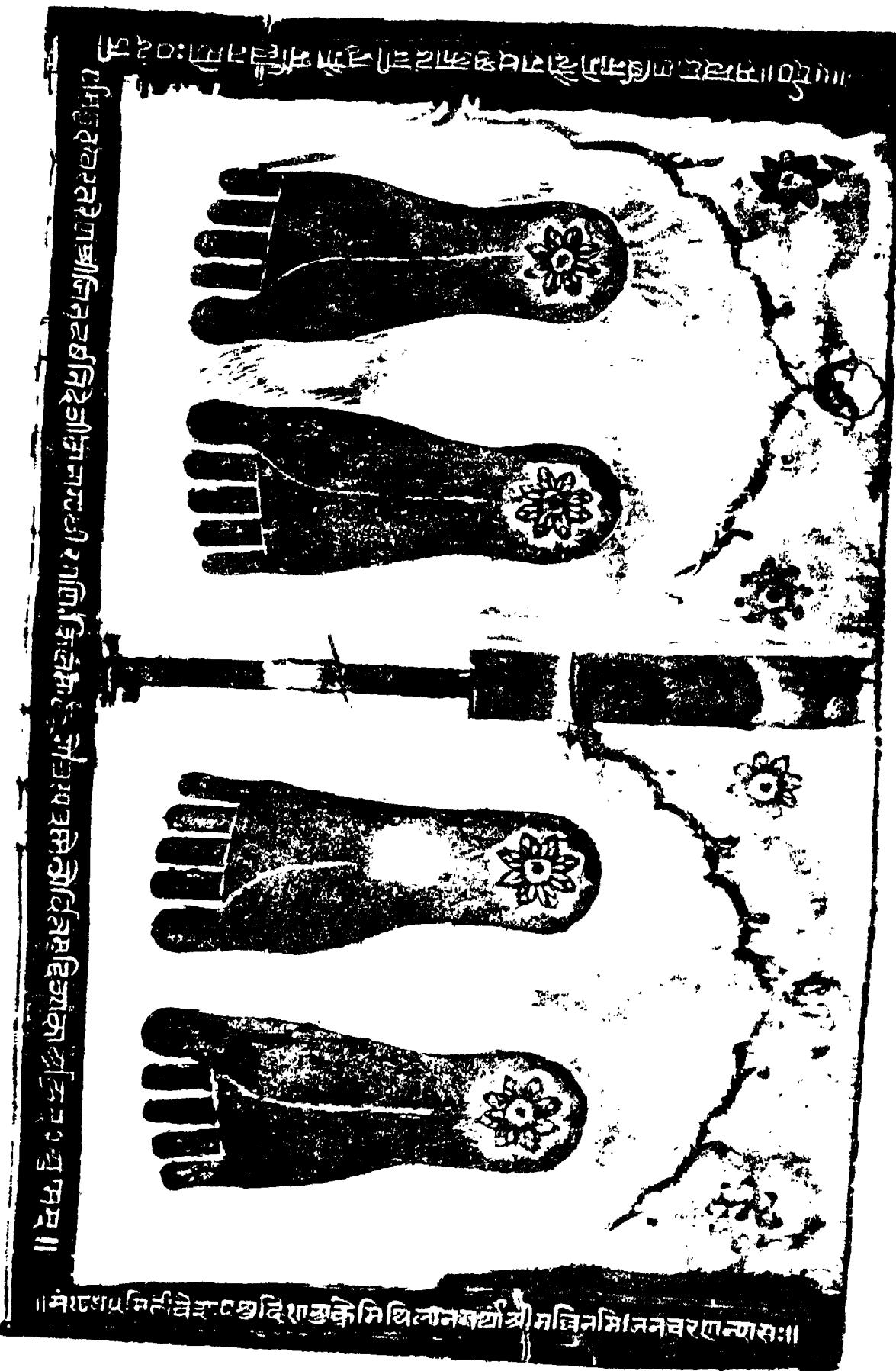
तेन द्रव्येण धर्मशाला जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः श्रीसंघ च संजावसी श्री संघ मालिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री जीकटरीया इमप्रेश राज्ये षृष्टाब्द १०७७ ।

पाषाणके चरणों पर ।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्म (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्वाण कल्याणक पादुका ॥ साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंपा नगरे ओशवाल वृ । शा । दूगड़ गोत्रे वा । श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्भार्या महताबकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री लछमी पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभि श्री संघस्य शुभंभवतु ॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्वद्वाणर्षि नागेन्दौ राध शुक्लादशी भृगौ मल्लि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा भाग्यधीर गणि किल माल्हू गोत्रस्य प्रष्णेन्दोर्वित्तमुद्दिश्य कार्यकृत् २ युग्मम् ॥ सं० १०७५ मिती बैशाख सुदि १० शुक्रे मिथिला नगर्यां * श्री मल्लि जिन चरणन्यासः ॥

[167]

सं० १९३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य (अजितनाथ, सम्भवनाथ) जिन

---

* यह चरण दरभङ्गा लैन में सीतामढी ष्टेसनके पास मिथिला नगरी से उठाकर लाया गया है । वहां इस समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थङ्कर श्री मल्लिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ मां श्री नमि नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे । श्री मल्लिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीकी कुमरी थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरके विजय राजा और विप्रा रानीके पुत्र श्री नमिनाथ स्वामीका जन्म श्रावण वदी ८, दीक्षा आषाढ़ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सु० ११ के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें " मिथिला " के स्थानमें " मथुरा " नगरी भी देखनेमें आया है । सत्या-सत्य ज्ञानीगम्य है । चरम तीर्थङ्कर महावीर भगवानका भी ६ चौमासा यहां भयाथा ।

बिंवं ओस वंशे डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं मलधार पूर्णिमा श्री महिजय गछे भट्टारक श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः ॥

[168]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मल्लिजिन बिंबमिदं मकसुदाबाद वास्तव्य ओश वंशीय लुंपक गणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य लघु पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितंचाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणालुंकागछीयेन ॥ श्री मिथिलापुरवरे ।

[169]

सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन बिंबमिदं मकसुदाबाद वास्तव्य ओश वंशीय लुंपकगणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य लघु पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागछीयेन सीतामढ़ी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ९६ वर्षे आषाढ़ शु० ११ दिनेः रा० भण्डारी गोत्रे भं० सिवा भा० रत्नादे पु० भ० हेमराज वेला भा० वालहदे पु० पता -- बिंबं कारापितं पुण्यार्थं श्री संडेर गछे भ० श्री साल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।

Footprints, Kākandi Temple, dated S. 1822 (1765 A. D.)
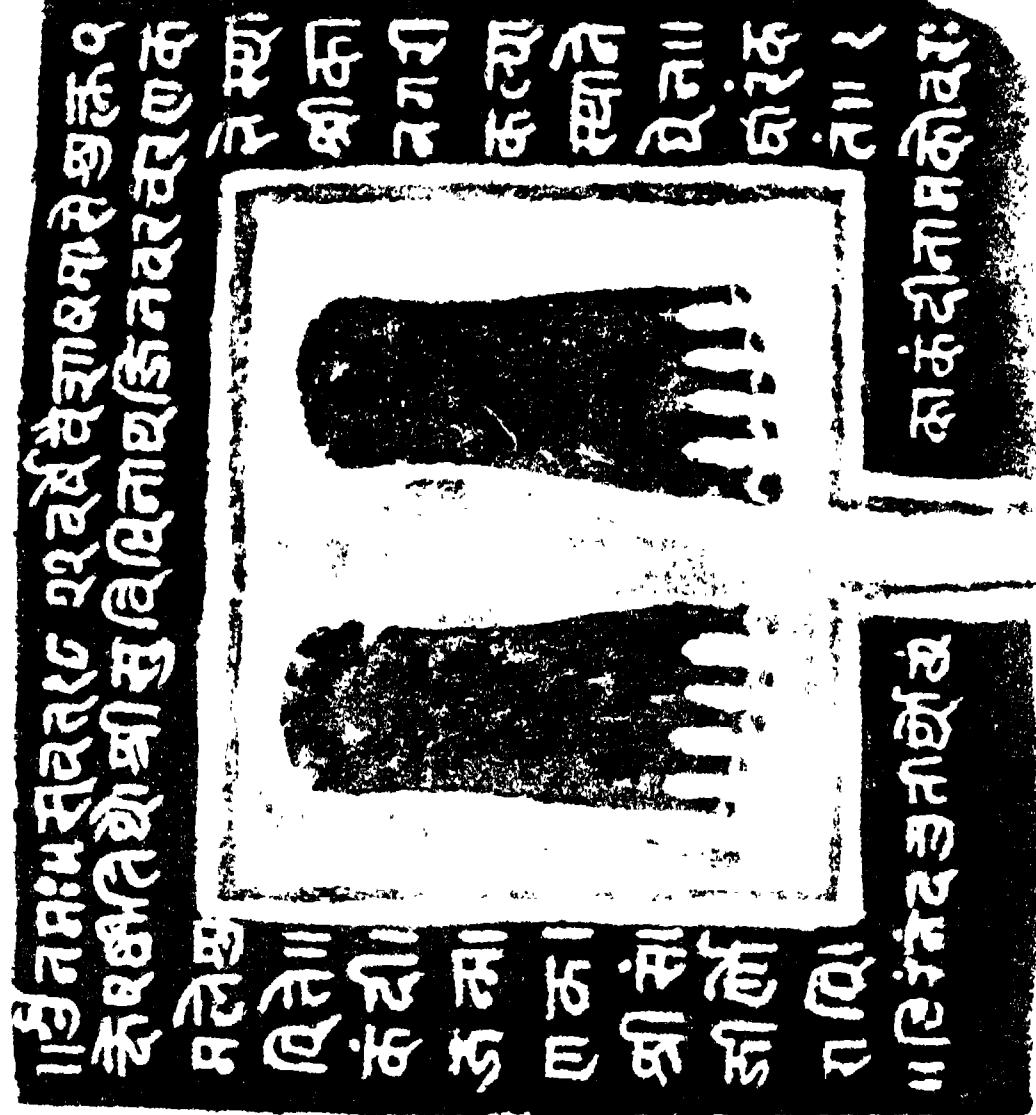
तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है। नवमा तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन–जन्म–दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां भये हैं। सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे। मृगशीर बदि ५ जन्म, मृगशीर बदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान भया। जैन मुनि धन्ना काकन्दी भी यहीं भये हैं।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लछवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है। चौविशमां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां भये हैं।

मूर्त्तियों पर ।

[171]

संवत १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए महतियाण बंशे मुंकतोड़ गोत्रे। मं० महणसी पुत्र स० देपाल भार्या मू० महिणि स्वकुटुंबेन भ्राता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र – – – श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुभशील गणिभिः – – –।

[172]

संबत १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतियाण बंशे मुंकतोड़ गोत्रे। सं० – – राजपुत्र मं० महादेपाल भ० माहिणि पुत्र मं० सिवाई।

चरण पर ।

[173]

ओं नमः। संवत १८२२ वर्षे बैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन जीर्णोद्धारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः।

पाषाण पर।

[174]

मकसूदाबाद अजीमगञ्ज वास्तव्य दूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तद्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तत्लघु सहोदर राय धनपतसिंह बहादुरेण न्याय द्रव्यण व्यय बोर प्रभु का जिनालय करापितः खरतर मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं। सं० १९३० मिती बैशाख वदी २ चन्द्रे — —।

श्री गुनायाजी।

नवादा (गया लाईन) ष्टेसनसे १॥ माईल पर यह स्थान है। इसका नाम शास्त्रमें "गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है। यहां २४ मां तीर्थंकर श्री महाबीर स्वामीका १४ चौमासा भयाथा। स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तालाव वा बिचमें मन्दिर है।

धातुके मूर्त्तिपर।

[175]

संवत् १५१० वर्षे फागुण बदि १२ उसवालान्वये मूधाला गोत्रे स० — मीला भा० बील्हू पुत्र सा० तोल्हा भा० पई नाम्न्या स्वपुण्यार्थं पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सूरिभिः।

पाषाणके चरणोंपर।

[176]

संवत १६०० वर्षे बैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल बंसे चोपरा गोत्रे ठा० बिमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालो तत्पु० भार्या ठकुरेटी यु० च० श्री जिनकुशल सुरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज सुरि विद्यमाने उपाध्याय अजय धर्म्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लग्ने खरतर गछे।

Footprints, Gunashila (Gunawa) Temple, dated S. 1688 (1631 A. D.)

[177]

संवत १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ सोमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री दूगड़ प्रतापसिंह जीत्कानां भार्या महताव कुंवर तत्कुक्षितोत्पन्न कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर नाम्ना स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्वाण भाजनया श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनभक्ति सूरि शाखायां उ० लक्ष्मी लाभ गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

[178]

सं० १९३० माघ शु० ५ सकल संघेन श्री वीर पादुका कारापित स्थापितं श्री गुणशील चैत्ये आत्महिताय ॥

पाषाण पर।

[179]

सं० १९२४ मिती माघ कृष्ण ५ सोमे गुणशील चैत्ये दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्भार्या महताव कुंवर तत्पुत्र चिर० राय बहादुर तत् प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साफल्य कारापिता जीर्णोद्धारं। उ० श्री आणंद बल्लभ गणि तत्शिष्य उ० श्री सागरचंद गणि उपदेशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूयात्।

पाषाण पर।

[180]

——। श्री जिनेंद्र जयती। स्वस्ती श्री मत् वीरजिनेंद्र सं० २४९९ वि० सं० १९५९ वर्षे वै० वद० ८ बुधवारे श्री तपा गछामनाय धारक सुश्रावक दसा श्रीमाल ज्ञातीये सा० रूपचन्द रंगीलदास देवचन्द पाटनवाला हाल मुकाम येवला मुंबई ये ननना स्मर्नार्थे तत्र बन्धु चतुर चन्द सुत वेल चन्द बाल चन्द भाग चन्द जण=३ थे ॥ श्री गुणशील चैत्ये आ

धर्मशाळा बंधावीछे स्था देरासरमा पवासणो गोलखाओ दरवाजो जमतीनी देरी = ४ सहीत सरवे आरसनु काम तथा तलावनी जीत तथा रीवेर बीगेरे जीर्नोद्धार करावोछे श्री शुजं जवतु सदा। सलाट जाइचंद जगजीवन मीस्त्री पालीताणा वाला --।

तीर्थ श्री पावापूरी।

शासन नायक श्री महावीर स्वामीका यह निर्वाण कल्याणक का स्थान जैनीयोंका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है। २४ मां तीर्थंकर के समवसरण की रचना और उनका मोक्ष यहां जये हैं। समवसरण के स्थानमें १ स्तंभ वर्त्तमान है कोई लेख नहीं है। वहांसे प्राचीन चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तलावके पाड़ पर विराजमान हुये हैं। अग्निसंस्कार की जगह तालाव और मंदिर है। प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ स्वताम्बरी और १ दिगम्बरी उस तालाव के पाड़में बनाहै और कई धर्मसालायें है।

समवसरणजी के प्राचीन चरणों पर।

[181]

ॐ सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरो श्री ------ कनकविजय गणिभिः ---।
(अक्षर घस जानेके कारण पढ़ा नहीं जाता)

जलमंदिर — पावापुरीजी

श्री गोतमस्वामीजीके चरणोंपर।

[182]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं गोतम गणधर पादुकां कारापितं उसवाल बोरडिया

गोत्रे नानकचंद जीवनदास प्र० बृ । ज० । श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरी तत्शिष्य मुनि पद्म जय उपदेशात् ।

श्री सुधर्मा स्वामीजीके चरणोंपर ।

[183]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं पादुका श्री सुधर्मा स्वामी कारापितं ओसवाल ज्ञातौ धाड़ेवा गोत्रे — न सुख प्रतिष्ठितं बृ० ज० श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पद्मजय उपदेशात् ।

बामे तर्फकी गुमटीमें १६ चरणोंपर ।

[184]

संवत १९३१ का मिती माघ शुक्ल १० तिथौ चंद्रवारे श्री बृहत् गुजराती लुंका गच्छे श्री पूज्याचार्य श्रीश्री १०८ श्रीश्री अक्षयराज सूरि तत्पट्टालङ्कार श्री अजयराज सूरि चरण प्रतिष्ठितं सुश्रावक बाबू श्री प्रताप सिंघजी राय धनपत सिंघजी दूगड़ गोत्रीयेण षोड़श महासती चरण कारापितं ॥ श्री शुभंभूयात् ॥ पावापुरीमें — स्थापितं ॥

दाहिने तर्फकी गुमटीमें चरणपर ।

[185]

॥ संवत १७५३ वर्षे आषाढ शुदि पञ्चमि दिने गणि दीप विजयणा पादुका० ॥

गांव मंदिर — पावापुरी ।
पंचतीर्थीपर ।

[186]

सं० १५१९ आषाढ़ बदि १० मंत्रिदलिय श्री उसियड़ गोत्रे स० मेघराज सु० जिणदास

ना० करगिणि पुत्रेण स० शुजकरण ना० पद्मिन्याः पु० लदमीसेन हालू जनन्याः श्रेयोर्थं श्री संजवनाथ बिंबं का० श्री खरतर श्री जिनजद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय गोत्रे मोल्हिप्पा सा० रणमल पुत्र सा० दीपचंद नार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गछे नहारिक श्री जिनहंस सूरि गुरुन्यो नमः ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं ॥

पाषाणके चरण पर।

[188]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ – – – रुपचंद पुत्र जसराज ज्येष्ठ नार्या – श्री वर्द्धमान जिनस्येयं पादुका कारा – – ।

[189]

॥ संवत १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरक चरण कमल पादुके – – – ।

मध्यके चरणपर।

[190]

॥ ऐं० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलाभ्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोलब्धिः ॥ संवत १६७० वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री विहार नगर वास्तव्य श्री ऋषज जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री जरत चक्रवर्त्ति राजान मुकुर मंडित संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपड़ा गोत्रीय संघनायक मं० संग्राम । राहडिया गोत्रीय संघ० परमानन्द प्रमुख श्री बृहत खरतर गछीय नरमणि मण्डित जालस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित श्री वीर जिन निर्वाण भूमि श्री पावापुरी समीपवर्त्ति वरजिनानानुसार श्री वीर जिन प्रासाद

Footprints (in the centre) Pawapuri Temple, dated S. 1698 (1641 A. D.)
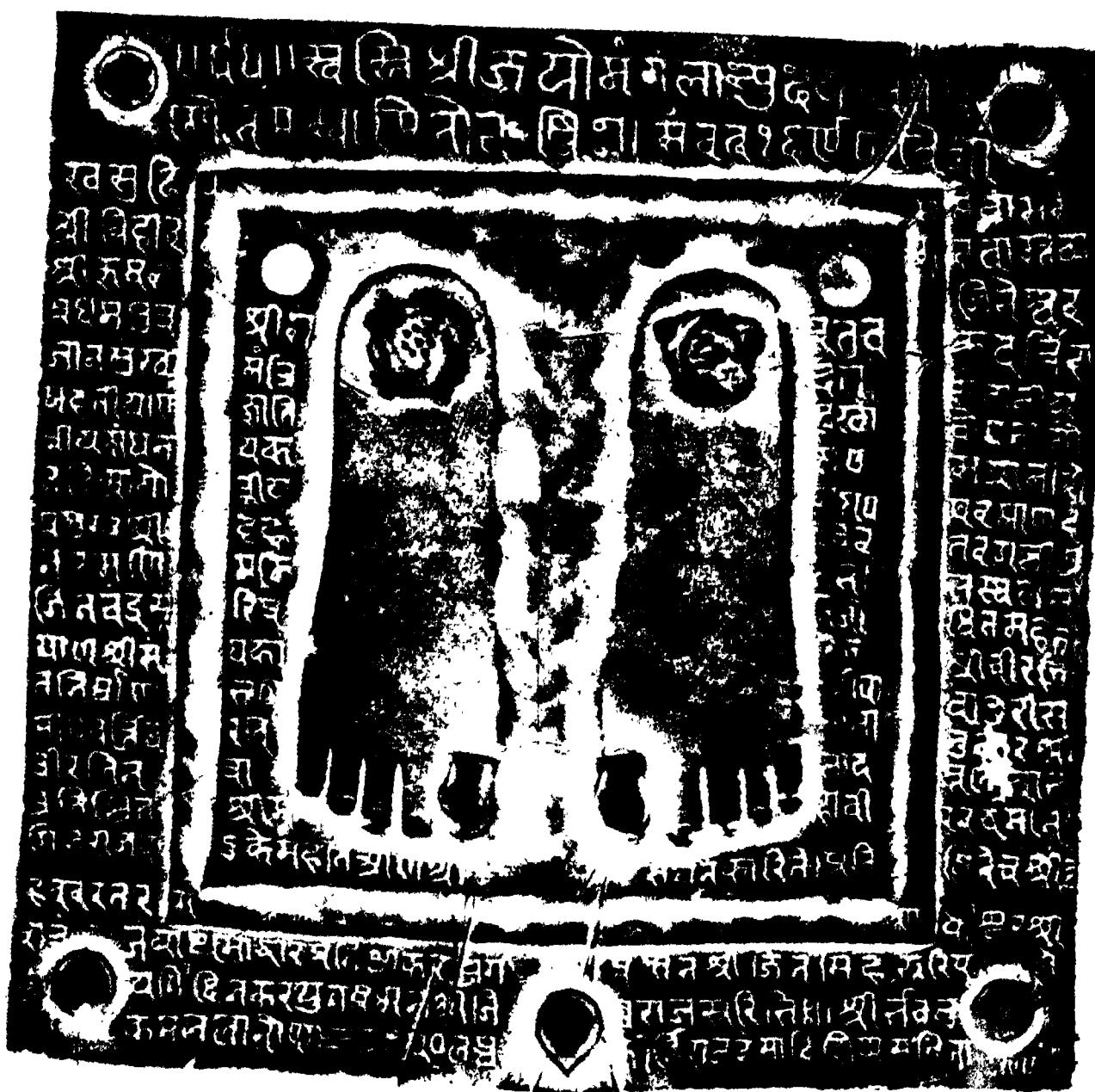
Pawapuri Temple Prashasti, dated S. 1698 (1641 A. D.)

जूनी धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर बर्द्धमान जिनराज पादुके महतियाण श्री संघेन कारिते। प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि पट्टोदयगिर दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु । श्री कमल लाभोपाध्यायाः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य सहिताः प्रणमंति ।

११ गणधरोंके चरणों पर ।

[191]

१ । संवति १६९८ प्रमिते । वैशाख सुदि ५ सोमवारे । श्री बिहार नगर वास्तव्य श्री भरत चक्रवर्त्ति महाराजात सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दलान्वीय नरमणि मंण्डित श्री जिन चंद्र सूरि प्रबोधित महतियाण ज्ञाति मण्डन चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सपरिवारेण ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निभूति ॥ २ श्री वायुभूति ॥ ३ श्री व्यक्तस्वामि ॥ ४ श्री सुधर्म्मा स्वामि ॥ ५ श्री मंण्डिकपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक स्वामि ॥ ८ श्री अचलभ्राता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रभास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति* ।

[192]

। ऐं० ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहि-जां हसकल नूर मण्डलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री वीर बर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीर जिन चैत्य निवेशः ॥ श्री ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री भरत महाराज सकल मंत्रि मण्डल श्रेष्ठ मंत्रि श्री दल संतानीय महतिआण ज्ञाति शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसी भार्या निहालो पुत्र सं० संग्राम लघुभ्रातृ गोबर्द्धन तेजपाल भोजराज । रोहदिय गोत्रीय स० पर-

* यह वेदीके अन्दर दबा भया है इस कारण सब पढ़ा नहीं गया ।

माणंद सपरिवार महधारा श्रीय बिशेष धर्म कर्मोद्यम बिधायक ठ० डुखीचंद काङ्ड़ा गोत्रीय म० मदन सामीदास मनोहर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास गिरिधर संतोदास प्रसादी। वार्तिदिया गो० गूजरमल्ल धूदड़मल्ल मोहनदास माणिकचंद बूदमल्ल जेठमल्ल। ठ० जगन नूरीचंद। दान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल मलूकचंद संतोषचंद सयला गोत्रीय ठ० सिंह कीर्त्तिपाल बालूराय केसवराय सूरतिसिंघ। काङ्ड़ा गो० दयाल दास नोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किन्नू। काणी गोत्रीय ठ० राजपाल रामचंद -- महावीर -- कीर्त्तिसिंघ ठा० छत्रीचंद। जांजीयाण गो० मं० नथमल नंदलाल। नान्हड़ा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कमलदास। रो० सुंदर सूरति भूरति सवलकृती प्रताप -- ठ० मदमल्ल जा० हरदासपुर ---।

पाषाणके मूर्त्तिपर।

[193]

॥ सिरि देवड्ढि गणि खमा समणा होत्ता तेसिं सिरि बीर निव्वाणाउ नवसय असीइ वरि सेहिं जिणागम रक्कगा तुच्छेइ कारणाउ थिंबमिणं पइट्ठाविय सिरि जिण महिंद सूरीहिं॥ सं० १९१० वर्षे मा। सु० २।

वेदी पर।

[194]

सं० १९३५ मिति जेष्ठ शुक्क ५ बुधवासरे इदं वेदिका कारापितं उसवाल ज्ञातौ रांका सेठिया गोत्रे सेठजी श्री लछमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमलजी तत्जात धनसुख दासजी।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर।

[195]

माह सुदि १३ दिने --- सूरीणा पाडुके --।

[196]

संवत १६७६ वर्षे — क — — —। प्रवर्त्त — — — :। श्री खरतर गछे श्री उपाध्याय रत्न तिलक सूरिनां त० शिष्येन श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद शाखायां कारा पितं उपदेन — — गुजु — — पातकस्य — — — श्री रत्नतिलक गणि प्रतिष्ठितं वा० लब्धि सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ १ ॥

[197]

मूल नायक — — — — — राज सत्रासन धारकं । ० । ० गुर्जरे मह् — न ति — — गोत्रे — — ठ० बेनीदास । तुलसीदास — माणिक — — दास — — कारापितं । श्री — — -. स्यां पादुका श्री — — स्य गुरु — — श्री जिन लब्धिसेन सूरि कृता ॥ यस्यां पादुके वृहत् श्री खर तर गणा - यं० जुग — — श्री युगप्रधान — — श्री जिनचंद्र सूरि शाखायां श्री उपाध्याय — श्री रत्नतिलक — — तत्पट्टालङ्कार श्री वाचनाचार्य — लब्धिसेन गणि आदेशेन श्री दलचंद — — याणा वालिड्वा गोत्रे । नैरवन — — ठा० गुजरमल्लेन — — श्री रत्नतिलक वा० — — — त ठा० -- करेन प्रतिष्ठा पुनमीया — — ।

[198]

॥ संवत १७०२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री जिन कुशल सूरीणा पादुके ॥ महतीयाण चोपड़ा गोत्रे । सङ्घवी तुलसी दास भार्या कल्याणी निहालो पुत्र सङ्घवी संग्राम सिंह — — — गणिभिः प्रतिष्ठिता श्री पावापुरी समस्त श्री सङ्घ सहिता श्री रस्तु ।

[199]

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ श्री जिनदत्त सूरी सद्गुरुणां श्री जिन कुशल सूरीणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं० भ० श्री जिन महेंद्र सूरिभिः । का । ला । मो । श्री सिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन श्रेयोर्थं मानंदपुरे ॥

दाहिने श्री स्थूलभद्र कोठरी के चरणों पर।

[200]

श्री ॥ नवनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां (१८९७) नयन रस सरस्वाश्चन्द्र शुक्रेषु शाके (१७६२) ॥ सित पटधर पाटो फाल्गुने शुक्ल पक्षे भुजगपति तिथौ (५) भार्गवे वासरेऽहि ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म्म वृद्धर्थ्य श्री स्थूलभद्राचार्य पादपद्म प्रतिष्ठा बृहत खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिणा कारिता च। श्री हीरधर्म्म गणि विनय बिहत्कुलकज प्रभाकर श्री कुशलचंद्र गण्युपदेशतः। काशीस्थ श्री संघैः ॥ बदलिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज गुलालाभिधेन ॥

[201]

(१) ॥ स० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पादुका। (२) ॥ श्री जिन ललित सूरि पादुका।

[202]

सं० १९०७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिथौ १५ गुरुवासरे० बृहत् खरतर गच्छे० यु० भ० श्री जिनरंग – – –।

[203]

सं० १९०७ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल पक्षे राका तिथौ १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गच्छे यु० भ० श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतिनंदन गणिनां पादपद्मे स्थाप्यते० वा० भुवनचंद्रेण। वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले भवतः आ० श्री जिनचन्द सूरीणां चरण कमले इमे भवतः।

श्री चंदनबाला कोठरी के चरणों पर।

[204]

॥ सं० १०९० प्र० श्री सुजाण बिजयाजी पादुका।

[205]

सं० १७०० मा वर्षे सिते १२ ॥ बृहत् खरतर गछे यु० भ० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां० शि० चरण रेणुना दीप बिजयायाः स्थापिते । श्री कीर्त्ति बिजयायां – – चरण सरसी रुहे प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौभाग्य बिजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[206]

सम्वत १८४८ शाके १७१३ वर्षे मिति बैशाख शुक्ल ३ तिथौ भृगु वासरे श्री मत् खरतर गछे भट्टारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीमहत्तरा मति बिजयाकस्य पादुका शिष्यनी रूपबिजिया पावापूरी मध्ये प्रतिष्ठापितः

[207]

॥ श्री संबत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र बारे श्री मद्बृहल्लोंका गुर्ज्जराधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००८ श्रीश्री अक्षयराज सूरिजी चरण कमलो स्थापितौ श्री अजयराज सूरिभिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभंभवतु =

[208]

॥ ॐ नमः ॥ संबत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते । हुगली वास्तव्य ओस वंशे गांधि गोत्रे बुलाकी दास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन श्री क्षत्रीयकुंड नगर जन्मस्थाने जन्मकल्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावन्नभस्तले सूर्य चंद्रमसौ स्थितौ बरौ तावन्नंदतु तीर्थोयं स – – – – – – – – ।

[209]

॥ ॐ नमः ॥ संबत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री क्षत्रीकुंडे संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

[210]

सं १७३७ माघ शु० ५ सकल संघेन श्री वीर पादुका कारापितं स्थापितं श्री पावापूर्यां। आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

बिहार ।

बिहार वा सूबेबिहार का प्राचीन नाम "तुंगिया नगरी" था। निकट में बिशाला नगरी भी थी। जैन सहर था, पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे "बिहार" नाम प्रसिद्ध हुआ।

धातुओं के मूर्त्ति पर।

मथियान महल्ला।

[211]

सं० १४३७ श्री — — तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ सा देल्हा पुण्यार्थं का० प्र० श्री जिनराज सूरि।

[212]

प० ॥ सं० १४६७ वर्षे माघ सुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० लषमणेन पुत्र रतना नरसिंह नयणा जा० — दादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिन वर्द्धन सूरिभिः ॥

[213]

सं० १५०६ माघ सुदि ५ — — लोढ़ा गोत्र — — — पुत्र झाझाकेन जा० झाऊ श्री पु० — — माला — जा० हेम — — नाथू जा० कुम्मिदे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गछे श्री मुनि तिलक सूरि।

[214]

ए। सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ दिने श्री ऊकेश वंशे छोढ़ा गोत्रे सा० जोला संताने सा० बीरा जार्या जावलदे पुत्र सा० जाडाकेन पुत्र नीसल बीसल डूंदा माका सहितेन श्री बासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतर गञ्चाधीश श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार श्री जिन जद्र सूरि युगप्रधान गुरुराजो।

[215]

सं० १५१ए वर्षे आषाढ़ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नगराज सुत ठ० खघूजार्या धामिणि पु० सं० श्री अचलदासेन पुत्र ठ० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन बीरसेन देपाल पहिराजादि परिवार वृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गञ्चे श्री जिनजद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः॥

[216]

सं० १५१ए वर्षे आषाढ़ बदि १ श्री मंत्रिदलीय शाखायां बायड़ा गोत्रे स० षीमराज जा० सुरदेवी पुत्र ठ० दासू जा० कपूरदे पु० ठ० सदय वछ (?) प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गञ्चे श्री जिनसुंदर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिजिः॥ श्री॥

[217]

सं० १५१ए वर्षे आषाढ़ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० श्री नगराज सुत ठ० श्री खघूजार्या धर्मिणि पुत्र स० सिंगारसी जा० कुंवरदे पु० स० राजमल्ल सुश्रावकेण पुत्रादि परिवार सहितेन श्री आदिनाथ मूल बिंबश्चतुर्बिंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः खरतर श्री जिन जद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० बरागामेः॥ ७॥

[218]

सं० १५२० वर्षे माघ सुदि दशम्यां बुधे श्रीमाल ज्ञातीय स० गाजु जार्या धरणी आत्म

श्रेयोर्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पदे श्री जिन चंद्र सूरिराजेः ॥ श्री मंडपे दुर्गे महता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[219]

सं० १४९९ वर्षे फागुण बदि २ गुरौ उपके० सुर गोत्रे सा० सिवराज भा० माकु पु० षाता सहसा भ्रातृ बछराज पुण्यार्थं श्री शितलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री उपकेश गच्छे कक्कुदाचार्य संताने श्री कक सूरिभिः ॥ ७ ॥

[220]

सं० १५४८ बर्षे वैशाख मासे उकेश बंशे दोसी गोत्रे सा० कलू पुत्र सा० लषा भार्या रुपाई पुत्र० लषमी धरेण भार्या लीलादे सहितेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्र सूरिभिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[221]

सं० १६३८ समये फाल्गुण सुदी ५ चौमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री धर्मकीर्त्ति देव तत्पट्टे भ० श्री शीलभूषण तत्पट्टे भ० श्री ज्ञान भूषण अथ भ० सुमित्रनी तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति ततशिष्य । मंडलाचार्य श्री मेरुकीर्त्ति गुरुपदे – भू ॥ मगध देसे । खुदिमपुर बास्तव्य जेसवालान्वये कष्टहार गोत्रे सा० वीरम तद्भार्या वंयंत्रयोः पुत्र सहसी तद्भार्या अजेसिरि त्रयो पुत्रौ प्रथम किनू तद्भार्या परिमल तत्पुत्र जिनदास तद्भार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास भार्या रुकमिनि मेतेषां मध्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु ॥

लालबाग का मंदिर।

[222]

सं० १५३७ ब० बै० शु० ३ सोमे प्रा० वृ० मं माईया भा० बरजू पु० सीधर भा० मांजू पुत्र गोरा भा० रुकमिणि पु० वर्द्धमान मातृ पितृ श्रे० श्री कुंथुनाथ बि० कारापितं प्र० तपा० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[223]

सं० १६४३ फा० सि० ११ श्री हीर विजय शिष्य श्री विजयसेन सूरिभिः प्र० आदि-नाथ — —।

[224]

सं० १८७३ चैत्र सु० १५ — — बिंबं श्री जिनहर्ष सूरिणा — — महताबचंद भार्या श्राविका — — भ्या गुलाबचंद पुत्र युतया — —।

[225]

सं० १८९६ ज्येष्ठ वदि ७ ओसवाल ज्ञाती जम्मड गोत्रीय बाबु प्रेमचंद तत्पुत्र विहारी लालेन श्री सिद्धचक्र पट्टं कारापितं प्रतिष्ठितं बिष्णुदय गणिना।

पाषाण पर।

[226]

संवत १५२४ जेष्ठ वदि ४ श्री उपकेश ज्ञातौ साह श्री शक्तिसिंघ भा० सहजलदे — — — साह सोमा भार्या आपु नाम्न्या आतम श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री कक्क सूरिभिः॥ श्री अजितनाथ प्रणमति बाई आपू नाम्न्या —

[227]

संवत १६०४ वर्षे -- माघ सुदि ए दिने जोम वासरे श्रवण नक्षत्रे ---- गोत्रे ठाकुर --- ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुखीचंद श्री जिन कुशल सूरीणं पाडुके कारितं।

[228]

सं० १६०४ शाके १५५ए ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र वदि १३ शुक्रे शुभे मुहुर्त्ते दक्षिण देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे ज० श्री मूल श्रृंगार हा ---- बघेरवाल ज्ञातौ स० श्री तोला जा० सं --- पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ ---- देव जार्या सोहि --- श्रेयोर्थं --- श्री महावीर पाडुका स्थापितं।

[229]

सं० १०३० माघ शुदि ५ – श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि –।

[230]

सं० १०३० माघ शु० ५ सकल संघेन शांतिनाथ पाडु० कारापिता –

[231]

प्रणमहिये गूणवीस सय वरसे बइसाह – सुद्ध – - - बद्द पियामह सिरि जिन कुशल सुरि पाय ठवणा कारिया सिरिमाल बंसे वदलीया गुत्ते साह कमला बइणा बिसाला सुपइ ठिय सयल सूरीहिं ॥ श्री ॥:

[232]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहाय:

सं० १०४६ मीती बेसाख सुदी १३ ---।

[233]

सं० । १९३९ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सुरी पादन्यास । जं० । यु । प्र भ । श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दालचंद गणिभिः प्रतिष्ठितं ॥ सेठ गोत्रीय ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर वरो

[234]

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संवत् १९५० सि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंघे सरस्वति गछे बला-त्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्नाय सकल कीर्त्ति भट्टारक तत्पट्टे । भट्टारक कनक कीर्त्ति उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तद्भार्या केशरबाई खुरदेवाले प्रति०

[235]

संवत् १९५५ पोस सुद १५ गुरु ॥ श्री लुंपक गछे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठि-तम् ॥ बाबू लछमीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पादुकेभ्योः ॥ श्री स्थूलभद्र सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरिः ॥

राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है । २० मां तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ट बदि-८ जन्म फाल्गुन सुदि-१२ दीक्षा फाल्गुन बदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है । २२ मां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समय में जरासंधकी भी यही राजधानी थी । २४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । गौतम बुद्ध की भी यही लीला भूमि थी । प्रसेन जित उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी भी १४ चौमासे यहां किये । जंबुस्वामी, धन्ना, शालिभद्रजी आदि बड़े २ लोग यहांके रहने वाले थे । यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्य्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड बहुतसे है और स्थान देखने योग्य है। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) बिपुलगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदय गिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैभारगिरि। पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। बहुत से चरण वा मूर्त्ति इधरसे उधर बिराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिला दिया गया है।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति। *

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री बिपुलाचलामरगिरि स्थैयः स्थिति स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाभिराम भुजगाधीशस्फटासंस्थितिः। पादासीन दिवस्पतिः शुभ फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु बांछित फ

(२) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविभोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राज्यं जय राम लक्ष्मण जरासंधादि भूमीभुजां। जज्ञे चक्रि बलाच्युत प्रतिहरि श्री शालिनां संभवः प्रापुः श्रेणिक भूधवादि

---

*"जैन तीर्थ गाईड" के तवारिख सुबे बिहार में उसके ग्रंथकर्त्ता लिखते है कि मथीयान महल्लाके "मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुवा है — — — सवत तिथि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति (१६) हर्फ उमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है वज्र शाखा वगेरह नाम बेशक मौजूद है" यह पढ़ कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई। पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया। किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया। पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है। यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था। इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिस्से बहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा। यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्त्ताका भी नाम विद्यमान है पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है।

(३) नविनो बीराश्च जैनीं रमां ॥ २ यत्राजय कुमार श्री शालिधन्यादि साधनाः। सर्वार्थ सिद्धि संजोग जुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुलाजिधोवनि धरो वैजार नामापिच श्री जैनेंद्र विहार जूषण धरो पूर्वाप

(४) राशास्थितौ। श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लज्यं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राज-गृहाजिधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण महत्तम तीर्थे। श्री राजगृहम

(५) हातीर्थे। गजेंद्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूला पीठे सकल महीपाल चक्रचूला माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे। सुरत्राण श्री साहि पेरोजे महीमनुशासति। तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मलिक बयोनाम मण्डलेश्वर समये। तदीय सेवक सह णास दुरदीन साहाय्येन। यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं वक्षः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुतारा सोयं बिजाति जुवि मंत्रि दलीय बंशः ॥ ५ बंशेमुत्र पवित्र धीः सहज पालाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सद्गुणमणी श्रृंगारितांगः पुरा। तत्सूनुस्तु जनस्तुत स्तिहुण पालेति प्रतीतो जव

(८) ज्जातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहाजिधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर मंकनाख्यः सद्धर्म कर्म बिधि शिष्ट जनेषु मुख्यः। निःसीम शील कमलादि गुणाखिधाम जज्ञे गृहेस्यः गृहिणी थिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समजवन् जुवमे बिचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पबित्राः। तत्रादिमास्त्रय इमे सहदेव कामदेवाजिधान महराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जयति संप्रति बछराजः श्री मा

(१०) न् सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः। यास्यां जनाधिकतया घनपंक पूर्ते देशेपि धर्म-रथ धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ८ प्रथम मनव माया बछराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति सप्रीति रीतिः। प्रजवति पहराजः सद्गु

(११) षा श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्चोढराख्यः ॥ १० द्वितीया च प्रिया जाति बीबी रिति विधि प्रिया। धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च दयिताद्या देवराजस्य राजी गुण म

(१२) णि मयतारा पार श्रृंगार सारा। स्मजवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनु च गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कलत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः षीमराजोंग जातः। प्रथम उदित पद्मः पद्म

(१३) सिंहो द्वितीयस्तदपर घरासिंहः पुत्रिका चाम्बरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीबर्द्धमान जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिजंदः। सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

(१४) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समजवद्दशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव मही धर भेद वज्रः यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश मतीव विकाशवत्यां चांद्रेकु

(१५) ले विमल सर्वकला विलासः। उद्योतनो गुरुरजाद्विबुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु मुनि गणि बर्द्धमानः ॥ १६ तदनु भुवनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाभूरिः सूरिर्बभूव जिनेश्वरः। खरतर इ

(१६) तिख्यातिं यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकर्ता श्रीषंद --- द्रुगणो वनो ॥ १७ ततः श्रीजिन चंद्राख्यो बभूव मुनि पुंगवः। संवेग रंगशालां यश्चकारच वजारच ॥ १८ स्तुत्वा मंत्र पदाक्षरै रवनितः श्रीपा

डुसरा पत्थर।

(१७) र्श्व चिंतामणिं ------ ताकारिणं। स्थामेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रे नवान्यायके। -- ता ऽ जय देव सुरिगुरव स्तेतः परं जज्ञिरे ॥ १९ ---

(१८) --- (जिनवल्लभ) -- शांगनोवल्लभो ---- प्रियः यदीय गुण गौरवं श्रुतिपुटेन सौधोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिन-दत्तसूरिरभवद्योगीद्ध चूडामणि मिथ्याध्वां

(१९) त निरुद्ध दर्शन – – – – श्रावक यान्य देशि सुगुरुः क्षेत्रेत्र सर्वोत्तमः सेव्यः पुण्यवतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ २१ ततः परं श्रीजिनचंद्र सूरिर्बभुव निःसंग गुणास्त भूरिः ।

(२०) चिंतामणि र्भालतले यदीये घ्युवास वासादिव भाग्य लक्ष्म्याः ॥ २२ पदे लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टांत स्थिति बंध बंधुरमपि प्रक्षीण दृष्टांतकं । वादेर्वादिगत प्रमाणमपि ये वाक्यं ।

(२१) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या बभूवु सूतः ॥ २३ अथ जिनेश्वर सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोभर भास्वराः । भुवि विबोधित सत्कमला करा समुदिता बियति स्थिति सुन्दराः ॥ २४ जिन प्र

(२२) बोधा हृत मोह योधा जने विरेजुर्जनित प्रबोधाः । ततः पदे पुण्य पदे दसीये मर्त्य श्च चर्या यति धर्म्म धुर्याः ॥ २५ निरुंधानो गोभिः प्रकृति जरुधीनां बिलसितं भ्रमभ्रस्य स्रोतो रस दश कला केलि

(२३) विकलः । उदितस्तत्पट्टे प्रतिहृत तमः कुग्रह मति र्नवीनो सौ चंद्रो जगति जिन चंद्रो यतिपतिः ॥ २६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धारे सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

(२४) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम जिनपते र्येन सोच्चै र्यशोभि श्चित्रंचक्रे जगत्यां जिन कुशल गुरु स्तत्पदे भाव शोभि ॥ २७ वाल्पेपियत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केली विलो क्य सरसा हृदि शारदापि । सौभाग्य

(२५) तः सरज संविललास सोयं जातस्ततो मुनि पतिजिन पद्मसूरिः ॥ दृष्टा पदृष्ट सुविशिष्ट निभान्य शास्त्र व्याख्यान सम्यगवधान निधान सिद्धेः । जज्ञे ततो ऽस्त कलिकाल जना समान ज्ञान क्रिया

(२६) ब्धि जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ २९ तस्यासने विजयते सम सूरि वर्यः सम्यग दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः । श्रीजैन शासन विकासन भूरि भामा कामापनोदन मना जिन चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत – – – । श्रीमद्विहार पुर ग्रस्थिति वछराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वछराजः सवान्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरूनान्वय

(२८) मंरूनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्त्तारोत्र प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो भुवन हिताभिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि भूमिते ब्रजति विक्रम भूभृदनेहसि । बहुल षष्ठि दिने शुचि मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः प्रासाद एष कलसध्वज मण्डितो

(३०) द्रः । निर्मापकोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता भुवि सुप्रतिष्ठा॥ ३६ श्रीमद्भिर्भुवन हिताभिषेक वर्यै प्रशस्ति रेषाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति रिव मूर्त्ता ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

(३१) ल्हांगजेन पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाभिधानेन ॥ ३८ इति विक्रम संवत १४१२ आषाढ़ बदि ६ दिने। श्रीखरतर गछ शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सूरि पट्टालङ्कार श्रीजिनेंद्र सूरिणामुपदे

(३२) शेन । श्रीमंत्रि वंश मंरून ठं० मंरून नंदनाभ्यां । श्रीभुवन हितोपाध्ययानां पं० हरिप्रभ गणि । मोद मूर्त्ति गणि । हर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्व देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

(३३) णादि महा प्रभावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाभ्यां । ठं० वछराज ठं० देवराज सुश्रावकाभ्यां कारि – – – – – – स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥ शुभं भवतु श्रीसंघस्य ॥ छ ॥ ❀ ॥

गांव मन्दिर—धातुओंके मूर्त्ति पर।

(237)

सम्वत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४९७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ रवौ ऊ० ज्ञा० सा० सपुरा भा० सीतादे पु० कर्मसिंहेन श्री नमिनाथ विंव पितृ मातृ श्रेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव गुप्त सूरिभिः।

पाषाण पर।

(239)

सम्वत् १५०४ वर्ष फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटड़गोत्रे सा० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास। श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपट्टे श्रीजिन चन्द सूरिपट्टे श्री जिन सागर सूरीणां निदेसेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः।

(240)

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे श्री मुनि सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे मंधी गोत्रे वुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरु चेतासाह पुत्र्या उमरवाई केन शांतनाथ विंवं कारापिता।

(242)

श्री शुभ सम्बत १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्री वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री वृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान भट्टारक श्री जिनरंग सूरीश्वर शाखायां य० यु० भट्टारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरी राज्ये श्री वाचनाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल वंशोद्भव बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी बीबी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण कारिणो भवतु शुभमस्तु ।

(243)

शु० स० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० ख० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संचीतीकस्य पत्नी चीरोंजी बीबी प्र० का० शुभमस्तु ।

(244)

सं० १९११ व। शा० १७७६ प्र। शुचि शु। १० ति। श्रीचन्द्र प्रभ विंबं प्र०। भ। श्री जिन महेंद्र सूरिभिः का। सा श्री हकु-----खरतर गच्छे।

विपुलगिरि ।

(245)

संवत १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्र वासरे। श्री बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्भार्या संघवण निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुल गिरौ----अमी जीर्णा उद्धरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे--लिषतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही।

(246)

सं० १८१८ मिती कार्तिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्याति मुक्तकमुने मूर्त्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकैः ।

(247)

सम्वत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रभ जिन चरण न्यासः प्रतिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल दुतिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

(248)

संवत १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तु शुभं भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

(249)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री नेमिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्री राजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

(250)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री शांतिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धारं क० ।

(251)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

(252)

ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमल स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री राजगृहे रतनगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं। स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि।

(253)

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(254)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(255)

ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे षष्टी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं॥ स्वपरयो कल्याण हेतवे ॥ श्रीः ॥

स्वर्ण गिरि ।

(256)

सं० १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० षीमराज पुत्र सं० सिवराजेन। भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुटुम्बेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरि पट्टे श्रीजिन सागर सूरीणां निदेसेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्रीखरतर गच्छे।

वैभार गिरि ।

(257)

सं० १५२४ आषाढ़ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिन चन्द्र सूरि विजय राज्ये तदादेशे श्रीवैभार गिरौ मुनि मेरुणा भि० ॥ —— श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीषू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण।

(258)

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्रीजिन चंद सूरिणा मादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः धन्नाशालि भद्र मूर्त्ति —— का० प्र० षीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

ॐनमः ॥ सम्वत १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधि गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

(260)

॥ श्री सम्वत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताव रायजी तद्धर्म्म पत्नी जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं। स्था० राजगृह नगरोपरि वैभार गिरौ ॥

(261)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति जेष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिषरे श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं भ० श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(262)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार गिरि शिषरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(263)

सुभ स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्रीमत् शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत्खरतर ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर साखायां वृ० भ० यं० युं० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन प्र० का० शुभमस्तु ॥

(264)

ॐनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य चरण क० प्र० श्री वृ० प० ग० भ० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरी वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू षुस्याल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन प्र० का० श्री वैभार गिरे सुभमस्तु ॥

(265)

॥ सु० स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमत्पार्श्व-नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत षरतर ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर साषायां श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् ओ० वं० षुस्यालचन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराण कुंवर श्राविका प्र० का० वैभार गिरे।

(266)

॥ ॐनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा० श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्वृ० ख० ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर साषा० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि व० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वंशोद्भव वावु मोहनलालजी त्कस्यात्मज वावु हकुमत राय– –कस्य गोत्रीय प्र० कारापित शुभमस्तु। वैभार गिरौ।

(267)

ॐ नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभ वा० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्वृ० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साखा० भ० यं० यु० प्र० श्री जिन नंदी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत् शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् बाबु महताब चन्दस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरांजी वीवी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे।

(268)

सं० १९११ व। शाके १७७६ प्र०। शुचिः सुदि। तिथौ श्री नेमनाथ पादन्यासो कारा० प्र० भ० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः का। से०। गो। श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी महा कुमा—तस्या श्रेयोर्थं भवतु॥

कुण्डलपुर।

आज कल यह स्थान बडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुव्वर ग्राम नाम है। यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी (इन्द्रभूति) जी का जन्म स्थान है। बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विश्वविद्यालय और छात्रावास था। चारों तर्फ प्राचीन कीर्त्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं। गवर्णमेंट के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ भई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उपयुक्त बहुतसे साधने यहां मिलेगी।

पाषाणपर।

(269)

॥ ५ ॥ संवत १४७७ वर्षे ज्येष्ट वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ बिंबं का०।

(270)

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी पुत्र स० भीषण कारित श्री महावीर बिंबं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाष सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठ० नीहालो तत्पुत्र भार्या ठकुरेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुव्वर ग्राम --कारा पिता वृहत्खरतर गच्छे पूज्य श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अभय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता॥

(272)

सम्वत १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने----- मासि शुक्र पक्षे सप्तमी गुरु वासरे बृहत श्री षरतर गच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्र सूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन तस्य भार्या न्हालो श्राविका पुण्य प्रभाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता श्री माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री रत्नतिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी को राजधानी वनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वाति, भद्रबाहू-आर्य महागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी और सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल विहार उड़ीसाके शासन कर्त्ता यहां रहनेके कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

(273)

संवत १८५२ वर्षे पोष शुक्र ५ भृगुवासरे श्री पडलीपुर वास्तव्य । श्री सकल संघ समुदायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापितं । कार्य्यस्याग्रेश्वरो तपा गच्छीय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्दजो प्रतिष्ठितं च श्री सकल सूरिभिः शुभं भूयात् ।

धातुओं के मूर्त्तिपर ।

(274)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्री दूगड़ गोत्रे सा० अर्जुन पुत्रेण सा० उदय सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्री पालादि युतेन आत्मश्रेयसे श्री चंद प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्रभ सूरिभिः ॥

(275)

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्य्या हीरादेवी श्री--कया ।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधो वासरे घोरपट श्री देवा कीर्त्ति भटकी घोरिय मुल संघे वहिजे पतिभर्जर्षिः भ्र्यमिरि पुत्र उदस्य-षिम्वराजामन । शुभं ॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाष सु० ५ चन्द्रे उप० सा० षेता भा० षेतलदे पुत्र षाषा वील्हा-देपा षेताकेन डूंगर निमित श्री धर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि तिलक सूरिभिः ॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० साल्हा भा० माल्ही पु० ऊदा भा० ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन पीकातमि० (?) श्री वासुपुज्य विंवं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

(279)

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू नाम्ना भा० चनू पुत्र डूंगरादि युतेन भ्रातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छेश श्री रत्नशेखर सूरि पुरंदरैः ॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ सीणुरा वासि प्रा० वा० मांई (?) आम्र वाकुंसुत समधरेण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आचंद्रार्कं जयतत् ॥ श्री ॥

(281)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाघू भार्या धर्मिणि पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे श्री जिन हर्ष सूरिभिः।

(282)

सं० १५२१ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० साल्हा भा० कल्ह पुत्र सं-नरसिंह भा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना भ्रातृ साहसमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री --रिभिः : ॥ देप। तप-- श्री ॥

(283)

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रातू सुत सा० आल्हा भा० सोनी पुत्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ आणांधारा (?) वास्तव्य वासियाः ॥

(284)

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय घेवरीया गोत्रे सा० केल्हण भा० झूणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साझू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ बिंब कारि० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(285)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लोंबडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी श्राविकया पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

(286)

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वामी प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

(287)

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देल्हाणधा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण ८ श्री शांतिनाथ बिंबं का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

(288)

सं० १५३८ वर्षे आषाढ़ वदि ५ स - - र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल - - - श्री ॥

(289)

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय भांडिया गोत्रीय सा० अजिता पुत्री सा० लाषा भार्या आढो सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभबिंबं कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

(७५)

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पट्टालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात् माह सुदि १ ॥ दिने ॥

(290)

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हाल्हा तस्य पुत्र सा० तकतनेनेदं पार्श्वनाथ विंबं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री जिनराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(291)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्र सा० आसा भा० कुंआरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विंबं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ नलकच्छे ॥ (?) ॥

(292)

सं० १५७१ वर्षे वैशाष सु० ३ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे। सा० माला भा० खाकू नाम्ना सुण्यो (?) जावड़ श्री० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं श्री संघेन ॥ श्रेयोऽयं ॥

(293)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अभयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अभय मंदिर गणि अभय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तिम्र तपा पट्टे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः।

(294)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उसवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साहवान भा०-जसिरि पु० पदमा-आपदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री

शितलनाथ विंवं कारितं प्र० नागोरी तपागच्छे भ० श्री राजरत्न सूरिभिः बघणोर वास्त व्यः श्री ॥

(295)

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० नानजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र-- एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्थे श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लि: ॥ श्री ॥

(296)

सं० १८५६ वर्षे वैशाष सुदि ३ बुधे बीबी मेंभाजी श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं सर्व समुदायेन ।

(297)

सं० १७४० वर्षे मार्गशिर ----श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ।

(298)

सं० १७६३ वै० सु० २ ----पार्श्व—

(299)

सं० १७६३ व० फा० व० १४ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ---।

(300)

सं० १७७१ वर्षे शाके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुक्रे माखपूर वास्तव्य वीराणी गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० भीमसी तत्पुत्र सा० मयाचंद वासी हाजीपुर पटणा

कातेन शांतिबिंबं गृहीतं श्री मेदिनी पूरे प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे भ० विजयरत्न सूरि राज्ये प० जय विजय गणिभिः॥ श्री ॥

(301)

सं० १७८६ वर्षे माघ सुदि १५ दिने चोडरिया गोत्रे सा० जीवण रामजी भार्या मन सुषदेजीः। सुत जगतसिंघजी बिंबं कारापितं।

(302)

सं० १८२० वर्षे मिः मि—सु० ३ श्री भ० श्री जिन लाभ सूरि ----

(303)

सं० १८२० वर्ष मिः मा० सु० ५ श्री भ० जिन लाभ सूरि प्र० घीर गोत्रे श्रे० मोतीचंद कारी --जिनः--।

(304)

सं० १८२० मि० फा० कृ० २ बुध दूगड़ महताब कुवर का० प्र० सागर---श्री अमृत चन्द्र सूरि राज्ये

(305)

२४ जिन माता पट्टपर।

संवत १८४८ मिति भाद्र सुदि ११ तिथौ॥ श्री पाटलिपुत्रे माल्हू गोत्रे सा० हुकुमचन्दजी पुत्र गुलाबचन्द भार्या फुल्लो बीबी कया इष्ट सिध्यर्थं श्री चतुर्विंशति जिन मातृ स्थापना कारिता प्रतिष्ठिता च श्री जिनभक्ति सूरि प्रशिष्य श्री अमृत धर्म वाचनाचार्य्यैः श्री रस्तु।

(306)

सं० १९०० मिः आषाढ़ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विंवं प्रति० खरतर भट्टारक गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशे डूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दौलतरामेन स्वश्रेय सोर्थम् ।

पाषाण के मूर्त्तियों और चरणों पर ।

(307)

(चन्द्रप्रभ विंवपर)

सम्वत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढ़ा गोत्रेगाणी वंसे स० ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० धनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंव प्रति ——

(308)

संवत १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रुंर पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य बिंवं प्रतिष्ठापितं ॥

(309)

॥ श्री मत्संवत १६७१वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० क्रुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं स० चागाकृतं।

(310)

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० चेतसी लघुभ्राता सा० नेतसी

युतेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य विंवं प्रतिष्ठापितं सं० क्रुंरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती लोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्कादे पुत्र सा० षेतसी भा० भक्कादे पुत्र सा० – सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री विमलनाथ विंवं प्रतिष्ठितं सा० क्रुंरपाल– – ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री क्रुंरपाल स० सोनपाले : स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ श्रीधर्म्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शु० ९ सा वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा करापितं बीराणी गोत्रे पाडली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शुक्र ९ सा० बेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी गोत्रे – – – प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र० बीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शांतिनाथ ॥

(316)

॥ सं० १७८९ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय षेमचन्द जीना पादुका ॥

(317)

॥ संवत १८१९ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक चंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥

(318)

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरौ गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि -- नाथ बिंबं कारापितं ।

(319)

॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ सवंत् १८२९ श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२९ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(320)

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैसाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरूणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालंकृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य। समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता। पं। गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु।

(321)

॥ सम्वत् ॥ १८७७ ॥ वर्षे वैशाष शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरूणां चरण पादुका प्रतिष्ठिता भट्टारक श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालंकृत श्री जिन

Footprints, Pataliputra (Patna) Temple dated S. 1877 (1820 A. D.)

चन्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये---वदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द तत्पुत्र श्री मग्गुलाल की र्त्तचन्द्र तत्पौत्र किशनप्रसाद अभय चंद्रादि सपरिवारेण स्वश्रेयोऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

(322)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

(323)

॥ संवत २४९ वर्षे वेशाष सुदि ३ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे---

(324)

संवत १५४८ वर्षे वैशाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज पापडिवाल सहैरम-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

(325)

॥ संवत १६०४ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रुरवंशे महाराजधिराजजी श्री मत स्याहजा राज्य भ० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे भ० श्री देवेन्द्र कीर्त्तिजी सदाम्नाये सरस्वती गच्छे वलात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभं ।

(326)

संवत १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमी गुरौ ढाकामध्ये ---- काष्ठा संघ माथुर गच्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्मे भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल मांगलु गोत्रे सा० गुलाल दास भा० मुलाई पुत्र० । सावलसिंघवी भमरसिंघवी केसर सिंह वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके ---- ढाकायां प्रतिष्ठा । --- पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

(327)

नेमनाथजीके विंवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्ठासं (घ) माथुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य याम्नाय भ० देवेंद्र कीर्त्तिदेव तत्पट्टे भ० जगत् कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० ललित कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० राजेन्द्र कीर्त्तिदेव इदाम्नाय अग्रोत् कान्वय वासिल गो श्री सौषीलाल तत्पुत्र बाबु मुनिसुव्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंवं प्रतिष्ठा कारापिता आरामपुर वास्तव्य---- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

(328)

॥ श्री संवत १९१० शाके ॥ १७७५ साल मिती वैशाख शुक्र पंचम्यां गुरौ पाटलीपुर सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटरु मल तत्पुत्र सीवनलाल प्रतिष्ठा कारापितं श्रीरस्तु ।

(329)

श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत १८४८ वर्षे मार्गशिर वदि ५ सोमवासरे श्री पाडली वास्तव्य श्री सकल संघ समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्य्यं स्याग्रेस्वरी श्री तपा गच्छीय श्राद्धैः श्री लोढा श्री गुलावचन्दजी प्रतिष्ठि तं सकल सूरिभिः ।

(330)

चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं कारयित्वा तत्र तेषां चरण न्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यैः ॥

सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

(331)

चरण पर ।

अव्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठि सुदर्शनस्य इमे पादुके संप्रतिष्ठिते सकल संघेन शुभ संवत्सरे ॥

दादा वाड़ी ।

(332)

संवत १६८२ मार्गशिर्ष शुदि ५ सा० कटार मल तस्यात्मज सा० कल्याण मल पुत्र चिंतामणि श्री जिन कुशल सूरि० प्र । वेगमपुर वास्तव्य ।

(333)

संवत १६९९ वर्षे पूर्व देशे पाडलिपुर नगरे वेगमपुर --

(334

तपागच्छे भ० श्री ५ श्री हीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः पं० चंद्र कुशल गणि नित्यं प्रणमतिश्च । सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी गोत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द प्र० क० पाडलीपुरे ।

(335)

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८४४ वर्षे शाके १७०९ प्रवर्त्तमाने मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे सूरीशाषायां साध्वी महत्तरा सुजान विजयाजी तत् शिष्यणी दीप विजयाजी तत् शिष्यणी अंते वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी मनसा रामेम प्रतिष्ठा कारापितं शुभमस्तु ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारिबागमें है। १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं। यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्व-नाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है। तलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं। यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था। यहां पर चरण पादुका है। यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइडसे लिया गया है।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर।

(336)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्भार्या मेहताब कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ भ्राता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोद्धारं कारापितं।

मधुवनके मन्दिरके मूर्त्तियों पर।

(337)

संवत् १८५४ माघ कृष्णा पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन बिंबं प्रतिष्ठितं --।

(338)

संवत १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शुभ स्वामी गणधर बिंबं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च बालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन।

(339)

संवत १८७७ – – श्रीपार्श्व विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं – – सांवत सिंहज पदार्थ मल्लेन – – – ।

(340)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविंवं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा महतावो – – मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

(341)

संवत १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या फत्ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(342)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विंवं कारितं ओशवंश दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(343)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविंवं कारितं ओशवंशे नवलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद् भट्टारक खरतर गच्छ श्री जिनाक्षयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(344)

सं० १८९७ वर्षे – – –श्री ऋषभ जिनविंवं कारितं प्रतिष्ठितं – – –।

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रषण गणधरायुते शाके (१७६२) फाल्गुनांतिमदले सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ जिनमूर्त्तिः कारापितं श्रे० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत युतया बृहत्खरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सूरिणा प्रतिष्ठिता।

(346)

सं० १९०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ बिंबं का० ---।

(347)

सं० १९१० शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वबिंबं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतर गच्छे ---।

टोंकपरके चरणों पर।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ बिरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे।

(349)

॥ संवत् १९३१। माघे। शु। १० चंद्रे। श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता। मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे। भट्टारक। श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ बिरानी गोत्रीय सा० खुसालचंदेन श्री संभव पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे॥

(351)

संवत् १९३० । माघे । । शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन कारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(352)

॥ सं० १९३३ का जेष्ट शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन चंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां । स्थापितांच । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(353)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(354)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णोद्धार रूपा । गुर्ज्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(355)

॥ सं १९४९ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण स्थापितं प्रति । भ । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(356)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरौ विरामी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-पादुका कारापिता प्र० ।

(357)

संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तथा स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सुरिभि । प्रतिष्ठितं च ।

(358)

॥ संवत् १८८९ माघ मासे शुक्र पक्षे पंचमी तिथौ बुद्धवारे । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भट्टारक । श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(359)

॥ संवत् १९३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका । अहमदावाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(360)

॥ संवत १९३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुवधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य ।सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता कारापित च । मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम । श्री श्री जिन शांति सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(361)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(362)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री सीतल नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोधार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(363)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस प्रभु पादुका कारापता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(364)

॥ संवत् १९३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तया स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय गच्छे । भ । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(365)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(366)

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री विमलनाथ जिनेंद्रस्य पादुका चीर्णोद्धार रूपि । गुजरात का श्री संघेन । तया स्थापना कारापिता । मलधार श्री बिजय गच्छे । जं । यु प्र । भट्टारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

(368)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे भट्टारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

(369)

॥ सं १९१२ वर्षे शाके १७७७ मिते मासोत्तम मासे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षौ नवमी तिथौ सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता वृहत् खरतर भट्टारकोत्तम भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

(370)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भट्टारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

(372)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद् वास्तव्य । सेठ भगु भाइ पेम चंदेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

(373)

॥ संवत १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री कुंथुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

(374)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री कुंथु जिनेंद्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बई वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता --- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर -- भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

(375)

॥ सं० १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

(376)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तया स्थापना कारापिता मल ॥ पूर्णिमा । विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।

(377)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंदेन । श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

(378)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । भट्टारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभि प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

(379)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुव्रत जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(380)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुव्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

(381)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमि-नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(382)

॥ संवत १९३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका। जीर्णोद्धार कृपा। अहमंदावाद वास्तव्य। सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारापिता। पूर्णिमा विजय गच्छे भट्टारक। श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं ॥

तेजपूर (आसाम)

राय मेघराजजीका मंदिर।

(383)

संवत १५१३ वर्षे वैशाष शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० सानंद भार्या हीसू सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः।

(384)

सं० १९४३ का मिति वैशाष शुक्ल सप्तम्यां ----

(385)

सं० १९५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे ॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री जिनदत्त सूरि नाम पादुका का०।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल — नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट।

धातुयोंके मूर्त्ति पर।

(386)

श्रीपार्श्वनाथ विंव।

ब्रह्माण सत्व संयकः श्रियावे सुनः सुपुण्यक श्री द्रुः (?) सीलगण सूरि भक्तरप (?) द्रकुले कारयामास संवत १०३२

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेश्वराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पाल्हण राल्हणाभ्यां स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

ॐश्री मूलसंघे गुणभद्र सूरेः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) वालान्वय सारभूतः ।
यो विस्तु (श्रु) तोसौ सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तस्माच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३९ फा सु० २ गुरौ ॥

(389)

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय बापणा० सा० छाहड त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडाबजार–पंचायति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पतील मुलसरक ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥ कारिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर।

(391)

॥ संवत १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या म्याघुरि सुत पूजाकेन भार्या सोही सुत बीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारितः। आगम गच्छे श्री अमरसिंह सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(392)

सं० १५११ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० मरगदे सुत सा० हदाकेन भा० करमी पु० पाल्हादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः।

(393)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशाषायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः।

कलकत्ता अजायब घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्त्तियों पर ।

(394)

--संवत १-८४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंबहरा स० केशव सुत सं० मंडलिक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदे सुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-मेघाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री जीवणि प्रमुख रामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छ नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पट्टालंकरण भ० श्री उदय वल्लभ सूरिभि श्री ज्ञान सागर सूरि युतो प्रतिष्ठितं।

(395)

संवत १६०८ वर्षे माघ वदि ९ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातौ सा० राघव भा० रतना सा० नरसीआ भा० सुजलदे सा० रणमल भा० वेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ।

म्युनिक (जर्मनि) के जादुघरके धातुकी मूर्त्ति पर ।

(396)

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्ठिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुडाकेन भा० सुहवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र सूरि पट्टे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु ।

डाः कुमार स्वामिके पास 'समवसरण' के चित्र पर ।

(397)

संवत १६८० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री मदुत्तराध गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यमाने लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्त्तियों पर ।

(398)

सं० १५२७ पौष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सहिजक तत्पुत्र श्रे० डूंगर भा० श्रा० सुहि सपरिवार भा० सहिजलदे धरमसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(399)

सं० १५३३ वै० शु० १२ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० ताल्हा भा० राजु पु० सा० लिमघाक तत् भा० रत्न रुद्र भ्राता सा० किवालध मेघ आदि सपरिवारेन श्री कुंथुनाथ विंवं का० प्रति० श्री तपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्री वसंतनगरे।

जैपुरके वेपारियोंके पासकी मूर्त्तियों पर।

(400)

सं० १४०५ वैशाष सु० ३ श्री उएस गच्छ तातहड़ गोत्र प्र० सा:-ज्ज भा० व्रह्मादे वही पुत्र संघ० सा० चाहूकेन सकुटुंवेन श्री रिषभ विंवं का० प्र० श्री ककुदा चार्य संताने श्री कक्क सूरिभिः॥

(401)

सं० १५१२ वर्षे वै० शु० ५ ओसवाल गोत्रे सा० महणा भा० महणदे सुत सा० सीपा केन भा० सूलेसरि प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ विंवं का० श्री कक्क सूरिभिः॥

अजमेर राजपुताना म्युजिउमके वारलि गांवसे प्राप्त पत्थर पर। *

(402)

---विरय भगवत (त) -- ध -- चतुरासि तिव (स) -- (का) ये सालिमा-लिनि -- रंनि विठमाक्तिमिके --

* इसमें श्री महावीर स्वामिका नाम और ८४ वर्षमें मध्यमिका नगरका जो कि चित्तोड़से ४ कोस उत्तरमें था उल्लेख है और यह ई: ३।४ पूर्वशताब्दि का बहोत प्राचीन लेख है ऐसा विद्वानोंका विचार है।

❋ बनारस ❋

काशीदेशका यह वाराणसी वा बनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है। हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पोष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं। महल्ले भेलुपुरा और भदेनोमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं। यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ-वदि ३ केवल ज्ञान भया है। निकटमें बौद्धोंका सारनाथ नामक प्राचीन स्थान है।

सुत टोलेका मंदिर।

पंच तीर्थी पर।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्र १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्रे० मूंधा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थं श्री शितलनाथ विंबं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागरतिलक सूरि पट्टे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

(404)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्रे० जावड़ भार्या पूरी सुत धर-णाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंबं श्री निगमा[illegible] भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः॥ श्रीः॥ श्रीः॥

बड्डजीका मंदिर ।

(405)

सं० १५११ वैशाख शु० ५ प्राग्वाट सा० सिवा भा० लादां सु० साह हीराकेन भा० संजश्री प्रमुख सुरत श्री-जिनावति का० प्र० तपा रत्न शेखर सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

(406)

सं० १४८५ वर्षे आ० सुदि १० रवौ माल्हू --ऊ० ज्ञा० साह वीजड पु० साह हरपाल भा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं राजावर्त्तक रत्नमयं सपरिकरं का० प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

(407)

सं १५८६ वर्षे वैशाष सुदि ३ भोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंघ भ्रातृपरी पनपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

(408)

संवत १२५७ ज्येष्ठ सु० १० महेष्ठीराचार्य ----स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिताः ॥

रामचन्द्रजी का मंदिर।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूराणा गोत्रे सा० जतरा पु० सा० जगद् भार्या जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्रे० महावीर बि० का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्यै श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५९ ज्येष्ठ वदि १२ शनौ सूराणा गो० सा० अमर भा० अड्हव दे सुत सा० लाला साल्हा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० प्र० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पाल्हण देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिघा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरीन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघेन॥ शुभं भवतु सर्वदा सर्व कुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा --- पु० --वाल्हा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ बिंबं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशो देव सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ घेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीज देवी गोवेद पु० भीमा पु० सा० सिंघण सुमेरु आत्म पुण्यार्थे कुंथुनाथ बिंबं श्रीमल धार गच्छे भ० गुण कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन।

(414)

सं १५६२ वर्षे वैशाष सु० १० रवौ श्रीमाल मठवीया गोत्रे सा० परसंताने सा० पहराज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्श्वनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं। प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन तिलक सूरि प० श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री भिः॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट।

(415)

सं० ११७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीषंडेरकीय गच्छे श्रीवाहड़ भार्य धीरु पु० धरा ---मयणल्ल---णिग भार्या केल्हंण सहितेन बिंबं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः।

(416)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उके० व० सा० रेडा भार्या रण श्री पुत्र पद सादा जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं च॥ श्री॥

(417)

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उवएश वंशे डागलिक गोत्रे साह घना पु० स० पासवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपट्टे सद् गुरु चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री सावदेव सूरिभिः।

(418)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रि दलीय काणा गोत्रे ठ० नाग राज सु० लढू भार्या धर्मिणि सु० सं० श्री केवल दास भार्या वीर सिंघि पु० स० सूर्यसेन श्रावकेण श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागर सूरि पट्टे श्रीजिन सुन्दर सूरि पट्टे श्री जिन हर्ष सूरिभिः॥

(419)

सं० १५१९ आषाढ़ वदि–मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० धर्मिणि पु० स० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि बिंबं का० प्र० श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

(420)

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराज भा० माणिकि सुत देवदत्त भा० रूपाई सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे।

(421)

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या सुहवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रतन सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगरे॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर।

(422)

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मंडलिक सुत कामा भार्या कामोदे सुत झाझण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः।

(423)

सं० १५४८ वर्षे वैशाष शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० वेला मातर भार्या सोही सु० महिराज जिणदास महिपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयोर्थं श्री श्रेयांस बिंबं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना धांदू वास्तव्यः॥

सिंहपूरी ।

(424)

सं० १५३४ वर्षे मार्ग सुदि १० शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राज भार्या याकू पु० सा० असपति भा० असल देवी माई सुत गुणराज सरादि कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठतं श्री वृहत्तपाच्छे श्री उदयसागर सूरिभिः ।

(425)

चरण पर ।

सं० १८५७ मिति चैत्रक मासे कृष्ण पक्षे षष्ठ्यां कर्म्मवा-पूज्य भट्टारक श्रीजिन हर्ष सूरि विजयराज्ये श्रीसिंहपूर ग्रामे तेषां केवलोत्पत्ति स्थाने गांधि गोत्रीय मयाचंद प्रमुख समस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसाख्या नामेकादशानां लोक नाथानां पादन्यासः कारितः प्र० श्रीजिन लाभ सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीहीरधर्म गणिभिः खरतर गच्छे ।

मिर्जापुर ।

पञ्चायती मन्दिर ।

(426)

श्रीपार्श्वनाथ विंब पर ।

सं० १३७९ वर्षे उएसज्ञातीय वावेला गोत्रे देवात्मज सा० धीका पुत्र संघपति झाझा सुत सा०— जूकेन पितृ श्रेयसे का० प्रति० श्री कृष्णर्षिगच्छे श्री प्रसन्न चंद्र सूरिभिः ॥

(427)

सं० १४२० वर्षे वैशाष शुदि १० शुक्रे श्री श्री मालज्ञातीय ठ० वीजा भार्या मोहनदेवि श्रेयसे सुत जोलाकेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं त्रिभवीया श्रीधर्मदेवसूरि संताने श्रीधर्मरत्न सूरिभिः ॥

(428)

सं० १४८२ व० वैशाष वदि १ प्र० फूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदे पु० महिराज जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचद्र सूरिपट्टे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः। श्री ॥

(429)

सं० १४९० व० वैशाष वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कर्मसिंह पुत्र डालण तत्सुताभ्यां स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विंबं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

(430)

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जसमादे सुत रागा भीमा पीमाभिः भ्रातृषेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विंबं का० प्र० श्री पीपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपट्टे श्री उदयदेव सूरिभिः।

(431)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवौ उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्ठ सा० माडण भा० मोहणि पु० काल्हा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे जयचंन्द्र सूरिपट्टे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

(432)

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवौ उप० ज्ञातीय कठउड़ गोत्रे सा० बरसा भा० माल्ही पु० रामा भाडा राजा चांदा भा० मरघू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामि विंबं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे भ० श्री सोमकीर्त्ति सूरिभिः सद्रंछलिया नगरे।

(433)

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावं-ज्रा स० ऋषभदास भार्या रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिपे स्वानुवर दुनोचंद्रस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं प्रतिष्ठापितं ॥

(434)

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंथुनाथ जिन बिंबं दू० बिसनचंद्रेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

(435)

सं० १८९७ फा० शु० ५ श्रीपार्श्वनाथ वि० प्र० श्री पार्श्वनाथ बि० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिण्युपदेशेन कारिता। सेठ उदयचन्द धर्म पत्नी महाकुमारिभिद्या। वाचनाचार्य श्री चारित्र नन्दन गणिभिर्देश---

(436)

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ विंवं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० वोहरा नाथूराम पत्नी साहवां नाम्न्यात्म श्रेयसे वाचक चारित्र नन्दन गण्युपदेशतः ॥

सेठधनसुखदासजी का मंदिर ।

(437)

सं० १४९३ वर्षे माह वदि १ वुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० नरपाल भार्या नयणादे सुत देपाकेन श्रीपद्मप्रभ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं। -- गच्छे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥

(438)

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने बघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा० सीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महू पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ बिंबं करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

(439)

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं। छजलानी चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चोरड़िया मनुलाल वधू --

(440)

सं० १८९७ का० भु० ५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० श्रीजिन महेन्द्र सूरिणा का० । सकल श्रीसंघे ।

देहलि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था । हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिस्को छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

चेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

(441)

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ ओं गागसादेव धर्म्मोयम्-- (आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता)

(442)

सं० १५१६ वर्षे ज्ये० व० ११ शुक्रे सोमसर वासि उकेश सा० मेहा भा० माल्हणदे पुत्र सघाकेन भा० सल्ही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं -- श्री कक्क सूरिभिः ॥ सचिंतीगोत्रे ॥

(443)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिचन्द गोगा गोरा संताने साधु आसपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परवत सांडादि युतेन भ्रातृ पूनपाल पुण्यार्थं श्रीपार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्टितं तपागच्छे श्री हेमहंस सूरि पट्टे भ० । श्री हेम समुद्र सूरिभिः ॥

(444)

संवत १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्रे० कटाया भा० रांउं सुत धुना भा० हमकू सुत चांपाकेन भा० धर्मिणि नामाणिकादि कुटुंवयुतेन स्वश्रेयोर्थं नेमिनाथ विंबं कारितं प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिभिः अहमदावादे ।

(445)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उकेश वंशे साधुशाखायां सा० पाचा भा० पाल्हणदे तोल्ही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० पेताकेन तोल्ही पुत्र झांझा जाल्हा रूपा चांपा धरमा युतेन सा० पोपा पुण्यार्थं श्री मुनि सुव्रत का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(446)

सं० १५३६ माघ सुदि ५ दिने प्राग्वाट ज्ञाति सा० काजा भा० साकू पुत्र सा० हापा केन भा० नाई प्रमुख कुटुंवयुतेन श्री चन्द्रप्रभ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५ लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(447)

संवत १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुड़ गोत्रे व० अभय राज भार्या आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख परिवृतेन श्री आदि जिन विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः।

(448)

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे वहुरा हीरा भा० हीरादे पु० जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः अहिलाणी।

(449)

॥ श्री पार्श्वनाथ स० १६०५ फागुन सुदी दसमी चरवडिया गोत्रे गागपत्नी त्वर-मिनी पुत्र षेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपला गच्छे भ० श्री भावतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिषर।

(450)

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे----।

(451)

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंघ जी राजे श्री मूलसंघे आम्नाये वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री विद्दै कीर्त्ति स्तदाम्नाय षंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० भ० श्री कचराज भा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ धातु दानु स० श्रीरायस भा० रयणदे---पु० हरदास---भा० महिमादे लाढ़मदे --।

(452)

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(453)

सं० १६८१ व० फा० शु० १० भ० चंद्रकीर्त्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा० नीमा भा० सरूपादे ।

(454)

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे- -सुश्रावक पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥ श्रीमाल ज्ञातौ ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके बिंब पर ।

(455)

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरुता नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे सं० जयराव भा० सोभागदे पु० सं० ओहणकेन श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० तपागच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तिः ।

सर्व धातुयोंके मूर्त्तियों पर।

(456)

ओं। संवत ११ ९७ वैशाष सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सतु श्री बि---।

(457)

संवत १२८० वर्षे -----सांढा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३३१ श्र० व० २ हल --- ।

459)

सं० १४३३ आषाढ शु०--प्रा० लघु व्य० आसा भा० ललतदे--श्री पार्श्वनाथ बिं० का० श्री गुणभद्र सूरीणामुपदेशेन।

(460)

सं० १४४५ पौष शुदि १२ बुधे ऊ० श्रे० जोला भा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्र० ऊ० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः।

(461)

सं० १४५४ वर्षे प्रोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा भा० पाषी पुत्र लाषाकेन स्वपुत्र वीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छ सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव सुन्दर सूरिभिः।

(462)

सं० १४६३ वै० सु० १०—सा———

(463)

सं० १४७१ माघ सुदि १० रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा: रामा भा०——ठाकुर पितृ श्रेयोर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी ———।

(464)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ऊ० ज्ञा० सा० तिहुणा भा० तिहुणांसार पु० चाहड़ भा० केल्हु पु० हापा भा० तेजू पु० करमोकेन पितृ——श्री पद्मप्रभ बि० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः॥

(465)

सं० १४७९ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० धरणा पुत्र संग्राम समरासिंघ श्रावकः श्री महावीर विंबं पुण्यार्थं कारिते प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः॥

(466)

सं० १४८२ वर्षे माह सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाडा पु० जयता भार्या साल्ही पुत्र चोषाकेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री धर्म घोष ग० श्री धर्म घोष ठा० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री——देव सूरिभिः।

(467)

सं० १४८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ऊ० ज्ञा० पालडेचा गोत्रे सा० टापर भा० तेजलदे पु० अगड़ाकेन भा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य बि० का० प्र० श्री सुविप्रभ सूरिभिः श्री वीरभद्र सूरि सहितेन॥

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा भा० रूपाई पु० कालू पाचाभ्यां भ्रा० अदा भा० आल्हणदेवि: श्री पद्मप्रभ बि० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०–प्राग्वाट सा० साजण भा० लाषू पुत्र केल्हाकेन भा० लक्ष्मी भ्रातृ भीम पद्मादि कु० यु० श्री धर्मनाथ विंबं कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री–५ ।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराज भार्या सीधरही पुत्र सा० मोहिल धण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ बि० का० प्र० वृहद्गा० श्री मुनि-श्वर सूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसलदे पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विंबं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(472)

सं० १५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर भार्या रैनसिरि तत्पुत्र सोनिग भार्या षेमा प्रणमति ।

(473)

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने ऊकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जयतलदे तत्पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलषा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र० श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(474)

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्रे श्रवाणागोत्रे उदा भार्या लाखि पु० देवराजेन स्व पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः ।

(475)

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने ऊकेश ज्ञातीय सा० षापा भा० षापलदे सुत गूंगष केन भा० वापू सु० षांईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० तपगच्छेश श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः । कायषा ग्राम ।

(476)

सं० १५०७ वष वैशाष वदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वोडा भा० कुतिकदे तयोः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० भादा भा० झबकूकेन आत्म श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री शीलरत्न सूरिभिः गीलोषा वास्तव्यः ।

(477)

सं० १५०७ वर्षे फा० सु०– सं० हमा पोयपुत्र सा० सारंग भार्या मचकु पुत्र नाथा भाडादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ।

(478)

संवत १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र सा० कमलाकेन पुत्र जावा गोरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ऊ० ज्ञा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा भा० जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिं० का० प्र० श्री संडे-गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरीणां पट्टे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः॥

(480)

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ऊ० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० काल्हा भार्या झवकू सुत सा० रुपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ष० ग० श्री जिन सागर सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेय्येर्थं श्री धर्मनाथ विं० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय प्रभ सूरिभिः काकरयास्तव्य ।

(482)

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्के दिने महतिआण सा० सुरपति भा० त्रिलोकादे पुत्र्या सा० ग्यान भगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित विंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपट्टे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(483)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा भा० चन्हडा धर्मा कर्मा हासा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत अदा बरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ कमलमेरू।

(484)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सोणुरा वासि प्रा० सा० राजा भा० रया पूरि पु० तीपाकेन भा० रालू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रभ विंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(485)

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरू गोत्रे सा० पासवीर भा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण पुत्र देवा सम्र--युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंबं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ वहादुर पुरे ॥

(486)

सं० १५३४ वैशाष सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला सिरिपुत्र--

(487)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरूपदेशात् ॥ स० षेतसी भा० झबूः।

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या लषी पुत्र देवण मांडण धर्म्मा श्रावकैः श्रे० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युतैः श्री धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः।

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवासि उ० व्य० महिराज भा० माणिकदे सु० श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे। अदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाष वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमधर नोका पोमा पागा पहिराज आढू लाल्हा लेषसी पितरनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारक श्री सोमरतन सूरिभिः॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे भ० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० स० हंसराज हापु---।

(492)

संवत १५५१ वर्षे वै० सुदि ८ रवौ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लापा भार्या सोहिणी पु० चांपा भ्राय पौत्र पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मघोष गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः।

(493)

संवत १५५३ वर्षे खिवनाग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वहकटा गोत्रे सा० जयत कर्ण सुत सा० जिणदत्त पुत्र सा० सोनपाल सुश्रावकेण भा० गउराई लघु भ्रातृ रत्नपाल पृथ्वीमल्ल सस्रो केण श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्री जिन चंद्र सूरि पट्टे श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

(494)

सं० १५५३ व० आ० सु० २ रवौ श्री श्रीमाली ज्ञातीय सा० सीधर भा० सोही सुत सा० जूठा सा० संघा सा० भ--इ सा० पाबाके सा० जावड वचनेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० मलधार गच्छे श्री सूरिभिः। सर्वेषां पूजनार्थं ॥

(495)

सं० १५५९ वैशाषवदि १३ श्री मूलसघे षंडेलवाल सा० देवा पुत्र परवत नित्यं प्रण-मति गोधा गोत्रे।

(496)

सं० १५५९ व० पोस वदि ४ दिने गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राजा भा० राजलदे पु० पोमा भा० झमकू सु० श्रेयोर्थं श्री वासपूज्य बिंबं का० प्र० महाहडीय गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीमति सुन्दर सूरिभिः दघालीया वास्तव्यः।

(497)

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवौ श्री उकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेडिया शाषायां व० डालण पु० रत्नपालेन स० ओवत व० घघुमल्ल युतेन मातृ पितृ श्रे० श्री संभवनाथ बि० का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य० श्री देव गुप्तसूरिभिः ॥

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाष शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा भात्र मूजा भा० विमलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारापितं–श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं॥ श्री लषराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू पु० सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रोपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्रो चंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राभा० वुलदे पु० सा० पतोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

(501)

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य उ० श्री गुणप्रभ –– श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं ।

(502)

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान भूषण देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूंवड़ ज्ञातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमणि । सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

(503)

सं० १६१९ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विघोगा भार्या वाई पूराई सुत देवचन्द भार्या वाई हासो सुत रायचन्द भीम। श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरि तत्पट्टे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि श्री पत्तन वास्तव्यः।

(505)

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं० सांवल। साकार-साहमल अ-जा। गा---।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञातौ वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा० सबरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर।

(507)

सं० १४८९ वर्षे पौस वदि १० गुरौ श्री हुंवड़ ज्ञातीय श्रे० उदवसीह भार्या वईराऊ तयोः पुत्र तथा दोहीदा सुत दोगा--पत्नी वई चमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ-- विंवं कारापितं श्रीवृहत्तपा पक्षे श्री रत्न सिंह--।

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २--ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे --श्रीश्रेयांस विंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० --।

(509)

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू केन पुत्र मेघा माला नाल्हा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विंबं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्वत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या पाल्हणदे सुत मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन मातृ पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी नागेन्द्र गच्छे श्री गुण समुद्र सूरेरुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया वास्तव्यः । श्री ।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० --सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा० ललतु पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विंबं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र चवू लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

(513)

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ बिंबं प्रति०-।

(514)

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसबाई नाम्न्या श्री पार्श्व बिं० का० प्र० तप० ग० श्री विजय देव सूरिभिः।

(515)

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या --पार्श्व बिं० कारापित।

(516)

सं० १८५२ पोस सु० ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद टोडरमल्लेन श्रेयोर्थं।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर।

(517)

सं० १२१४ आषाढ़ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या मना—।

(518)

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ --- सुहव भा० ---।

(519)

ॐ संवत १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीषंडेरगच्छे श्री यशोभद्रसूरि संताने। श्र० जगधर भार्या जमति पुत्र झांझण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ झांझण श्रेयसे श्री अजितनाथ विंबं कारितं। प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

(520)

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू --।

(521)

संव्रत १४८३ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय वहरा घड़ला भार्या ललता देवि सांवलीदास हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं। नागेंद्र गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री सिंह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु।

(522)

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवी श्रे० कावा भार्या विजी-परनागड प्रणमति।

(523)

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपार्श्व विंबं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे। श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(524)

संवत १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोल्हरण पु० सा० छेपतन श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः।

(526)

सं० १९३५ वर्षे माघ कृष्णा पंचमी भृगौ अहमदावाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या बाई रुकमिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं भट्टारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा बीरुदे।

छोटे दादाजी का मन्दिर।

(527)

संवत १८७१ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे भट्टारक श्री जिन कुशल सूरि पादुका कारिता श्री स्याहजानावाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च बृहद्भट्टारक खरतर गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्बादस्याह अकबर स्याह विजय राज्ये शुभं भूयात्॥ संवत् १९०८ मिती चैत्र शुदि १२ सूर्य्यवारे श्रीजिन नंदि वर्द्धन सूरिभिः विजय सधर्म राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या राधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात्॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक मति कुमार तच्छिष्य हर्ष चंदोपदेशात्॥

(528)

॥ संवत १९२९ वर्षे वैसाष मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय धीधीद गोत्रे वखतावर सिंघकस्य भार्या महताव वोवी श्री शांतिनाथ विं० प्र० करापितं प्रतिष्ठितं वृहत् खरतर गच्छे श्रीजिन श्रीकल्याण सू०।

(529)

श्री सं० १९७२ मिः माघ शुक्ल ९ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदाश्रिते भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल माला वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुऐ ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्रे० नागड सुत आसिग तत्पुत्र राल्हण थिरदेव मातृ सूहपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंबं कारापिता ।

(531)

संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवलदे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहडादे पु० संसारचंद । सामंत सोभा स० श्री सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

(532)

सं० १५०७ वर्षे वैशाष वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो सुता श्रे० ध्यघा वीघा विरा भार्या षीमा पूना भगिनी हरषू एतेषां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

(533)

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहरू पु० रानपाल भा० कपूरी पुत्र – हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं० प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

(534)

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवौ ऊ० आईचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र दसूरकेन आत्मश्रेयसे सितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

(535)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा० हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(536)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे० सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुत गाईया गुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ॥

(537)

संवत १५२५ वर्ष चैत्र वदि ९ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० सूहूला सुत सिवा भार्या सोभागिणि सुत् पद्मा भार्या पहती श्री सुविधिनाथ विंवं का० सद्गुरूप देशेन विधिना प्र० विंवं----छ॥

(538)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० बईजा स्वसाकला नाम्न्या श्री नेमिनाथ विंवं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः।

(539)

सं० १५२८ माह व० ५ वुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीका भार्या वील्हणदे पुत्रैः साह कोहा केल्हा मोकलाख्यैः स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं का० श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र०।

(540)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ वुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपाई सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं स्व श्रेयोर्थं श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरीणा पट्टे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु।

(541)

सं० १६०३ वष आषाड वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे पुत्र मानसिंघ भा० षेतसी युतेन स्वश्र यसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः।

(542)

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उसवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० भयरव भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(543)

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेड़ता नागर वास्तव्य उसभ गोत्र को० जयता भार्या जसदे पुत्र को० दीपा धनाकेन श्रीपार्श्व वि० का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू--।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर।

(544)

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० धवल सुत जैमल श्रेयोर्थं--कारितः ॥

(545)

सं० १३७९ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कंधा भार्या--- पुत्र माल्ह श्री शांतिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः।

(546)

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाट --- स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विंवं का० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(547)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष सु० ३ रवौ रहूराली' (?) गोत्रे सा० वीजल भार्या विजय श्री पु० रावा----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिं० प्र० श्री धम---श्रीपद्म शेषर सूरिभिः।

(548)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जील्हाकेन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम हंस सूरिभिः।

(549)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनौ श्री षंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया गोत्रे सा० महूण पु० षोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लषी पु० करमा नाल्हा सहितेन स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(550)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनौ उकेश ज्ञातौ तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू भा० अणुपदे पु० सच्चवीर भा० सेत्त पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः।

(551)

सं० १४९० वै० सु० शनौ श्री मूलसंघे नंदिसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवाः तत्पट्टे श्री सकल कीर्त्ति देवाः। उत्त रै

अख्योभि (?) हुं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मघूसुत विरुआ भ्रातृ वीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः तं च सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

(552)

सं० १४९२ वर्षे मार्गशिर वदी १ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

(553)

सं० १४९९ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा भावल दे सुतव्य० वेला पत्नया वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरिभिः ॥श्री॥

(554)

सं० १५१६ वर्षे वैशाष वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सं० रामा मातृ शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गोरड़ेया वास्तव्य ॥

(555)

॥ १५१६ आषाढ़ सु० ५ ओष्ठे गोत्रे सीवा भार्या रूपा पु० सोल्हा तेजा ----- पद्मावति प्रणमंति ।

(556)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे बुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी पु० नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नाथा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० डउढा भा० हरषू सु० श्रे० नागा भा० आजी सुत श्रे० जिनदासेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं आगम गच्छे श्रीदेवरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठित ।

(558)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे सा० सोमा भा० धनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्क सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पल्हयउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा० घेल्हा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं । वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(560)

सं० १५२४ आषाढ़ शु० १० शुक्रे उकेश वंशे--भा० संपूरा पु० जेसाकेन भा० धर्मिणि पु० माईआ पौत्र इसा वीसालादि कुटुंब युतेन पु० माइया श्रेयसे श्री नमि बिंब का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(561)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवाणि सं० गोला भा० कर्मा पु० नरबदेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना वलहरा ।

(562)

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उकेशवंश भ० गोत्रे सा० नीवा भार्या पूजी सा० पूना श्रावकेण भ्रातृ सजेहण मा० अंबा परिवार युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(563)

संवत १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देपू पुः मेरा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(564)

॥ संवत १५५७ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र मा० षीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंडेरग गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः।

(565)

सं० १५५९ (?) वर्षे आषाड सु० १० सूराणा गोत्रे स० शिवराज भा० सोतादे पुत्र स० हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पूजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पट्टे नंदिवर्द्धन सूरिभिः।

(566)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रौपदी पौ० कशा पीघा श्रीवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा० ---तत्पु० पहराज तत्पुत्र राठा---त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिन-चन्द्र सूरिभिः।

(568)

संवत १५७९ वर्षे आषाढ़ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र रत्न मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्री: पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे।

(569)

सं० १९०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर पूर्यां श्री चतुर्विंशति जिनमातृका पट्ट लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर जंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें।

(570)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ शुक्रे बड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण भार्या तारू पुत्र सा० लषाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥ पं० पुण्यनन्दन गणीनामुपदेशेन।

जयपूर।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्त्तियों पर

(571)

सं० १३-- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड वागड (?) गण श्रीमन्-- मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० वाहड भार्या लाछि सुत षीमा भार्या राजलदेथि श्रेयोर्थं सुत दिवा भार्या संभव देवि नित्यं प्रणमति।

(572)

सं० १४३९ वर्षे पौष ९ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० --- मायलदे पु० सामलेन श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे। ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा० धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ विंबं कारितं श्रीम० तपागच्छे ---- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ गुरौ रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा भा० धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

याति किसनचन्दजी के पासकी मूर्त्तियों पर ।

(575)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे वटदेव पुत्र विसल पुत्र लषमणेन मातृ वीरी श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

(576)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ शनौ श्री---गच्छे--- जलहर गोत्रे सा० लुणा भा० लुणादे पुत्र पविन पाल्हा खानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विंवं कारि० प्र० ---।

(577)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञातौ भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या खासु पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री पल्लि गच्छे -----।

(578)

संवत १५०९ वर्षे ऊएस वंशे सा० हऊदा भार्या आलूणादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं ।

(579)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीआ गोत्रे सा० वादी भ० पोमाइ सु० तिउण श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रोवंत साजण प्र० कुटुंव युतेन श्री पद्मप्रभ विंवं कारितं रोद्रपल्लिय गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिभिः ।

(580)

संवत १५५९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन भा० हीरादे पुत्र पुना धूनादि कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे।

(581)

संवत १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे स० सिघा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः।

(582)

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ विं० गृहीत घ० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति०।

जोधपुर।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

धातुओंके मूर्त्ति पर।

(583)

सं० १४५९ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्रो सषदे- केन पुत्र पूजा काजा युतेन पित्र श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः।

(584)

सं० १४८० वर्षे वैशाष सु० ३ घांघगोत्रे सा० मोल्हा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण भार्या खिरियादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(585)

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादि युतेन श्री अजितनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(586)

सं० १५०३ आषा० सु० ९ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराज भा० सीता पु० पीद भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं श्री - - र्षि गच्छे श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

(587)

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती भंडारी गोत्रे सा० सोमा भा० सोम श्री पुत्र हीराकेन आत्म० श्री श्रेयांस विंबं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पट्टे श्री विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

(588)

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरौ उप० ज्ञा० म० नूणा भा० माणिकदे पु० सांडा भा० वाल्हणदे पुत्र षेतसि वास० प्रा० मा० श्र० श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० ब्रह्माणीया ग० श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

(589)

सं० १५२२ वर्षे वैशाष सु० ३ नना ज्ञा०श्रे० जइता भा० षरि पुत्र गेला भा० वाली नाम्न्या पुत्र अमरसी भा० तिलू सजन कवेला मातृ दूसी ज्येष्टमाला प्रमुख कुटुंब युतया स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(590)

✓ सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य भ० पद्मनंदि तत्प० भ० श्रीसकल कीर्त्ति तत्प० भ० श्री विमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं। श्रो जे संग भा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय।

(591)

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ९ बुधे श्री --- गोत्रे सा० भादा भा० सावलदे पु० मेलाकेन भा० मालूणदे पुत्र भींभा कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पट्टे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः।

(592)

सं० १५३२ वर्षे वैशाष वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण भा० राउं सु० भीदा भा० भावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री जीरापलीय गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पट्टे श्रीसागर नांद सूरिभिः शुभं भवतु

(593)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्त्ति स्त० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरूपदेशे--

(594)

सं० १५५१ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ बुध वासरे साह चांपा भार्या मेघू डुंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोली वाल गच्छे भट्टारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(595)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरौ प्रग्वाट ज्ञा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदो --- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंबं का० प्र० पूणिमाक गच्छे ---सागर सूरि---।

(596)

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरौ उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिंगदे पु० तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० बीफलदे पु० नाम्ना डामर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्त श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

(597)

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवौ श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या धम्माई सुत बीसा सूरा भार्या लाली द्वि० भार्या अरधाई धर्म्म श्रेयसे श्री शीतलनाथ विंबं प्रति० सिद्धांती गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र०।

(598)

॥ ॐ संवत १५६५ वर्षे वैशाष वदि १३ रवौ ढेढीया ग्रामे श्री उएसवंशे सं० चीदा भार्या धरणू पुत्र सं० तोला सुश्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० लषमण भ्रातृ

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भाव सागर सूरीणा मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन।

(569)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिग पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा० हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिषभदास भार्या अमरादे सुत अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण सागर सूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन–भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद करापितं।

देविजीके मूर्त्तिपर।

(४ भूजा + सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे वीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत धरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवी वेङ्करुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवीर पु० सा० सूरा भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल श्रा० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः।

(603)

संवत १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशाषीय पोसालेचा गोत्रे सा० षीमा भा० अधी-पु० सा० श्रीवंत भा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ विंवं का० श्री कोरंट गच्छे श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्री ॥

(604)

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उकेश वंशे व्य० परवत भा० फदकु तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्क विहान कर्मा निज --- परिवार श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति भद्रं ।

(605)

ॐ संवत १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य सोनी मनजी भार्या मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारापितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरीश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक ।

(606)

ॐ ॥ संवत १२३९ द्विः वैशाख सुदि ६ शुक्रे पल्यपद्र वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे भ० श्री देवाचार्य सत्क श्री नवत्सार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सलखणायाः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री वुद्धि सागराचार्य्यैः ॥

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूणदे पुत्र रेडा भार्या रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थे श्री आदिनाथ विंबं का० प्रति० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा भ्रो मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंबं पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य॥

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ठ माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकीर्त्ति—धर्मनाथ विंबं प्र० वाई तपदे जा० काल्हा --।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुकंट शाखायां ठ्यै० तोला भा० चेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तील्हादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा० विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थे श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

(612)

सं० १८९३ ना मा। सु० १० बु०। श्री जोधपूर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां संघ माणक चंद तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापोतं।

(613)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर।

श्री सिद्धचक्रो लिखतो मया वै। भट्टारकीयेन सुयंत्रराजः॥ श्री सुन्दराणां किल शिष्यकेन। स्वरूपचंद्रेण सदऽर्थ सिद्धैयः॥ १॥ श्री मल्लागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते। अब्दे वैशाखमासस्य तृतियायां सिते दले॥ २॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर।

(614)

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० व्य० काला भा० काल्हणदे सु०--पद्म प्रभु बिं० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र०।

(615)

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहर वंशालंकारेण सा० चड़सिंह पुत्रेण भ्रातृ सा० सलकेन सखणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः श्री खरतर गच्छेशः॥

(616)

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री तावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जस-मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्ति का चार्य स० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उके० पदे दोसो गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा० डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ विंबं कारितं श्रेयसे प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः श्री पद्म प्रभ विंवं ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडतप श्री धन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

(619)

सं० १४९३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वील्हणदे पुत्र कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंवं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे डोसी-धर्माकस्य पुण्यार्थं दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः श्री श्रेयांस विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(621)

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० षीमसी सा-पाभ्यां भा० मदीखतजता मालादि कुटुंवयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

(622)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरौ उपकेश वंशे जारंउडा गोत्रे सा० षिमपालात्मज सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि विं० का० प्र० तपा भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

(623)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आहतणा (आईचणा ?) गोत्रे सा० धना भा० रूपी पु० मोकल भा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकल श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं का० उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

(624)

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दशरथ भा० सामिनी सुत माना केन भा० राना भ्रातृसालू भा० सोढी कुटुंवयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः नलुरीया गोत्रः ॥

(625)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पु० जासो-भा० जयसिरि पु० सायर भा० मेहिणि नाम्न्या पु० गुणा पूना, सहज सहितया

स्वपुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० उपकेश ग० कुक्कुदाचार्य स० श्री देव गुप्त सूरिभिः।

(626)

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरौ उ० विदाणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु० रामा० रूपा स० पि० श्री कुंथनाथ विंवं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः श्रेयात् ॥

दिनाजपूर।

श्री मूलनायकजीके विंवं पर।

(627)

--- सु० ४ श्री चन्द्र प्रभ जिन विंवं संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपूरे।

धातुके मूर्त्तियों पर।

(628)

संवत १४४७ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे श्री अंचल गच्छे श्री मेरुतुंग सूरीणामुपदेशेन शानापति ज्ञातीय मारू ठ० हरिपाल पत्नि सूहव सुत मा० देपालेन श्री महावीर विंवं कारितं। प्रतिष्ठितंच श्री सूरिभिः ॥

(629)

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्रे० अर्जन भा० मंदोअरि पितृ मातृ श्रेयसे सुत गोईदेन भा० माकू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंथनाथ

बिंबं कारितं पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्रीजयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥ छ ॥

(630)

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० भरमा भार्या भरमादे पुत्र आसा भार्या वईरामति नाम्न्या स्वभर्त्त पुण्यार्थं आत्म श्रेयोर्थं श्री जीवित स्वामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मसागर सूरिभिः ।

(631)

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूलसंघे भ० श्री सुमति कीर्त्ति गुरूपदेशात् का० जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास हरिदास अनंतनाथ नित्यं प्रणमति ।

(632)

सं० १८४४ रा मिती अषाढ़ सुदी १३ श्री नेमनाथजी विं० ॥ छ ॥

दादाजी के चरण पर ।

(633)

सं० १८९८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथौ बुधवारे । भ । श्रीजिनचद्र सूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ भ । श्री जिनकुशल सूरिजो पादुका ॥ भ । श्री जिनदत्त सूरिजीरा पादुका ।

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रखभदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्रीऋषभदेवकी मूर्त्ति स्यामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहबोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर।

(635)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्रे० पोमा भा० पोमी सु० जावलकेन भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेन स्वपितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर।

(636)

श्री कायास्वास वासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि-- विक्रमादित्य संवत १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ वुध दिने चादी नाधुराल---।

(637)

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत १५७२ वैशाष सुदि ५ वार सोमवार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनबाई चोजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभनाथ प्रणम्य कडीआ फोईआ भार्या भरमी तस्या पवेई सा० भार्या हासलदे तस्य पगकारादेव रारगाय भ्रात वेणीदास भार्या लास्टी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल श्री काष्ठा संघ----श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुष श्री तां-री कुल — —।

(638)

संवत १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे बृहत्खरतर गच्छे श्री जिन भक्ति सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः।-- श्री राम विजयादी प्रमुखे सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी --।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर।

(639)

संवत १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ --।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर।

(640)

संवत १७११ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे श्री कुं --।

(641)

संवत १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ भृगुवासरे श्री मूलसंघ काष्ठासंघ भट्टारक श्री रामसेनोन्वये तदाम्नाये भ० श्री विश्व भूषण भ० यशः कीर्त्ति भ० श्री त्रिभुवन कीर्त्ति --।

(642)

संवत १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री श्री कुंदकुंदाचार्यन्वये भट्टारक श्री सकल कीर्त्ति स्तदन्तर भट्टारक श्री दामकीर्त्ति --।

(643)

संवत १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे भट्टारक श्री विजय रत्न केश्वर तपागच्छे काष्ठासंघे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र जी तस्यभार्या बाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री लालु जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंबं स्थापितं।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्त्या पद्मावत्याः पदाम्बुजं। प्रशस्तिर्लिख्यते पुण्या कवि-केशर कीर्त्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः। वामांग मानस विकासन राजहंसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति। धुलेव मंडनकरा करूणा समुद्रः ॥ २ ॥ श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये। प्राज्यो गुणै र्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदन्त स्थिर-तामुपैतु। संपश्यतां सर्व सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा। सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद महा साधः। तपे गच्छमें तप जप तणो उयत उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवी परगट कीधः। खेमतणो मन षा तिसु लाहो भवनो लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद। उच्छव किधा अति घणा आणिमन आनन्द ॥६॥ दिल सुष गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास। सारे ही प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त। सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंदहः। संघ मनुष्य सिरदार सहस किरण सुषके कंदहः ॥ वल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म धुरंधरः। मुलचंद गुण मूलहीर धाया उर गुणहरः ॥ सकल संघ सानिध करः सुमतिचंद महासाधः। पास सदन कियो प्रगट

निश्चल रहो निरवाधः ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद् कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविल लिखावे संघेन सत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीधो गुणहेर । रच्योविंव जिनराजको करुणा वंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या । शशीव सुख राज वर्षे । माधव मासे वलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवाद्यः । जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंवकं ॥ १३ ॥

श्री संवत १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छीय सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

(645)

स्वस्ति श्री संवत १८७३ वर्षे शाके १७३९ वर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-मासे शुभे शुक्लपक्षे चतुर्दशि तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक साह श्री शंभूदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक सिवलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री श्री विजय जिनेंद्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री धुलेवानगरे ॥ भंडारी दुर्लचंद आगुंछइं ॥

दादाजी के चरण पर ।

(646)

संवत १९१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री धुलेवानगरे श्री क्षेम कीर्त्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजी गणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद्र

गणि शिष्य----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सद्गुरु चरण कमलानि कारितानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानि च वर्त्तमान श्री वृहत्खरतर गच्छ भट्टारकाज्ञयाच श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिन कुशल सूरिणां चरणन्यासः।

पालिताना।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठियावाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है।

मोती सुखियाजीका मन्दिर।

(647)

संवत १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा भा० सेगू सुत परवतेन भा० मांई कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्रेयांस नाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥ गणवाढा वास्तव्यः।

(648)

संवत १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधो गोत्रे अंविका भक्त। सा० छाजू सुत सेंघा पुत्र सूरा भा० मेथाई सु० साऊंया भा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

(649)

संवत १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० चाहिता भा० लाली पु० व्य० नारद भार्या नारिग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुख

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थं । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठित तपागच्छे श्री सुमतिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छ नायक श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ श्री ॥

सिद्धचक्र पट्ट पर।

(650)

संवत १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय म० वछाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः।

सेठ नरसी केशवजीका मन्दिर।

(651)

संवत १६१४ वर्षे वैशाष सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी देवा भार्या देमति सुत दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुंधजी नाम्न्या पितु श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ विंवं कारापितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य पं० धर्मविजय गणिना प्रतिष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

(652)

संवत १९२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ शुदि ७ तिथौ गुरुवासरे श्रीमदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रतन सागर सूरिश्वराणामुपदेशात् श्री कच्छदेसे कोठारा नगरे ओशवंशे लघुशाषायां गांधिमोती गोत्रे सा० नायकमणजी सा० नाकनणसीं तस भार्या हीरबाई तत्सुत सेठ केशवजी तस भार्या पावी बाई (तत्पुत्र नरसी भाई नाना मना) पंचतीर्थी जिनविंवं भरापितं (अंजन शलाका करापितं) अठास गण ।

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय व्य० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । व्य० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पते सात्म श्रेयोर्थं आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १९२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलिनपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्भार्या पूरबाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं सकल संघेन प्रतिष्ठितं ।

(655)

सं० १९२१ वर्षेमाघ सुदि७गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलिन पुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्भार्या देमतबाई तत्पुत्र सा० अभयचंदेन पुन्यार्थं शांतिनाथ विंबं कारितं सकल संघेन प्रतिष्ठितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

(656)

संवत १६९३ वर्षे वईशाष सुदि ६ गिरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या बाई अजाई

सुत सोनी वमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई थोत्ति एतेन श्री विजयनाथस्य विंवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः।

श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

(657)

सं० १३८३ वैसाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कील्हण देवि श्रेयसे सुत कीकमेन श्री महावीर विंवं कारितं प्रति०

(658)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं। आसो सुतेन देवाकेन स्वबांधव सहजा हरिचन्द पत्ति चेता-श्रेयो निमित्तं श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्र० श्री हेम हंस सूरिभिः।

(659)

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडीआ सा० साईआ भार्या सिरीआदे पुत्र सा० भोला सा सुश्रावकेण भार्या कन्हाई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पच राज भ्रातृव्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन श्री विधिपक्ष गच्छपति श्री जयकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं श्री संघेन॥ आचन्द्रार्कं विजयतां॥

(660)

सं० १५१५ वर्षे माह शुदि ५ शनौ प्राग्वाट ज्ञा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया हांसलदे सु० मूलू भा० अरघू सु० भोजा हासा राजा भा० भकू सु० हीरामाणिक हरदास

युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ शनौ प्रा० सा० काला भा० माल्हणदे पुत्र स० अर्जुनेन भा० देऊ भ्रातृ सं० भीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु पूज्य विंवं का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपट्टे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

संवत १५२८ वर्षे वैशाष वदि ११ रवौ श्री उकेश वंशे सा० चाचा भा० मायरि सुत राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ।

(663)

सं० १५२९ वर्षे फा० वदि ३ सोमे स० वाछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवदे पुत्र वसुपालादि युतेन भा० सपूरो श्रेयोर्थं श्री मुनि सुव्रतनाथ विंवं कारितं प्र० तपा गच्छेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(664)

संवत १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्रे० देवा भा० पाचू पु० श्रे० हापा भा० पुहती पु० श्रे० महिराज सुश्रावकेण भा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री अंचल गच्छेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संघेन ।

(665)

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशर सूरिणामुपदेशेन उएशवंशे स० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्या युतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं सु---।

(666)

संवत १५३९ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्रीश्री वंशे ॥ श्रे० गुणीया भार्या तेजू पुत्र अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य बिंवं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(667)

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरीणां पट्टे श्रीश्री कक्कसूरिभिः कालू-र ग्रामे ॥

(668)

सं० १५८३ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति मं० वानर भा० रहो पु० मं० नाकर मं० भाजो मं० ना० भा० हर्षादे पु० पघु वनु भोजा भार्या भवलादे एवं कुटुंब सहितैं स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ बिं० कारितं प्रति० द्विवंदणीक ग० भ० श्री देव गुप्त सूरिभिः। भारठा ग्रामे।

(669)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृद्ध सा० जसमाल सुत सा० राजपालेन भा० वाह पूराई प्रमुख कुटुंब युतेन श्री सुमतिनाथ बिंवं का० प्र० तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः।

(670)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सा० राजपाल तद्भार्या बा० पूराई सुत सा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव बिंवं प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः।

यति कर्म्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर।

(671)

संवत १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्रे० वना भार्या वनादे सुत श्रे० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांढादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ बिंवं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनन्न सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः।

(672)

संवत १५५९ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ पीहरेचा गोत्रे सा-गोवल पु० सा--भा० धारू पु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड। भा० चड---पितुः श्रे० श्री मुनि सुव्रत बि० का० प्र० श्री उपकेश-श्री कक्क सूरिभिः॥ श्री कुक्कुदाचार्य संताने॥

गांव मन्दिर बड़ा।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीमाल वंशे व्य० जीदा १ पुत्र व्य० जेसा-णंद २ पु० व्य० आसपाल ३ पु० व्य० अभयपाल ४ पु० व्य० वांका ५ पु० व्य० श्री वाउढि ६ पु० व्य० अणंत ७ पु० व्य० सरजा ८ पु० व्य० धींधा ९ पु० व्य० राजा १० पु० व्य० देपाल ११

पु० वसनाना १२ पु० व्य० राम १३ पुत्र व्य० भीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर सुश्रावकेण भा० गउरी पु० भूंभव पौत्र लाडण वरदे भात समधरीसायर भ्रात व्यसगरा करणसी– सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री भवंतु ॥

(674)

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञातीय दो० मोटा भा० रत्नु पु० वीरा भा० वानू पु० लषा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन श्री शांतिनाथ विंवं स्वश्रेयोर्थं कारितं श्री संघ प्रतिष्ठितं ॥

(675)

सं० १५४८ वर्षे कातिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय धामी गोवल भा० आपू सु० वावा भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ स्वामि वि० का० प्र० चैत्र गच्छे श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

(676)

सं० १५४९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह भावड भा० भरमादे आत्मश्रेयोर्थं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उसवाल गच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(677)

संवत १५७२ वर्षे वैशाष सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत दो० भरणा भार्या कूयटि सुत दोसी वहु भार्या वल्हादे तेन आत्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

संभवनाथस्य चतुर्विंशति पट्टः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्रीगुणरत्न सूरि पट्टे आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

(678)

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवौ उ० टप गोत्रे---क सा० नरपाल भा० रंगाई पु० महिराज सोहराज धनराज श्री महिराज भार्या धनादे पु० धनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः।

(679)

सं० १९२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंबं प्र० सा० जीवा अषाजी ----।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर।

(680)

संवत १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्रीविद्यानंदि गुरूपदेशात् ब्रह्मपद्माकर कारापिता।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकोंमें पञ्चतीर्थीयों पर।

साकरचंद प्रेमचन्द टोंक।

(681)

सं० १५०८ वर्षे मार्गशीर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड़ गोत्रे सा० भूना भार्या मोल्ही एतयोः पुत्रेण भा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रभ विंबं का० प्र० श्री वृहद्ग गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक।

(682)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुधे आसापद आ (?) श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मेघा सुत सा० कर्म्मण भार्या कर्म्मादे पुत्र व्य० समधर भार्या वईजू पुत्र व्य० सहिता व्य० सहिता व्य० सिहदत्त व्य० श्री पति आत्म श्रेयसे सा० सहिसाकेन भार्या अमरादे ---- युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितश्च वृद्धतपा पक्षे श्री श्री उदय सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रेमचन्द मोदी टोंक।

(683)

सं० १३६८ वर्षे श्रे० जगधर भार्या दमल पुत्र सीकतेन भार्या सहजल सहितेन- श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्म्मदेव सूरिभिः।

(684)

सं० १३७८ प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० वयजलदेव पुत्रिकाया वाएल -- मलधारि श्री पद्मदेव सूरि --- श्री तिलक सूरिभिः।

---

(685)

सं० १८८१ वर्षे चैत्र सुदि ६ वार रवि दिने श्री वृद्धपोसल गच्छे — श्री माली वृद्ध शाखायां सा० माणकचंद कुवेरसा -- भार्या वाई डाहीकेन श्रीसुमतिनाथजी बिंबं भरापितः श्री आणंद सोम सूरिजी प्रतिष्ठितं सुख श्रेयस्तु।

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ ---विंबं का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्थं श्री महावीर विंबं का० प्र०---- श्री सालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्र सूरिभिः ।

(688)

सं० १३८७ ---श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ धणसीह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत सादाकेन श्री अजितनाथ विंबं पंचतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ॥ छ ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० --- श्रेयसे सुत भादाकेन श्री आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरीणामुपदेशेन ।

(691)

सं० १४८६ वर्षे --श्रीमाल -- आदिनाथ विंबं प्र० श्री नरसिंह सूरीणामुपदेशेन ।

(692)

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ९ रवौ उसवाल ज्ञा० म० पूना भा० मेलादे सु० वीजल भा० डाही तयो श्रेयसे भ्रातृ आसुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विंवं का० पूर्णिमापक्षे भीम पल्लीय भट्टा० श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेसेन प्रतिष्ठितं ॥

(693)

सं १५१९ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा भा० नाऊ सुत जूठाकेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विंवं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सूरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ वलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

(694)

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्रि रा० पुजा का ---- श्री नमिनाथ विंवं श्री विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(695)

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुमतिनाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रभ सूरिभिः पिप्पलगच्छे ।

सेठ वाल्हा भाई टोंक ।

(696)

संवत १५२५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवा तत्पदे भ० श्री सकल कीर्त्ति देवा तत्पदे

भ० श्री विमलेंद्र कीर्त्ति गुरूपदेशात् श्री शांतिनाथ हूंवड़ ज्ञातीय सा० नाडू भा० ऊंमल सु० सा० काह्ला भा० सर्मात सु० लषराज भा० अजो भा० जेसंग भा० जसमादे भा० गांगेज भा० पदमा सु० श्री राजसषवोर नित्य प्रणमंति श्रीः।

(697)

संवत १६२८ वर्षे वै० शु० १० बुधे श्रीमालज्ञातीय महषेता भा० हासी सुत मूलजी भा० अहिवदे केन श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक।

(698)

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० कापा भार्या हासलदे पुत्र झाझणेन भार्या नागलदे पुत्र मुकुंद नारद भ्रातृ घना श्रेयसे जीवादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः।

मूल टोंक।*

(699)

सं० १९९३ ना मिती ज्येष्ठ वदो १२ गुरुवासरे श्रीमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल जातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खड्ग सिंहजी तत्पुत्र सा उत्तम चंदजी तत् भार्या वीवी मया कुंवर श्री सिद्धाचलोपरि श्री ऋषभदेवजी परी प्राशाद मध्ये

---

* श्री आदिश्वर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्त्ताकी वृद्ध पितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है। इस महान तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पश्चात प्रकाशित होगा।

आलोषे प्रतिमा बिंबि मया कुंवर स्वहस्ते स्थापितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत खरतर गच्छे भ० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि जी विजै राज्ये पं० देवदत्त जी तत् शि० पं० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

रैनपूर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थीमें रैनपूर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार तेमञ्जिला अगणित स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दीपक नामक विशाल मंदिरके कारण जगत्प्रसिद्ध है। "आबुकी कोरणी रैनपूराकी मांडनी" देखने ही योग्य है।

मंदिरकी प्रशस्ति ।

(700)

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री वप्प १ श्री गुहिल २ भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्त्तृभट ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञी सुत युतस्व सुवर्णतुला तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्ति-वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ वैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २० चोड़सिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६ मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र वप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ भ्रातृ श्री अरिसिंह श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाह्वयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादि दान पुण्य परोपकारादि सारगुण सुरद्रुम विश्राम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

नस्य। विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभिमानस्य। निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य। म्लेच्छ महीपाल व्याल चक्रवाल विदलन विहंगमेंद्रस्य। प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश भाल माला लालित पादारविंदस्य। अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य। कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल क्ष्माप श्वापद वृंदस्य। प्रबल पराक्रमाकांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्वादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया भरण भासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण। अजाहरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैन विहार जीर्णोद्धार पद स्थापना विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्य क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस स० सागर (मांगण) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन ज्येष्ठ भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारलदे पुत्र जाज्ञा जावडानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशलस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि श्रीदेवेंद्र सूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः॥ कृतमिदंच सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख विहारः आचंद्रार्कं नंदतात्॥ शुभं भवतु॥

पाषाण और धातुओंके मूर्त्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः ---छ स्थाने देव सरण सुत श्रीशके ---श्री गुह -- कारिता।

(702)

संवत १२९० वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे श्रे० वढपाल श्रे० जगदेवाभ्यां श्रेयोर्थं पुत्र सामदेवेन भ्रातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीयैः श्री शांति प्रभ सूरिभिः।

(703)

संवत १४९९ वर्षे सा० साजण भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल देव्यादि कुटुम्ब युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरिभिः।

(704)

संवत १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या तीचणि युतेन श्री क सुमतिनाथ विंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः।

(705)

शत्रुंजयके नक्सेके निचे।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा सं० केल्हा भा० हेमादे पुत्र स० तोल्हा षांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव प्रासादे --- धन्त -- महातीर्थ शत्रुंजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थं नागानामुत्तमा नगः। क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं ---मं ॥ १ श्री रुसुपूजकस्य ---।

(J06)

संवत १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उसवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० वीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोतादे प्रमुख युतेन माता विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश शृंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र० वृ० तपा श्री उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे चरण बिहारे॥ श्री॥

सहस्रकूट पर ।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु०जगमाल भा० श्री वच्छ करावित (उत्तर तर्फ) वा० गांगादे नागरदास वा० साडापति श्री मूजा कारापिता श्रा० मीत्तवि० रामा० भा० कम ---।

(709)

संवत १५५२ व० मिगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० धणपति भा० चांपाई भाई मं० हरषा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वश सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उसवाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः ।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० आसदे भार्या सपांह सुत सा० साजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोगराजेन भ्रातृ सभागा स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० अखा ---सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

(712)

संवत १५८-- वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साघ पुत्र सा० उमला भ्रातृ पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर ।

(713)

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वच्युंसमापुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा० नायकाभ्यां भ्रावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोल्या मेघनादाभिधो मंडपः कारितः स्व श्रेयोर्थं ॥ सूत्रधार समल मंडप रिवनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत १६४७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद् गुरु विरुद धारक भट्टारिक श्री श्री श्री ५ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

खेता नायकेन वद्धों पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्सत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात्। संवत १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे भट्टारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्टित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी चेला रतनसी

(716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन राणकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने ---।

(717)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य भट्टारक श्री श्री कक्क सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफलो कृता श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्री रस्तु ॥

(718)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनेश्वराणां चरणेषु। पं० शिवसुंदरः समागतः।

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

(719)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीनृ—विक्रमादित्य समयात्-- १६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साह श्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बह श्री त्रिभवणदे २ बहू श्री असढवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

(720)

संवत १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

(721)

-- संवत १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार ---।

(722)

संवत १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार ---राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये --।

(723)

संवत १६६६ भाद्रपद शुक्र पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-नाथ प्रासाद भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री सिंह सुरि राज्ये श्री संघेन लिखितं।

(724)

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ़ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्र पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे भट्टारिक श्री यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसीजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना वरजांगेन कृतं ॥ भ्रात्रीज सामा मेघा कला पुत्र कल्याण ॥ भानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा शुभं भवतु ---

(725)

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आसाढ़ शुक्र ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री तेजसिंहजी द्राज्ये श्रीतपागच्छे भट्टारक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये।

(726)

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च। संवत १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्त्तमान द्वितीय आसाढ़ सुदि २ दिने रविवारे रावल श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पल्लिकीय

गच्छे भट्टारक श्री यशोदेव सूरिजी विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु। उपाध्याय श्री कनक शेखर शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजहड़ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र धारः ऊजल भातृ झाझा घडिता भवन कथरा- -।

छत्रीमें।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां बुजाग्रोदया। धन्याचार्यपदावदात-वदिताः श्री कीर्त्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रश्मणि विभा प्रोच्छासितां हि द्वया। राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखवालान्वया ॥ - - - - - -

---

बालोतरा।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्त्तियों पर।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भ्रात वाहड़ वीरदे श्रेयार्थमकारि प्र० देव सूरिभिः।

(729)

सं० १४०१ वैशाष ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सघ० कुलियात्मजा सा० झाम पुत्रेण स - - पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंवं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदिणाग गोत्रे सा० कालू पु० वील्ला भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंवं कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डीडा पुत्र सा० नाथ - - - सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंवं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः।

(732)

सं० १५०९ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - पुत्र हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंवं कारितं। श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः।

(733)

सं० १५०९ वर्षे - - उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - श्री सुमतिनाथ विंवं कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष बदि ९ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञातीय श्री दूगड़ गोत्रे मं० पनरपास पु० वछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाभ्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंथु-नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पट्टे भ० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैषाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने सा० कुता भार्या लषमादे सा० डाहृत्थ श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः॥

भावहर्ष गच्छके उपासरेमें केशरियानाथजी का देरासर।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०९—वैशाख वदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र बुद्दाकेन भा० - - कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री -।

(738)

सं० १७१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे आपणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - -।

वाड़मेड़ ।

गोपोंका उपासरा ।

धातुके मूर्त्तियों पर ।

(739)

स० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० साल्हा भा० ल्होसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा० गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(740)

सं० १५८० वर्षे वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० सषो सु० सं० हेमा भा० हमीरदे मं० भषाकेन भा० वमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवं श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितंच विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

(741)

सं० १५१२ वर्षे वैशाष सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सहसा भा० झोली पुत्र जिन-दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं का० आगम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(742)

सं० १५१४ मा-शु० - प्राग्वाट ज्ञा० रूल्हाकेन भा० वजू सुत सा० वीरा माणिक

बछादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ विंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्न शेखर सूरिभिः।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका।

सभा मण्डप।

(743)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः॥ संवत १८५९ वर्षे माह सुदि ५ शुक्र पक्ष प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउल श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका नगर - - - राज्ये कृपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग प्रधान श्री पता श्री धर्म्म मूर्त्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः।

पञ्च तीर्थियों पर।

(744)

सं० १९०३ माह बदि ५ शुक्रे श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र फणा पार्श्व-नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त मीणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थं कारापितं तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च।

दुसरा मंदिर।

(775)

संवत १५४० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० वस्ता पितामही कोल्हणदे सुत पितृ सं० पचा मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

घरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साधु रत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंडलि वास्तव्यः।

(746)

सं० १५२० श्री मूल संघेन भट्टारक श्री विजय कीर्त्ति श्रे०

सभा मंडप।

(747)

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुद १५ रा त्र वासरे खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन रत्न - - पुष्य नक्षत्रैः राऊत श्री उदयसिंहजी विसरि विजय राज्ये जयराज्ये॥ श्री सुमतिनाथ रउ नवत्रु कीउ श्री संघ करावउ सूत्रधार पीसा पुत्र नता नवबु कीउ। सूत्रधार नारयण नट संघ धन।

(748)

सं० १९२८ वर्षे भद्रपद कृष्णापक्ष ७ बुध - - वृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्रीमगत सुर रावलजी श्रा वाकीदासजी - -। जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतनाथजी-शिणगार कीधी - -।

(749)

॥ ॐ ॥ संवत १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री वाहडमेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री करण मं० वीरामेल वेलाउल भा० मिगन प्रमुख बोधं अक्षराणि प्रयच्छति यथा। श्री आदिनाथ मध्ये संविष्ठमान श्री विघ्नमर्दन

क्षेत्रपाल श्रीचउंड राज देवयो उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभया-दपि उद्धं सार्थं प्रति द्वयो देवयोः पाइला पदे प्रियदश विशोप का० अर्द्धोर्द्धन ग्रहीत-व्याः । असौ लागो महाजनेन संमतः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरा-दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

मेडता

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन नगर है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डागियोंका मुहल्ला।

(750)

संवत १६७७ वर्षे ॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाया तिथौ शनि रोहिणी योगे श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पासाणी गोत्रीय सं भोजा भार्या भोजलदे पुत्रेण संघपति चेतसीकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेय से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर वद्ध श्री ऋषभदेव विहार मंडन सपरिकरं श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठापितंच प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच तपागच्छे श्रीमदकब्बर सुरत्राण प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक भट्टारक श्री हीर विजय सूरि राज पट्टोदय पर्वत सहस्र किरण यमान युग प्रधान भट्टारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पट्ट प्रभावक श्री श्री मद्द जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महातपा बिरुदधारक श्री महावीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित श्री सुधर्म्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

सर्व धातुकी मूर्त्तियों पर।

(751)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरौ भंडारी गोत्रे सा० वील्हा संताने मं० मायर भार्या सुहदे पुत्र स० अस्का भार्या लषमादे भातृ सांवायने श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं श्रेयसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रीईश्वर सूरि पट्टे श्री शांति सूरिभिः।

तपगच्छका उपासरा।

(752)

सं० १६५३ वर्षे चै० शु० ४ श्री कुंथनाथ विंबं गांदि गोत्रे श्री—स० सुरताण भा० सवीरदे पुत्र सादूल - - - श्री तपागच्छे श्री विजयसेन सूरि - - पं० विनय सुंदर गणि प्रतिष्ठितं।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

(753)

सं० १५२८ वर्षे फा० वदि १३ श्री माली श्रे० समरा भा० धर्मिणि पु० श्रे० मूलू भा० श्र० काका भा० काउं पुत्री लापू नाम्न्या पु० सांगा भा० बाधी २० कुटुम्ब युतया श्री शांति विंबं का० तपा श्री लक्ष्मी सुन्दर सूरि - - -।

(754)

सं० १६७७ वर्षे अक्षय तृतीया दिने शनि रोहिणी योगे मेढता नगर वास्तव्य सा०

लाषा भा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-सेन सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ बदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसधर भार्या गागी सुत मदन दमा जिनदास गीवा पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ स० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर।

(757)

सं० १४५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे ऊ० गुगलिया गोत्रे सा० चीरा प० सोहाकेन श्री आदिनाथ बिंबं स्व श्रेयसार्थे संडर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शांति सूरिभिः।

(758)

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ऊकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे पुत्र लषमा भार्या लाखण दे पुत्र दील्हा भार्या चील्हणदे पुत्र चडसी सकुटुम्बेन श्री

वासपूज्य विंबं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति सूरिभिः।

(759)

सं० १५१५ वर्षे आषाढ़ बदि १ दिने श्री उकेश वंशे घुल्ल गोत्रे सा० सादूंल जाया सुहवादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः।

(760)

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० धन्ना पुत्र सा० हिमपाल पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंबं कारित प्रतिष्ठित तपागच्छ भट्टारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः।

(761)

सं० १५४७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० थांईया केन भा० सलषू सु० दो० दासा संना कर्णसी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाडा दाया प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल त्रिंबं कारितं श्री मघूकरा खरतर---।

(762)

सं० १५५६ वर्षे चैत्र सु० ७ सोम प्राग्वाट ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलषणदे पुत्र लोला सा० पीमा भा० चंतलदे --- सकुटुम्बयुतेन आत्म पु० श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंबं का० अंचल गच्छे श्री सिद्धांश सागर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्द्धन गणीनामुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंघेन ---।

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा० भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थं श्री श्री श्री श्रेयांस विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सु० २ सोमवारे पट यह गोत्रे सा० सा-र---श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे भट० पुण्यकीर्त्ति सूरि पट्टे भट्टा० श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे ऊकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवास श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तात्हण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन श्री श्रेयांस विंबं कारित--।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५--पार्श्वनाथ विंबं श्री विजय जिनेन्द्र सूरि--।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर।

(767)

सं० १५०७ वर्षे फा० ब० ३ बुधे। ओश वंशे वहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० वेता

भा० षेतलदे पु० व० हियति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

(768)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्र श्री माल ज्ञातीय पितामह वीरा पितामही वीरादे सुत पितृ डाहा मातृ जासू श्रेयोर्थं सुत राजा भोज ठाकुर सी एतै श्री विमलनाथ मुख्य चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधु रत्न सूरि पट्टे श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संघेन आंवरणि वास्तव्यः ।

(769)

संवत १५७९ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थ वासी ऊकेश ज्ञातीय सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जइता भार्या फते पुत्र सा० सीहा सहिजा भा० गुरी (?) पुत्र सा० पडलिक भा० कमला पुत्र सा०जीराकेन भा० पुनी पितृव्य सा० सोमा पापा खजा कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपागच्छे श्री साम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पट्टे श्री हेम बिमल सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हंस गणि प्र० परिवार परिवृत्तौ ।

(770)

संवत १६११ वर्षे वृहत खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राज्ये श्री माल ज्ञातीय पापड़ गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र उणगढमल तद्भार्या नयणी तत्पुत्र जीवराजेन श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं -- धर्म सुंदर गणिना प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

(771)

सं० १६७१ ज्येष्ट वदि ५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भार्या कउडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री अर्बुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सद्धर्म कर्म्म करण सम्प्राप्त संघपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारितं शत्रुंजयाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारित भवर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर बिंबं कारितं पितामह वचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोझा रतना समुख पूर्वज नाम्ना प्रतिष्ठितं श्री वृहत्खरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रववारक प्रतिबोधित साहि श्रीमदकबर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार श्री भाणवट नगर श्री शांतिनाथादि बिंबं प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री पार्श्व प्रतिहार सकल भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटोपमान प्रधानैः ।

(772)

सं० १७०० व० द्वि० चै० सित ८ गुरौ गोलकुंडा वा० सा० मेघा भा० मीहणदे सुत सा० नानजी नाम्ना श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरु भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार पतिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री विजयदेव सूरिभिः ।

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

(773)

सं० १६६९ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे म्हाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह विजय राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय लोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे तत्पुत्र स० लाषाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंब कारित प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीबृहत्खरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि तत्पट्टोदयाद्रि मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

(774)

सं० १४७१ वर्षे माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे वापणा गोत्रे सा० सोहड सु० दाद भा० -- ण पितृ -- निमित्तं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० उएसगच्छे श्री देव गुप्त सूरभिः ।

(775)

सं० १५१० जैष्ठ सु० ३ दिने प्राग्वाट पोपलिया वासिया तीरा भा० वीरी पुत्र सा० डुंगर भ्रातृ सा० खेतसि सहसा समरंदे घारकमी भार्या जासलि जत भाई कर्मादि कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत (?) विंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(776)

सं० १५२९ वर्षे माघ वदि ५ रवौ ऊकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा० भरमादे पु० – – – दि कुटुंब युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री प्रज्ञ शेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानन्द सूरिभिः।

(777)

सं० १५३२ जैष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर सूरि पट्टालंकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः॥ श्री॥

(778)

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काष्टा – – – भ० श्री सोम कीर्त्ति आ० श्री बिमलसेन नारसिंह ज्ञातीय बोरठेच गोत्रे सा० पेईया भा० खेई पुत्र सा० भीमा जा० प्रटी श्री आदि – – कारापितं नित्यं प्रणमति।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र – सोमकेन भा० गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाप मासे सित ३ दिने रविवारे ऊकेश वंशे लोढा गोत्र संघवी टाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

भगिनी सुश्राविका वीरा नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री चतुर्विंशति जिन बिंबं प्रतिष्ठित श्री वृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तत्पट्टे श्री जिनहंस सूरि तत्पट्टालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभि सकल संघेन पूज्यमान आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर ।

(781)

संवत १६८४ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सघ हरषा भा० मीरा दे तत् पु० संघवो जसवंत भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

महावीरजी का मंदिर ।

(782)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ वुधे श्री शांतिनाथ विबं गादहीआ गोत्रे सं० सुरताण भा० हर्षमदे पु० स० हांसा भा० लाडमदे पु० पदमसी कारितं प्रतिष्ठतं श्री तपागच्छे श्री हीर विजय सूरि पट्टे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय सुन्दर गणिः प्रणमति ॥ श्री रस्तु ॥

(783)

॥ ॐ ॥ संवत १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्य श्री मेडता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे बाई पूरा नाम्न्या पु० सक-

मणादि सपरिवार – श्री सुमतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेड़ता वास्तव्य ऊ० ज्ञा० समदड़िआ गोत्रीय सा० माना भा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात भा० केसरदे पुत्र जइतसी लषमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० तपा गच्छे भट्टारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार भ० श्री विजय देव सूरि सिंहैः।

(715)

सं० १६७७ ज्येष्ट बदि ५ गुरौ श्री ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० कचरा भार्या कउडिमदे चतुरगदे पुत्र स० अमरसी भा० अमरादे पुत्ररत्न स० अमी-पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूरवदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ बि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छा-धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पट्ट प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षाषाढीया ष्टाहिकादि षामोसिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री शत्रुंजयादि तीर्थकर मोचकैः। सर्व्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा० हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः।

(787)

संवत १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधरचोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० माल्हणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा० कउडिमदे पु० अमरसी---भा० अमरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पट्ट नंदि महोत्सव विविध धर्म्म कर्त्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचन्द स्वभार्या अजाइबदे पु० ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण श्रेयोर्थं स्वयं कारित मम्र्माणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्रति- ष्ठितं श्री महावीरदेव --- परंपरायत श्री वृहत्खरतर गच्छाधिप श्रीजिन भद्र सूरि संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री मदकब्बर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र सूरि विहित कश्मीर काश्मीर विहार वार सिंदूर गज्र्जणा विविध देशामारि प्रवर्त्तक जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पट्टोत्तंस लब्ध श्री अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रदर्शित भाण वड्डमध्य प्रतिष्ठित श्री पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहित्थ वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि दिन करैः ॥ आचार्य्य श्री जिन सागर सूरि प्रभृति यति राजैः ॥ सुत्रधार सुजा । प्रतिष्ठितं भट्टारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरंदरैः श्री मेड़ता नगर मध्ये ।

ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है। यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्त्ति चिन्ह विद्यमान है। शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके अनशनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है।

मंदिर प्रशस्ति ।

(788)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्वविस्सर्वं दर्शी। ससुर मनुज राजामीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्यः स्मर्यते योगिवर्य्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दृग्दृष्ट्वा विष्टप-मुद्भवद्घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादौ सहस्त्रां शुवत्प्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां भद्रं स नाभेः सुतः ॥ २ ॥ यो गार्वाण सर्व जिद् भिहितां शक्ति मश्रद्दधानः क्रूरः क्रीड़ा चिकीर्ष्या कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया यस्याहतो सौ मूर्ति मित इयता नामरत्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं वितरतु भगवान्वस्स सिद्धार्थ सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वन्निर्वासालय वन समयोरस्माक माहं - - - - नस्यावसाने - - - उत महती काचिदन्याय देष। इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति भयतः सस्व जेशच्य नीचैर्यत्पादांगुष्टकोट्याकनक नगपतौ प्रेरिते व्यांत्सर्वारः ॥ ४ ॥ श्री मानासीत्प्रभुरिह भुवि - - - यैक वीर स्त्रैलोक्येयं प्रकट महिमा राम नामास्यैन चक्रे

शाक्रं दृढतरमुरो निर्द्दयालिङ्गनेषु स्वप्नेयस्या दशमुख वधोत्पादित स्वास्थ्य वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या कार्षस्किल प्रेम्णालक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवत् प्रतीहार वंशो-राम समुद्भवः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सबशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत्कीर्त्तिर्य्यस्य तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नस्मिन्मामि सुखेन विश्व विवरे नस्वेव तस्माद्वहिर्निर्गन्तुं दिग्गिभेन्द्र दन्त मुसल व्याजाद् कार्ष्यीन्मनुः ॥ ७॥ समुदा समुदायेन महता चमूः पुरा पराजिता येन---समदा॥८॥ --समदारण तेनावनीशेन कृता भिरर्क्षैः सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः। समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मूकेशनामास्ति पुरं गरीयः॥९॥ ---सक्रान्तं परैः ----मिव श्री मत्पालितं यन्महोभुजा। तस्यान्तस्तपनेश्वर स्य भवनं विभद्रु शं शुभ्रतामभ्रस्पृग्दुगराज कुंजर युतं सद्वैजयन्ती लतम् किं कूटं हिम---सृत रसि---॥ १० ॥ तद् कार्व्यं तार्य्यं वचसा संसार---या ॥ ११ ॥ क्वचित्--- रवद्वयोधिकम धोयते साधवः क्वचित्पट्परीयसौं प्रकटयन्ति धर्म्म स्थितिम्। क्वचिन्तु भगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे- - - - - - - ध्वनिवदेव गाम्भीर्य्यत ॥ १२ ॥ वीक्षणे क्षणदां स्वस्य वर्णलक्ष्मी विपश्चिताम्। बुद्धि-र्भवत्यवशास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ आचार्य्यादिर्व्वचन घन---नि---मुच्चैः सद्भाव ----पयार्थः प्रतिध्वान दण्डम् सत्यं मन्ये यदु दित मितीवा वादीत्स-मन्तात्सोयं भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ ---किं चान्ह------ यिकार त्रैव-------------द्धः। तारापितं येन सुवंश भाजा सद्दानस माणित मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सौम्यो वणिग्जिन्दक संज्ञितः। इन्दुवत्कान्ति--- लयः ॥१६॥ ---चदुह्वरा--ह्वया प्रसाद युक्ता स्वयशोभिरामा। सदानुसत्रीं स्वपतिंनदीनं मार्गणावास ---- तरगा ॥१७॥ तस्मात्तस्यामभूद्धर्मा त्रिवर्ग -------- --------- ॥ १८ ॥ यन्नाकारि सितेतरच्छवि--नत्वा दिनं याचितै व्यर्थै र्नार्थिं जनरपि प्रतिगतं यद्गेहमभ्यर्थितं। किं चान्यद्भुवने दरोरु सरसि व्याप-- नीर नीर दसित .... ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्म्मं प्रति युक्त .... योनयो

………ताये ………कुमतेर्म्मनागपि । मि……… । वंसतोपिहि मण्डलेथवान सन्मणीनां भवतीहकाचता ……… ॥२०॥ यदि वादि……………………………… संज्ञिता ……………………… जाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वौ स्वर्गं सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गया प्रतिमा कारि स ……… त्रधामनि ॥ २२ ॥ आत्वकात्सर्वदे ध्यातु……………… यत ……………… देवदत्त ……………………………… मिवागमे ॥ ……………………… प्रति दिनमिति ……………………… या कार्य्यं प्रति विदधते यद्वदधिकं ॥ ध्यैर्य्यवन्तो पिये स्यन्तं भीरवः परलोकतः । भोगि ……………… हिको ……………………………… च्च दूरगाः ॥ ……………………… ति ……… बला बतत्स ……………………………… भिः पुन्रयं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिभारा विकलः सन्गोष्ठिकानु ……………………………… जिन्दक ……… मतदु ……… ध्य ……… कृतोय ……… नेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मत्स दृग्दृश्यते ……… द्वेजयत्री भूजयन्त ……………… ॥ संवत्सर दशशत्यामधिकायां वत्सरे स्त्रयो दशभिः फाल्गुन शुक्ल तृतीया भाद्र पदाजा ……………… सं० १०१३ ……………………… र्याम ॥ प्राजापत्यं दधदपि मना गक्षमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपिव ……… करोवः पाया ……… भुवन गुरुर्न्नात ……………………… ॥ भावद्गौगूढ वन्हिग्गुरु भर विन मन्मूर्द्धभिर्द्धार्य्यते घोयावन्मेरुर्म्मरुभिन्नि ……………… ति युते ……… । वशिखमुखच्छेद ……… श्री मद्व ……………… दशा प्रच ……………… नित्यमस्तु ॥ जयतु भगवांसताव ……………… कीर्त्तिर्न्नि रीति वपु: सदा॥ यस्मादस्मिन्निजम्मन्यवरि पति पति श्री ……… समा ……………… प्रकट सुतारनो ……… सूत्रधारत्व ……… ल्धिति ……… दित मिदं ।

तोरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ़ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापिमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं९ १२३१ मार्ग सुदि ५ वांधल पुत्र यशोधर वोहित्य मूला देवि---।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५९ कार्त्तिक सु० १२ सुचेत गुत्री सहदिग पुत्रैः शशु दरदी सुखदी सल्ल सर्व प्रसादे चतुर्विंशति जिनः मातृ पट्टिका निज मातृ जन्हव श्रेयोर्थं कारिता श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्त्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन बदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वासदेव सूरि संघ नानेतिहड़ श्रेयार्थं राखदोव कारिता।

(793)

सं० १२३४ वैसाख सुदि १४ मंगल। नागदेव वर्षा शामपद घनाय शोधं । भार्या यशोदेव्या त्रामर्षे पोथं पदे ।

(794)

सं० १२३४ वैशाख शुक्ल १४ मंगलवार सार्व्वदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारेन जिन तुत्रित सादेव मणि कुतेन ।

(795)

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे मोढ़ वास्तव्य सा० डा-भार्या यससारदे भार्या सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

(796)

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेषा गोत्रे सा० वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूरांयाभी पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः ।

(797)

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसभ से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठित श्री वृहद् तपापंकज श्री बिजय तिलक सूरि पट्टे श्री विजय धर्म्म सारे श्री भूयात् ॥

(798)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीठ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-ताभ्यां श्री धर्म्मनाथ विंवं पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रभु सूरि मंडलिराभ्यां कृ१ः ।

(799)

सं० १५४९ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० भर्म्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय सागर सूरिभिः।

(800)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूणं करापितं।

(801)

स० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कडुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजबाई केन श्री सम्भव विंब सा० तेजपालेन प्र०।

(802)

संवत् १७५८ वर्षे आषाढ़ सुदि १३। रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन राज सूरि। गणे शिष्यं ---।

नींवमें प्राप्त मूर्त्तिके टूटे चरण चौकि पर।

(803)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ --------- सालीभद्र -------- देव कर्म श्रेयोर्थं कारित जिनेत्रिकम् ---।

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्येह श्री केल्हण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र श्री कुंमर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती – – – दमिकान्वीय कीर्ति पाल राज्य वाहके तद्युक्तो श्री उपकेशीय श्री सच्चिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिल गो क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क संच्चिका देवि भक्ति परेण श्री संच्चिका देवि गोष्ठि-कान् भणित्वा तत्समक्ष तद्वयं व्यवस्था लिखापिता। यथा। श्री सच्चिका देवि द्वारं भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्घाट्य द्वार स्थितम् स्थातव्यं। भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश वर्षीयोत्परः। तथा गोष्ठिकैः श्री सच्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा।०॥ घृत कर्ष १ भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ घोर बड़ांशु गोत्रे साधु यहुदा सुत साधु जाल्हण तस्य भार्या सूहवं तयोः सुतेन साधु माल्हा दौहित्रेन साधु गयपालेन— सच्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चंडेका शीतला श्री सच्चिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पाल्हिया धीय देव चन्द्र बधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा समन्तेन स्वगृहं दत्तं ।

(807)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - - - पाल्हिया धीत देव चंड बधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं समस्त गोष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्ग्ग समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

डूंगरीके चरण पर ।

(808)

सं० १२४६ माघ वदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्ग्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके लेख पण्डित रामानन्दजीने संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

(809)

संवत् ११४४ वैशाख वदि ७ पल्लिका चैत्ये वीर ।

(810)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ श्री[illegible] - - - ।

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्ल आजिताभ्यां सांत्यार्थ कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः।

(812)

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरौ ---।

(813)

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनौ श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सघण देवौ तयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर विंबं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः।

(814)

ॐ। संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त नाथ देवस्य।

(815)

ॐ। संवत १२०१ ज्येष्ट वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल नाथ देवस्य।

(816)

सं॰ १५--- सुदि ३ सा-----का॰ सा॰ मया---स्व श्रेयसे श्री कुंथनाथ बिंबं का॰ प्र॰ श्री भिन्नमाल गच्छे।

(817)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ---।

(818)

सं॰ १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेस सा॰ मदा भा॰ वालहदे पुत्र सा॰ क्षेमाकेन भा॰ सेलखू भातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ बिंबं का॰ प्र॰ तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः।

(819)

सं॰ १५२९ वर्षे माह सु॰ ५ रवौ ऊ॰ भोगर गो॰ सा॰ राणा भा॰ रत्नादे पु॰ चाहड़ भा॰ रइणे पु॰ खरहथ खादा खात खना धितृ श्री नेमिनाथ बिंबं कारि॰ श्री नागेन्द्र गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः।

(820)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ऊ॰ गुगलिया गोत्र सा॰ खीमा पुत्र काजा भा॰ रतमादे पु॰ वरसा नरसा थादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सालि सू--।

(821)

स॰ १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री ऊकेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पासड़ भार्या लखमादे पुत्र सा॰ भोजा सुश्रावकेण भ्रातृ सा॰ पदा तत्पुत्र सा॰ कोका प्रमुख परिवार

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ऊ० चूंदालिया गोत्रे च ऊ० सा० सिवा भा० सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाड़िमदे पुत्र आसा भार्या ऊमादे इत्यादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंबं का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त भार्या साह पुत्र सा० वरु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंबं श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वदि १ शुक्रे उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल पुः ऊदा चांपा ऊदा भा० रूपी पु० वाला खतावाला भा० वहरङ्गदे सकुटुंब श्रे० उदा पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः।

(825)

सम्वत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह बिजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान वशावतन्स श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा० डुंगर भाखर नाम भ्रातृ द्वयेन सा० डुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रतन सा० पौत्र सा० टीला सा० भाखर भा० भावलदे पुत्र ईसर अरोल प्रमुख कुटुंव युतेन स्व द्रव्य कारित नवलखाख्य प्रसादोपरि श्री पार्श्वनाथ विंवं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितंच स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच श्रीमदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर परिकरितैः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे व्रद्धो भादा भादा को तयोः श्रेयार्थं लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारित ॥

(826)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे अष्टमी दिवसे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० ईसर हदाह सा नामनि पुत्र लखा चोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केशवादि परिवार परिवृतैः स्वश्रेयसे श्री महावीर विंवं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० डुगर भाखर कारित प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री श्री श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

(827)

सं० १६८६ वर्षे वैसाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे अष्ठमी दिससे महाराजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये तत्सुत युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्रं चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नाम्नि श्री पालि नगर राज्यं कुर्व्वति तन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा० भाखर नाम्ना भा० भावलदे पुत्र स० ईसर अटोल प्रमुख परिवार युतेन स्व श्रेयसे श्री

सुपार्श्व बिंब कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकबर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद् धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन सूरि ।

(828)

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय मुहंणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्ति स्फूर्त्ति मत्कोर्श विंशन्ति जिन विंब विराजित दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजय देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः ।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

(829)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ९ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य ---- हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे पुत्र सा० चसवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं स्थापितं च। महाराणा श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोढ़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरीश्वरोपदेशतः वांघरला। वास्तव्य समस्त संघेन। शिखरिरायां उपरि निर्मापितेन विंबेन प्रा० श्री प्रतिष्ठितंच तप गच्छाधिराज भट्टारक श्री मदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद् धारक भ० हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिकरितैः ।

लोढारो बासका मंदिर ।

(830)

ॐ ह्रीँ श्रीँ नमः ॥ श्री पातिसाह षुण साहजी विजय राज्ये । संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सिताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगंनाथ जी राज्ये ऊपकेस ज्ञातीय श्री श्री माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० डुंगर भातृ सा-भाषर -- नामभ्यां - डुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई स्यघर भना भाषर भार्या चाचलदे पु० इसर आयेल रूपा - पु० टीला युतेनं स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरी तत्पट्टे श्री रत्नचन्द्र सूरि वा० तिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व श्रेयोर्थं श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जीर्णोद्धार कारापित मूल नायक श्री पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां बिंब० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश डंडे रूप्य सहस्र ५ द्रव्य व्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(831)

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ९----।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(832)

संवत् १२०९ द्वि० ज्येष्ठ वदि ४ अद्येह श्री पल्लिकायां ग्रामे अणहिलपाटकाधिष्ठित

समस्त राजावली विराजित परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर लब्ध -------- निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी भूपाल श्री मत्कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये -----।

नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवले जसपालैः श्री नेमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्दे व सूरि शिष्येन पं॰ पद्मचन्द्र गणिना प्रतिष्टितं ॥

(834)

ॐ। संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः श्री शांतिनाथ विंवं कारितं॥ प्रतिष्टितं वृहद्गछीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री मद्दे व सूरि विनेवेन पाणिनीय पं॰ पद्मचन्द्र गणिना। यावद्रवि चन्द्र खौस्यातां धर्मोजिन प्रणीतोस्ति। तावज्जाया देत्त जिन युगलं वीर जिन भुवने।

(835)

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-ग्रवत जैता भार्या० कह पुत्र नामसी भार्या कमालदे पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंब कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांवदेव सूरिभिः ॥

(836)

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्रे० समरसी सुत दो० घारा भा० सूहवदे सुत दो महिपाल भा० माल्हणदे सुत दो० मूलाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईआभ्यां च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुंदर सूरिभिः ।

(837)

श्री चन्द्रा प्रभु विंबं । सं० १६८६ प्रथमाषाढ़ वदि ५ शुक्रे राजाधिराज श्री गज सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसा सुत जयमल्ल जी नाम्ना श्री चन्द्र प्रभु विंबं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पट्टालंकार भ । श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः राणा श्री जगत सिंह राज्ये नाडुल नगर राय विहारे श्री पद्म प्रभ विंबं स्थापित ॥

(838)

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ५ शुक्रे राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये योधपुर नगर वास्तव्य मणोत्र जेसा सुतेन । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ विंबं कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्री ५ श्री विजय देव सूरिभिः स्व पट्टालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः स परिवारः ॥

ताम्र शासन ।*

(४३९)

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठः परिहृत मद मार क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्बः स्वो वशीयं च सम्ब स्त्रिभुवन कृतसेवा श्री महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासान नडूले भूपः श्री लक्ष्मणादौ ॥२॥ तस्मात् बभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री बलि राजो राजा विग्रह पालोनू च पितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः । तज्जः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद कुल्यजनो पार्थिव श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत क्षितिपः सुभटः श्री जैंद्र राजाख्यः ॥५॥ श्री पृथिवी पालोऽभूत् तत्पुत्राः सौर्य वृत्ति शोभाढ्यः । तस्माद्भवत्भ्राता श्री जाजल्लो रण रसात्मा ॥६॥ तदैव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः । तत्पुत्राः क्षोणिपः श्री अल्हण देव नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप पताले सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं । सिंचंति सुदिताहित गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिशः सारमिदं बुद्धिमान् चिन्तयत । इह संसार असारं सर्वं जन्मादि जन्तुनां ॥९॥ यतः । गर्भे स्त्रि कुक्षिः मध्ये पल रुधिर बसा मेदसा बद्ध पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्थान्नु जन्मा धर्म्मादानामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प मात्रं स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ स्वशीतोष्याम तुल्यः क्षणः मिह सुखदाः सम्पदो दृष्ट नष्टः प्राणित्वं चंचलं स्याद्वुमपरि यथा नार बिन्दुर्न्नलिन्याः ज्ञात्वैमं स्व

* यह तामापत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड साहब यहांसे लेकर विलायतके रयल एशियाटिक सुसाइटीमें दान किया है।

पिम्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्म्म कीर्त्ति देशान्तो राज पुत्रान् जन पद गणान् बोधयस्त्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ अस्मिन्नेत्र महा चतुर्दशी पर्व्वणी। स्नात्वा धौत पटे निवेश्य दहने दत्वाहुतीन् पुण्य कृन् मार्त्तण्डस्य तमः प्रपाटन पटोः सम्पूर्य्य चावंजलिं। त्रैलोक्यस्य प्रभुं चराचर गुरुं संस्नप्य पंचामृतैः ईशानं कनकाग्न वस्त्र नदनैः सम्पूज्य विप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुतिल कुशाक्ष-तोदकः प्रगुणो भूता पसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छत यावत् चंद्रार्कं भूपालं ॥१३॥ श्री नडु ल महास्थाने श्री संडेरक गच्छे श्री महावीर देवाय श्री नड्डूल तल पद शुल्क मंडपिकायां मासानुमासं धूप वेलार्थं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् अस्य देयस्यनं भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिर्भवि भोक्तृभिरपरैश्च परिपंथाना न कार्या। यतः सामा-न्योयं धर्म्म सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्व्वान एवं भावीनः पार्थिवेन्द्र भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात्। अस्मदन्वयजा भूपा भावी भूपतयश्च ये। तेषामहं करे लग्नः पालनीयं इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः कश्चिन् नृपति र्भवेत् तस्याहं करे लग्नोस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ बहुभिर्व-सुधा भुक्ता राजभैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥ षष्टि वर्ष सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमंत्ता च तान्येव नरकम् व्रजेत् ॥१८॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत यः स विष्टायां कृमिर्भुत्वा पितृभिः सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो व्यतोयासु शुष्क कोटर वासिनः। कृष्णा ह्योभि जायंते देव दायम् हरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महा श्रीः। प्राग्वाट वंशे धरणिग नाम्नः सुतो महा मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः र्‌तिभा नित्रासो लक्ष्मीधरः श्री करणे नियोगी ॥२१॥ आसीत् स्वच्छ मला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्र ज्ञान सुधारस प्लवित धिष्ण्यज्जो भवत वासलः। पुत्रस्तस्य वभूव लोक वसनिः श्री श्री धरः श्री धरे सूपास्ति रचयांचकार लिलिखे चेदं महा शासनं ॥२२॥ स्व हस्तोयं महाराज श्री अल्हण देवस्य।

तामापत्र (महाजनों के पास)

(४४०)

ॐ स्वस्ति ॥ श्रिये भवंतु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरी नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा । राजा महाराज नतांह्रि युग्मः ख्यातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समाभूत्तदीय तनयः श्री लक्ष्मणा भूपति स्तस्मात्सर्व्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभितारव्यः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो मही ख्यातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽभवत् ॥३॥ तस्मिन्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुर्द्धुर वैरि कुंजर बध प्रोत्साल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलालो कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥ तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे व्यापाद्य सौराष्ट्रकान् । शौचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर वृत्तिरमलः श्री अल्हणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रौढ वंश जव रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण वै जनकजेव विवाहिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगाधयो रूप सौंदर्य युक्ताः । शस्त्रैः शास्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशालाः ज्येष्ठ श्री केल्हणाख्य स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्ति पालो । यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदथामीजने वंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमीसां परिवारानथो ज्येष्ठोगंजः क्षोणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारो निज राज्य धारी श्री केल्हणः सर्व्व गुणोरुपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आल्हण देव कुमार श्री केल्हण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य प्रसादे दत्त नड्डूलाई प्रतिबद्ध द्वादश ग्राम ततोराज पुत्र श्री कीर्त्तिपालः । संवत् १२१८ श्रावण वदि ५ सोमे ॥ अद्येहं श्री नड्डूले स्नात्वा धौ [illegible] भ्याय तिलाक्षत कुश प्रणायित दक्षिण कर क्रश्रा

देवानुदकेन संतर्प्य । बहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसो निःशेष पातक पंक प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती र्हुत्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रम्मौ स्नपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति भाद्रपद मासे चंद्रार्क्क क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरचंदं माडाड । काण सुवं । देवसूरो । नाडाड मउग्रड़ो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्व्वदाप्यस्माभिः शासने दत्तौ । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं लगित्वा सर्व्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे दातव्यौ । अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्त्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रांते योऽन्य कोपि भविष्यति तस्याहं करे लग्नो न लोप्य मम शासनं । षष्ठि वर्ष सहस्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि र्तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्तिपालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्थ साढनप्रा शुभं करः दामोदर सुतो लेखि शासनं धर्म्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(841)

संवत् १२१३ वर्षे मार्गा वदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल्ल पाटके समस्त राजा वली समलंकृत परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति बर लब्ध प्रसाद प्रौढ़ प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री बहड़ देव श्री श्री करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने पोरित्य चौहाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदं तदीय सुत संजात महामंडलीक० श्री वस्त

राजस्तदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मतां प्रताप सिंह शासनं प्रयच्छति यथा। अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महावीर चैत्ये। तथाऽरिष्ट-नेमि चैत्ये शील वंदडा ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्वाय धर्मार्थे वद्यं मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारक ब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त त्रिहाइकों रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यामदं। यः कोपि लोपयति सो ब्रह्महत्या गो हत्या सहस्त्रेण लिप्यते। यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं। बहुभि र्वसुधा भुक्ता राजभिः। यः कोपि पालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्टामीति। गौडान्वये कायस्थ पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं।

नाडलाई।

वर्त्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिलेके नाडोलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संवत दश दाहोतरे वदिया चोरासी वाद।
खेड नगर थी लाविया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्त्तमान हैं।

श्री आदिनाथजी का मंदिर।

(842)

संवत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री षंडेरकान्वय देशी चैत्य देव श्री महावीर दत्तः। मोरकरा ग्रामे घाणक तैल पल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तं रा सुत विसराकेन कलसो दत्तः॥ रा० वाच्छलय समेत। साखिय भण्डो नाग सिउ। ऊतिवरा

बीद्दु रा पोसरि । लष्मणु । बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सागरादिभिः । जस्य जस्य यदा भूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

(843)

ॐ ॥ संवत् ११८९ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज रायपाल । देव तस्य पुत्रौ रुद्रपाल अमृत पालौ । ताभ्यां माता श्री राज्ञी मानल देवी तया नदूल डागिकायां ॥ समां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । घाणकं प्रति धर्म्माय प्रदत्त भं० नागसिव प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० त्तिमटा वि० सिरिया वणिक पासरि । लक्ष्मण एते साखिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो हत्या सहस्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

(844)

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये - - - हास - - समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । आत्म । पाइला मध्यात् सत्वे साउत पुत्र विंसोपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तेल बल मध्यात् । माता निमित्तं पलिका द्वयं । पलो २ दत्तः ॥ महाजन ग्रमीण । जन पद समस्ताय । धर्म्माय निमित्तं विंसोपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च । स्त्री हत्या भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

(845)

संवत् १२०० कार्त्तिक वदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये । श्री नदूल डागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नदूला इय महाजनेन सर्वै मिलित्वा श्री महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । घृत तैल चौपढ़ मणि पित पाइय प्रति । क०ु धान लव-

नमपि तद्रोणं प्रति मा० १ कपास लोह गुढर षाढ हींगु माजीठा तौल्ये घडीप्रति । पु० १
पूगहरी तकि प्रमुख गणितैः। सहस्रं प्रति । पुगु १ एतत्तु महाजनेन चेतरेण धर्म्माय
प्रदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

(846)

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे । श्री महाराजाधिराज श्री रायपाल देव राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागिकायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महावीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थं । श्री अभिनव पुरीय बदार्या । अत्रेषु समस्त वणजारकेषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइल ल गमाने । तत्तु वीसं प्रति । रुआ २ किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारकै धर्म्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या सतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

(847)

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ़ वदि ९ नाडलाई रीमाउर्हात को-त्रिसति को तेल सेर० ॥ दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ प्रत देस ।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्ष

(849)

सं० १५६९ वर्षे । कुनबपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरूपदेशात् मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

(850)

सं० १५७१ वर्षे कुनवपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद सुन्दर सूरिराज गुरुपदेशात् चम्पक दुर्ग्ग श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात्

(851)

सं० १५७' वर्षे कुतपरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद सुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनीय श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

(852)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः। संवत् १५९७ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्र वासरे पुनर्वसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संडेर गच्छे कलिकाल गौतमावतारः समस्त भविक जन मनोंबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः षष्टि सुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः। श्री षंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर नभो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्त्र चूडामणिः भ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः तत्पट्टे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री बदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशो वादः भ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः। एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूराणां वंशे पुनः श्री शालि सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पट्टालंकार हार भ० श्री शांति सूरि वराणां सपरिकराणां विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे। श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री बप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर श्री खेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वंशोद्योतकार प्रताप मार्त्तंडा-वतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात। श्री उकेश वंशे राय जडारी गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे मं० मयूर सुत मं० सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० सीहा समदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसीधा रालाखादि सुकुटुम्ब

युताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ९६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां स० सायर कारित देव कुलिकायुद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पट्टे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० श्री ईश्वर सूरिभिः। इति लघु प्रशस्तिरियं लि० आचार्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(853)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे० सायर तुत्र साहल सत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान गम भार्या तत् पु०। भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र सकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद जादव। मं० सिवा पुत्र पूंजा जेठा संयुतेन श्री आदिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि तत्पट्टालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः।

(854)

महाराजाधिराज श्री अभय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ट सुदि ३ रवौ श्री नड्डुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृ० सा। जीवा भार्या जसमादे सुत सा। नाथाकेन श्री मुनि सुव्रत विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं च। भट्टारक श्री हीर विजय सूरिभिः।

(855)

संवत् १७६९ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ऊकेश ज्ञाते १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर सी पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिलेन संप्रति प्रतष (प्रतिष्ठितं) माणिक्य विजै शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात् शुभं भूयात्।

(856)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगोरी महा तपा विरुद् धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरीश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्म्मापित श्री जूषल पर्व्वतस्य जोर्ण प्रासादोद्धारेण श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे श्री श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मदकब्बर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुदधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृत्तैः श्री नडुलाई मंडन श्री जूखल पर्व्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंबं ॥ श्री ॥

श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

(857)

ओं नमः सर्व्वज्ञाय ॥ संवत् ११९५ आसउज वदि १५ कुजे ॥ अद्येह श्री नडूलडागिकायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयीराज्यं कुर्व्वतस्ये तस्मिन काले श्री मदुज्जित तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजाद्यर्थे गुहिलान्वयः । राउत उधरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मार्गे गच्छता नामा गतानां वृषभानां शेकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विंशतिमो भागः चंद्रार्क यावत् देवस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया ॥ अस्मद्दत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपिं लोपयिष्यंति । तस्याहं करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोयं साभिज्ञान पूर्व्वकं राउ० राज देवेन मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षिण ज्योतिषिक दूदू पासूनुना गूगिना ॥ तथा पला० पाला पृथिंवा १ मांगुला ॥ देवसा । रापसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(858)

ओं ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्त्तिक वदि १४ शुक्रे श्री नडुलाई नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्य स्वच्छ श्री मद्‌वृहद्‌गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणा उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि भिरलप गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निरा-कृत जगद् विषादः प्रसाद् समुद्धे आचंद्रार्क नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी ।

(859)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३९४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्रे श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत साम पुत्र राउत वांधी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत वाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं ढिकुय उवाडी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्कं यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

घानेराव ।

(860)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक वैजल्ल देन राज्ये श्री वंस

गत्तीय राउत महण सिंह भुक्ति वंसंह उवाट मध्यात श्री महावोर देव वर्षं प्रति द्राम ४ खाज सूणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांभत्य। सेठ रायपाल सुत राव राजमल्ल महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्स दिवहिं।

बेलार।

मारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर।

(861)

ओं संवत १२३५ वर्षे श्रे० साधिग भार्या माल्ही तत्पुत्रा आववीर धदाक आवधराः आववीर पुत्र साल्हण गुण देवादि समन्वित आत्म श्रेयसे लगिकां कारितवान।

(862)

ॐ संवत १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ प्रौढ प्रताप श्री मह्लांघल देव कल्याण विजय राज्ये बाघल दे चैत्ये श्री नाणकीय गच्छे श्री शांति सूरि गच्छाधिपे शाश्व। आसीद्ध धर्कट वंश मुख्य उसभः श्राद्धः पुरा शुद्धधीस्तद्गोत्रस्य विभूषणां समजनि श्रेष्ठि सुपार्श्वाभिधः। पुत्रौ तस्य बभूवतुः क्षितितले विख्यात कीर्त्ति भृशं पूमल्ह प्रथमो बभूव सगुणो रामाभिधश्चापरः॥ तथान्यः॥ श्री सर्व्वज्ञ पदार्च्चने कृत मतिर्द्दाने दयालु र्म्मुहु राशादेव इति क्षितौ समभवत पुत्रोस्य धांधाभिधः। तत्पुत्रो यति संप्रतिः प्रति दिनं गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विशारदो जिन गृहोद्धारोद्यतो योऽजनि॥२॥

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं। गोष्ट्याश्च राम गोसाभ्यां कारितो रंग मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु।

(863)

संवत १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः।

(864)

अ ॥ संवत १२३८ पौष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पा।

(865)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या लक्षा श्री पाल्हाया --- माल्हा ---- भार्या श्री ति ---- भार्या ---न भार्या पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि।

(866)

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिख्ये सुधर्म्म सुत वल्हणः। अभुच्चारित्र संयुक्तो बाल भद्रो मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राह्वो मुनिचन्द्र -- परः। तदन्वये धनदे -- पार्श्व दे। घोस सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः। लगिकां कारयामास गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

(867)

ओं संवत १२६५ वर्षे धर्क्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या सुखमति तत्सुत थांथां काल्हा राल्ह धोर सीह पाल्हण प्रमुख गोसा पुत आम्र

वीर आम जाल काल्हा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर राल्हण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र देव जस पाल्हण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेयोर्थं स्तंभ लगामिमं कारापयामासूः ।

(868)

ओं संवत १२६५ वर्षे उसभ गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भार्यां दूल्हेवि तत्पुत्र मगाकेन भार्या राजमति राल्हू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार शक्ति कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुंब सहितेन स्तंभन माकारितेदमिति - - - ।

(869)

ॐ संवत १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धर्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या-थिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम कारयदात्म श्रेयसे ॥छ॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

(870)

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री प्राग्वाट वंसीय रोपि मुणि मं० दसाढ़ाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवतु ॥

(871)

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मट कारिते। मंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संघ भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः ख्याताश्चतुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्टं श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद्भूतं ॥३॥

कोकिन्द।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

(872)

ॐ॥ संवत् १२३० आषाढ़ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख बाला मलण आस ददिवा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

(873)

ॐ॥ संवत १२३० आषाढ़ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनंद सूरि देशनया श्रे० धाधल श्रे० बाला लण दास ददिवा पोवर दिवा प्रमुख श्राक - -।

(874)

ॐ॥ नमो वीतरागाय॥ श्री सिद्धिर्भवतु॥ स्वस्ति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्जगत्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि। सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदनंत रिद्धिरादीश्वरः शारद भास्य दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा। हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः। सर्व्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजंते। युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्व्वा प्रसारः सवट प्रसारः। कक्ष प्रसारो व्रतति प्रसारः। इमे समे कोटितमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥ गीर्व्वाण सालो नहि काष्ठ भावात्। तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः। मृदां विकारान्नहि काम कुंभश्चिंतामणिर्न्नैव च कर्क्करत्वात् ॥४॥ सूर्यो न तापाकुलता करत्वात्। सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्ण शैलो न कठोर भावात्। नाभ्यंगजातेन तुलामुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विंदून। पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान्। करोत्करान् शारदःचन्द्र सत्कान्। कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां प्रभवंति विद्याः। सुपर्व्वलोकादिव काम गव्यः। दुग्धोऽपि वांच्छाधिक दान दक्षाः। पुष्णातु पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यतोंवराया स्त्वरितं प्रणेशु। मृगाधिराजा दिव मार्ग्गः पूगाः। यद्वा मयूरादि वले लिहानाः। स मारु देवो भवताद्व विभूत्यै ॥८॥ राठोड वंश व्रतति प्रताना नीकोपमो नीक निकाय नेता। राजाधिराजो जनि मल्ल देव। स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मौरसस्सम जनिष्ट बलिष्ठ बाहुः प्रत्यर्थिता पनकदर्पन पर्व्व राहुः। श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्त्र रश्मिः। श्री मानभूदुदय सिंह नृपः सुरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुल्या नदीप। स्तनु जित मधु दीपः सौम्यता कौमुदीपः। नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः स्तिरद मुचुकुंदः सर्व्व नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो। वाच्यस्तद न्यैरथ वृद्ध राजः। यस्येति शाहिर्विरुदं स्मदद्या। दकव्वरो वव्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेम्नः कष पट्ट शोभा। मयीभरत्संप्रति सूर सिंहः। यो माष पेषं द्विषतः पिपेष। निर्मूल कार्ष कर्षितार्त्तितांतिः ॥१३॥ राज्य श्रियां भाजन मिद्ध धामा। प्रताप मंदी कृत चंड धामा। संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमत स्च सूर्यं। सिंहो गतो व्योम वनं च भीतौ। अन्वथतो नाम जगाम सूर्य्यं। सिंहे तियः सर्व्व जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदीय सेनोच्छलिते रजोभि। र्मलीमसांगो दिनसाधि नाथः। परो दया वस्त्र मिषेण मन्ये। स्नातुं प्रवेशं कुरुते विनम्रः ॥१६॥ अप्येक मीहेतम

शुद्ध वंशो। धारे चक्रं तृप्ति युतो विशेषात्। स्वयं हतारातिं वसुन्धरा स्त्री परिग्रहास्त द्रुहुता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः। स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः। वहंति भक्तिं स्व कुटुंबलोका। अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्मं। सुरेष यद्वन्मघवा विभाति। यथैव तेजस्विषु चंड रोचिः। न्यायानुयायि ष्विव राम-चन्द्र। स्तथाधुना हिन्दुषु भूधवोयं ॥१९॥ द्रव्य जिनार्चोचित कुंकमादि दीपार्थ मा त्याममारि घोषं। आचामतोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना पुत्र वित्ताहरणं न चौरी नन्या समोषो न च मद्य पानं। नाखेटको नान्य वशा निषेवे। त्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्दधानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो गर्जासिंह नामा। गस्या गजोऽतीव बलन सिंहस्ते नैव लेभे गर्जासिंह नाम ॥२२॥ श्री ओसवालान्वय वार्द्धि चन्द्रः। प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः। विज्ञ प्रगेयो चितवाल गोत्रः पणेष्वपिस्वेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेच। प्रायः प्रभूतैर्द्र-विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदीश सेवा। हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां युग्मं। विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां। करे पुरे योधपुराभिधाने। दंत प्रमाणाब्दवया जगाख्यः सएष तुर्यं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमोदः पुण्यात्मनां पुण्य सहाय भावात्। विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो। नाथा भिधो नाथ समाप्त मानः ॥२६॥ तस्योज्वलस्फार विशाल शाला। भार्या भवद्गूजर दे सुनामा। रूपेण वर्या गृह भार धुर्या। श्री देव गुर्वोः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व दिगेव सूर्यं। मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः। वज्रांकुरं रोहण भूमि केव। नापाभिधानं सुत राज रत्नं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः। लेभे प्रसिद्धि भुंवि तेन विष्वक। तदर्थिनोन्येपि समर्जयंतु। गुणान्सपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे। वनिता वनितार सार रूप गुणा। शीलालंकृत रम्या गम्या नापाह्वये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-भिधश्च। सुधर्म्म सिंहोप्युदयाभिधोपि। सादूल नामेति च संति पंच। तयोस्तनूजा इव पांडु कुर्त्याः ॥३१॥ आसा भिधानस्य बभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतौ द्वौ।

तयोरभूदादिम वीर दासो। लघुश्चिरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत संज्ञितस्य। मृगे चणाऽमेलक देभिधाना। सुता बभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहरास्येश पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना। सुधर्म्म सिंहस्य सधर्म्मिणीति। कुटुंबिनी साउछ रंगदेवी। प्रिया बभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत श्चोज्जयंत शत्रुंजये स्वकृत यात्रां। निधि शर नरपति १६५९ संख्ये। वर्ष हर्षेण ना पाख्यः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे। योत्रां युग षट् षद षट्। कला १६६४ मितेऽब्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमार्क्काहृतु तर्क्क षडभ्र। वर्ष १६६६ गते फाल्गुन शुक्ल पक्षे। तौ दंपती स्वी कुरुतः स्मतुर्य। व्रतं तृतीया हनि रुप्य दानैः॥३७॥ दानं च शीलं च तपोपकार। स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते। नापाभिधान व्यवहारि मुख्ये। यथार्हिलोके गुरु पुण्य पूर्णा ॥३८॥ भुजार्ज्जितायां निज चारु संपदो। न्याय-र्जितायाः फलमिष्टमिच्छता। बांणागषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने। विधापित स्तेनर्हि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेअपि पार्श्वयो र्द्वयो। र्नापा भिधानेन विधापिते इमे। पित्रोर्यशः कीर्त्ति रुभे इव स्वयोः। कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध वादि मत्त गज केसरी। कपट पंजर भंग कृते करी। भव पयोधि समुत्तरणे तरी। प्रबल धैर्य हरैर्व्यसनेद्दरी ॥४१॥ असम भाग्य पयश्चयसागरः। स्व गुण रंजित नायक नागरः। विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राट्। विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं। तत्प-ट्टोदयि रवयो विजयंते विजय सूरीशः। श्री उचितवाल गोत्रावतंस तुल्या अनूचानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदो विभा करैः। गंगा तरंगालिल सद्य शोभरैः। जिनालयोय प्रतिभा यधूवरैः। प्रतिष्ठिता वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पंक्ति प्रभाय श्री विजय कुशल विबुध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिना प्रशस्तिरेषा विनि-र्माि ... श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति मिमां। उदली लिख ... तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

सेवाड़ी।

मारवाड़के गोड़वाड़ इलाकेके वालो जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है।

श्री महावीर जी का मंदिर।

(875)

ॐ ॥ सं० ११६७ चैत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये। श्री कटुक राज युवराज्ये। समी पाठीय चैत्ये जगतौ श्री धर्म्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं। महा साहणिय पूअवि - - - पौत्रेण ऊसिम राज पुत्रेण उप्पल राकेन। मां गह आंवल ॥ वि० सल खण जोगरादि कुटुंब समं। पद्रांडा ग्रामे तथा मेद्रंचा ग्रामे तथा छेछड़िया मद्गड़ी ग्रामे ॥ अरहटं अरहटं प्रति दत्तः जव हारकः ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते स्मदीय धर्म्म भाग्याः सदा भविष्यंति। इति मत्वा प्रतिपालनीय। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं। वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ॥१॥छ॥

(876)

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परतोषकारिणी शांतिः। विबुध पति विनुत चरणः स शांति नामा जिनो जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाढ्यः श्री मदण हिल भूपतिः। येन प्रचंड दोर्दंड प्रराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति सद्गृहः। जिन्द राजाभिधो राजा सत्यसशौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत्त नूजस्ततो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः। अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूभृतां वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले। जज्ञे स त्याग सौभाग्य विख्यातःपुन्य विस्मितः ॥५॥ सद्भुक्ती पत्तनं रम्यं शमी पाटी ति नामकं। तत्त्रास्ति वीर नाथस्य चैत्यं स्वर्ग्ग समोपमं ॥६॥ इतश्चासीद् विशुद्धात्मा

यशोदेवो बलाधिपः। राज्ञां महाजनस्यापि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री षंडेरक सुगच्छे बंधूनां सुहृदां सतां। नित्योपकुर्व्वता येन न श्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः। विश्व कर्म्मेव सर्व्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः ॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म्म परायणः। उत्पन्नः थल्लको राज्ञः प्रसाद गुण मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्ध्यान संयुतः। श्री मटकटुक राजेन यस्य दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ मायेत्र्यंवक संप्राप्तो वितीर्ण्णं प्रति वर्षकं। द्रम्माष्टकं प्रमाणेन थल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजार्थं शांति नाथस्य यशोदेवस्य खत्तके। प्रवर्द्धयतु चंद्रार्क्कं यावदादनमुज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाट्यां जिनालये। कारितं शांति नाथस्य बिंबं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्म्मेण लिप्यते राजा पृथिवीं भुनक्ति यो यदा। ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

(877)

ॐ ॥ संवत् ११९८ असौज बदि १३ रवौ अरिष्ट नेमि पूर्व्व दिशायां अपवरिका अग्रे भित्ति द्वार पत्रे वर्तुलभाते कर्त्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं पं० अश्वदेवेन।

(878)

सं० १२४४ आसाढ बदि ९ रवौ श्री संभव देव फागुण सुदि ८ चवण - - - लर - - पधर - - - ॥ - - - - सुदि १४ जंसो - - - हेकर जिसं देव ॥ - - - सुदि १५ विरवार - - - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्त्तिक बदि ५ माणु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि ५ रवौ - - - ण शांवत्र ॥

(879)

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्त्तिक वदि १ रवौ अश्व वाससा नालिकेर ध्वजा खासटी मूल्यं

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्त्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः। प्रदत्तात् बलाः ५ माख पाटकेने चके व्ययनीयाः ॥छ॥

(880)

॥ ॐ ॥ संवत् १२९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ श्रासहड़ वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि थांदा सुत नाना - - - - देव सधीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव सावदेव पूसदेव सुत घण देव सहड़ भार्या शील पुत्रिका साजणि जाल्ह सतो रण भार्या राहीअई - - - - सेहड़ भार्या अहहव सूमदेव भार्या मदावति सावदेव भार्या प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़ेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेद पुत्रिका देह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

सांडेराव।

यह भी मारवाड़के बाली जिलेमें है।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर।

(881)

श्री षंडेरक चैत्ये पंडित। जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाग गुरो मूर्त्ति कारिता थिरपाल मुक्ति वांछतां सं० ११४९ वैशाख वदि—।

(882)

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरौ अद्येह श्री षंडेरक निवासी श्रेष्टि गुणपाल पुत्रीकाया गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया। श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका कारापिता।

(883)

ॐ ॥ संवत १२२१ माघ वदि २ शुक्रे अद्येह श्री केल्हण देव विजय राज्ये। तस्य मातृ राज्ञी श्री आनल्ल देव्या श्री षंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि १३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात्। युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः। तथा राष्ट्रकूट पातू केल्हण तद्भ्रातृज उत्तमसीह सूद्रग काल्हण आहड आसल अणतिगादिभिः तला रामाव्यथस ? गटसस्कात्। अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री षंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा अमियपाल जिसहडदेल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र - - - -

(884)

सम्वत् १२३६ कार्त्तिक वदि २ बुधे अद्येह श्री नड्डुले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जाल्हण देवि भुक्तो श्री षंडेरक देव श्री पार्श्वनाथ प्रतापतः थांथा सुत राल्हाकेन भ्रा भ्रातृ पाल्हा पुत्र सोढा सुभकर रामदेव धरणि यशोहीष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगछा ? रासां धीरण हरिचन्द्र वर देवादिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थं विदित निज गृहं प्रदत्ता: ॥ राल्हाद्य सत्क मानुषै वसद्भिः वर्षं प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया। शेष जनानां वसतां साधुभिः गोष्टिके सारा कार्य्या ॥ संवत १२६६ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ शनौ सोयं मातृ धारमति पुनः स्तंभका उधृत। थांथा सुत राल्हा पाल्हाभ्यां मातृ पद श्री निमित्त स्तंभको प्रदत्तः।

नाना

मारवाड़के वाली जिलेमें यह ग्राम है।

(885)

संवत १२०३ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महेंत सूरिभिः प्रतिष्ठितः समस्तः ॥

(886)

संवत १४२९ माह बदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोढ ज्ञा० ठ० रत्न ठ० अर्जुन ठं० तिहुणा पुत्र मोल्द देव श्रेयसे भातृ टाहाकेन श्री पार्श्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उद० देव सूरिभि: ।

(887)

सं० १५०५ वर्षे माह बादि ९ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर विंवं प्र० श्री शांति सूरिभिः - - - - षभ ण जिन - - - भवतं

(888)

सं० १५०६ वर्षे माघ वदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

(889)

सं १५०६ वर्षे माघ बदि १० गुरौ गोत्र वेलहस ऊ० ज्ञातीय सा० रतन भार्या रतना दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

(890)

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित समयात संवत १६५९ भाद्रपद मासा शुक्ल पक्ष ७ सातमी तिथौ शनिवारे। श्री बैद्य गोत्रे। श्री सविया किण्णोत्रजा। मंत्रीश्वर त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० षेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १ चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागढ़ सिवाणे साको करी मूउ। पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिघा ४ सहसा ५ मुहता श्री नारायण नु राणा श्री अमर सिंघ जी मया करेने गांव नाणो दीयो मुहतो नाराइण अरहट १ साइमल देव श्री महावीर नु सतर भेद पूजा सारु केसर दीवेल सारु दीधो।

हींदूनां थरोस। उत्थापे तियेनुं गाईरो--सुंस। तुरक उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस वले -----को उथाप जो --- गांव नाणारो चहियो गांव वीबलाणे-- वो-सि-ए। इ जाएन - गांव - द्रम १ चेटियो ---- तको उथाप जो। वीजोको उथापसी तिणनु गदहउ गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे तत्पुत्र मु० श्री राज -- जणयल --- दा पुत्री जषमी ---- नाराइण विजी भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री --- गच्छे भट्टारक श्री सिद्ध सूरि विद्यमाने ---। ० श्री ---- चंद शिष्य चांपा लिषितं। ए --- जको --- सिणु ----।

लालराई।

मारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें यह लेख है।

(891)

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय पाल तास्मिन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवड़ा पड़ि देह बसी सू० आसधर समस्त सीर सहिते खाहि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्तं श्री शांति नाथ देवस्य दत्ता पुण्याय य: कोपि लुप्यते स पापो न छिद्यतेमंगल भवतू॥ तथा भड़िया उअ अरहट्ट आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरोपु १ गूजर तूयात्रहि वील्हस्य पुण्यार्थं ॥ १ ॥

(892)

ॐ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ बदि १३ गुरौ अद्येहं श्री नडूले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्तिपाल देव पुत्रे सिनाणकं भोक्ता राज पुत्र लाषण

पाल्हह राज पुत्र अभय पाल राज्ञी श्री महिबल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा निमित्त भडिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल समक्षि एतत् – – – दामं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त – – –द्रगण – – –सी० देवलये० समीपाटीय – – – पाजून आम्र – – – समक्ष आदानं – – – - मितस्य २ त – – - हत्या पातकेन लि – – - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२९९ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्येह समीपाट्टी । मंडपिकायां भां पाहट उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं ? वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चतुर्विंशति । द्रम्माः वर्ष वर्ष प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं शुभं भवतु ॥

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नाग श्र। श्र - - अर सोहेन सथ पक्षे दत्त द्र० उभयं द्र ३६ समीपाटी मडपिकायां व्याष्टपृथ माण पंच कुलेन वर्ष वर्ष प्रति आचंद्रार्क - - यावत् द्दातव्याः। शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो वीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेड़ा ग्रामे महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - -।

माताजीके मंदिरके स्तम्भ पर।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो वीत रागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ९ शुक्र दिने अद्येह श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पंत सिंह देव राज्येत्र तन्नियुक्त श्रा ॥ श्री करणं महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पठ्या ॥ समी तल पादिस्य मंडपिकायां साधू० हेमाकेन भार्यु हाथीउड़ी ग्रामें श्री महावीर देव नेवार्थं वर्ष प्रति वर्ता - - क द्र २४ चत्वविंसि द्रमा० प्रदत्ता शुभं भवतु॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिपि। जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ कपूर विजय लिषतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर।

(898)

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा सस्या अवस्तवः। परिशासतु ना' - - परार्थ ख्यापनो जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना धिनाम समये यत्पाद पद्मोन्मुख प्रेंखा संख्य मयूख

शेखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात्। प्रायैकादशभिर्गुणं दधती शक्रस्य शुम्भद्दृशां कस्योद्गुणा कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - क्त - - नासटकरीलोप शोभितः। सुशेखर - - ली मूर्द्धि रूढो महीभृतां ॥३॥ अपि बिभ्रद्रुचिं कान्तां सावित्रीं चतुराननः हरिवर्म्मा बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज स्फुरदनं बुद बाल दिवाकरः। रिपु बधूवदनेन्दु हृत द्युतिः समुदपादि विदग्ध नृपस्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर बचनैर्व्वासुदेवाभिधाने र्बोधं नीतो दिनकर करैर्न्नीर जन्मा करो व। पूर्व्वं जैनं निजमिव यशो कारयद्धस्तिकुण्ड्यां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय। भागद्वयं व्यतीर्यंत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्मादभूच्छुद्ध सत्त्वो मंमटाख्यो महीपतिः। समुद्र बिजयी श्लाघ्य तरवारिः सदूर्म्मिकः ॥८॥ तस्माद समः समजनि समस्त जन जनित लोचनानंदः। धवलो वसुधा व्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भंक्त्वाघाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज राजे। श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूर्ज्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणेयः सुरणां बभूव ॥१०॥ श्री मद्दुर्ल्लभ राज भूभुजि भजैर्भंजत्य भंगां भुवं दंडैर्भण्डन शौंड चंड सुभटै स्तस्याभिभूतं विभुः। यो दैत्यैरिव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेन्द्रं पुरा सेनानोरिव नीति पौरुष परो नैषीत्परां निर्वृतिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु बलः श्री मूल राजो नृपो दर्प्पांधो धरणो वराह नृपतिं यद्वद् द्विपः पादपं। आयातं भुविकां दिशी कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायामिव रूढ मूढ महिमा कोलो महीमण्डलं ॥१२॥ इत्थं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थितोयः। पाथोनाथो वा विपक्षात्स्वपक्षं रक्षा कांक्षै रक्षणे बद्ध कक्षः ॥१३॥ दिवाकरस्येव करैः कठोरैः करालिता भूर कदम्बकस्य। अशि श्रियं ताप हृतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्ज नौघा ॥ १४ ॥ धनुर्द्धर शिरोमणे रमल धर्म्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य पारंपरं। समीयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्ग्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव

लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदीर्ण्ण विषुद्विर्विशेषात् वल्गत्तुरंग खुरखात मही रजांसि। तेजोभिरूर्जित मनेन विनिर्जित त्वाद्भास्वान्विलज्जि त इवातत्तरां तिरोभूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् च – लनां दधौ। अनन्योद्धार्य सत्कार्य भार धुर्योर्यतोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्कर: करुणया शौद्धोदनिः शुद्धया। भीष्मो वंचन वंचितेन वचसा धर्म्मेण धर्म्मात्मजः। प्राणेन प्रलाय निलो बलभिदो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्ण्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये बाल प्रसाद मतिष्ठिप त्परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं। कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्म चमत्कृती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं। पार्थादि पार्थिव गुणान् गणयन्तु सत्यानेकं व्यधाद्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचरयंति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका रुचिरं। वाचस्पते र्व्वचस्वी को वान्यो वर्ण्णयेत्पूर्ण्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो भर्त्तु स्तस्यास्ते हस्तिकुण्डिका अलका धनदस्येव धनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हर हास हिमांशु हारि झात्कार वारि भुवि राज विनिर्ज्झराणां। वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप संपद्‌ पहार परं परेषां ॥२३॥ धौत कल धौत कलशाभिराम रामास्तना इव न यस्यां। संत्य परेष्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना कुलाः कुवलय दृशां संदृश्यंते दृशास्तरलाः परं। मलिनित मुखा यत्रोद्वृत्ताः परं कठिनाः कुचा निविड रचना नीवी बंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि सार्द्धं शुचि कुच कलशैः कामिनीनां मनोज्ञै र्विस्तीर्ण्णानि प्रकामं सह घन जघनैर्द्देवता मंदिराणि। भ्राजंते दभ्र शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्री जन हृत हृदयैर्व्विभ्रमैर्यत्र सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पर्व्वाणो हृद्यरूपा रसाधिकाः। यत्रेक्षु वाटा लोकेभ्यो नालिकत्वाद्विदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभि र्गौर वाढ्यैं गुणौघै र्भूपालानां त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्त्तिः। नाम्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितुं भासमाना समानो कामं कामं समर्थो जनित जनमनः संमदा यस्य मूर्त्तिः ॥२८॥ मन्येमुना मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः। स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगन्स्तात्ति लज्जतः ॥२९॥

प्रोद्यत्पद्ममाकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरेः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रुचिं वासुदेवाभिधस्य। अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्म्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण संग्रहः। अभग्न मार्ग्गणेच्छस्य चित्रं निर्व्वाण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्व्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्व्विधः। इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं घन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-निलांदोलितं। गरिष्ठ गुण गोष्ठ्यदः समुदद्दी धरद्धीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ कृन्मंदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं। इदं मुख मिवा भाति भास मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन चाहडनिकं शुभ शुक्ति करोटक युक्त मिदम्। बहु भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन गृहेति जोर्ण्णे पुनः समं कृत समुद्धताविह भवांबुधिरात्मनः। अतिष्ठिपत सोप्यथ प्रथम तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्ततामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्यै स्त्रि-पंचाशे सहस्रे शरदा मियं। माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्ददी सुदान मवदान धोरिदम पोपलन्नाद्भुतं। यतो धवल भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघट्टमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष शिरस्य मेक रजतस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पाताला तुल मंडपा मल तुलामा लंबते भूतलं। तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व्व धीर ध्वनिर्द्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिक धियः सद्रूप वेला विधौ ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-सत्तद्धिता ख्यात नामा। सद्वृत्ताढ्या रुचिर विरतिर्द्दु र्यमाधूर्यवर्या सूर्याचार्यै र्व्विरचिरमणी वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्वत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नागपोचिरस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म्म क्षयार्थं स्व संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपार्ज्जित वित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादि दर्प्प मथनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्ण्णं। भव्य जन दुरित शमनं जिनेंद्र वर शासनं जयति ॥१॥ आसीद्धी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वलो विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्समांगार्थिर्वत: । योपित्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो यः श्री मान्हरि धर्म्म उत्तम मणिः सद्वंश हारे गुरौ ॥२॥ तस्माद्बभूव भुवि भूरि गुणोपपेतो भूप प्रभूत मुकुटार्च्चित पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्विदग्ध नृपतिः प्रकट प्रतापः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तेः परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः । येनास्मिन्निज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥४॥ श्री वलभद्राचार्य विदग्ध नृप पूजितं समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्दत्तं भवते मया प्रपाल्यते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां चैत्य गृहं जन मनोहरं भक्त्या । श्री मद्वलभद्र गुरोर्यद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मिल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्रार्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्षयं ॥७॥ रूपक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवहणानां । धर्म्म - - - - क्रय विक्रयेच तथा ॥८॥ संभृत गंड्या देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपाट्या ॥९॥ श्री भहलोक दत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लक पेल्लक मेतद्व्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्त्तिक - - - प्रत्यर घट्टं धान्याढकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्म्मस्य विंशोपक स्तथा भारे । शासन मेतत्पूर्व्वं विदग्धेन राजेन संदत्तं ॥१२॥ कर्प्पासकोस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि सर्व्व भांडस्य । दश दश पलानि भारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आदानादे तस्माद्भाग द्वय महंतः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या धन मात्मनो विहितः॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र पोत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते दाने फलं दानात्पालिते पालनात्फलं । भक्षिते पेक्षिते पापं गुरु देव धनेधिकं ॥१६॥ गोधूम मुद्ग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्रोणम् प्रति माणकमेक मत्र सर्व्वेण दातव्यं ॥१७॥ वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे । श्री मद्वलभद्र गुरोर्व्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवती समधिकेषु माघस्य कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि भानु भरतं भागीरथी

भारती भास्वद्भानि भुजङ्ग राज भवनं भ्राजद् भवांभोदयः। तिष्ठन्त्यत्र सुरासुरेंद्र महितं जैनं च सच्छासनं श्री मत्केशव सूरि सन्तति कृते तावत्प्रभूयादिदम् ॥२१॥ इदम् चाक्षय धर्म्म साधनम् शासनम् श्री विदग्ध राजेन दत्तं ॥ सम्वत ९७३ श्री मंमट राजेन समर्थितम् सम्वत् ९९६ ॥ सूत्रधारोद्भव शत योगेश्वरेण उत्कीर्ण्णेयम् प्रशस्तिरिति।

जालोर।

मारवाड़का यह भी बहुत प्राचीन स्थान है। इसका प्राचीन नाम जावालीपुर था।

तोपखाना।

(899)

---।----त्रैलक्य लक्ष्मी विपुल कुलगृहं धर्मवृक्षालवालं। श्री मन्नाभेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु। मन्ये मंगल्य माला प्रणत भव भृतां सिद्धि सौध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विलसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान कुलांबर मृगांक श्री महाराज अण्हिला न्वयोवद्भव श्री महाराज आल्हण सुत-----यावली दुर्ललित दलित रिपुबल श्री महाराजकीर्तिपाल देव हृदयानंदिनंदन महाराज श्री समर सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तत् पाद पद्मोपजीविनि निज प्रौढि मातिरेक-तिरस्कृत सकल पीलवाहिका मंडल तस्कर व्यतिकरे। राज्यचिंतके जोजल राजपुत्रे इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने। रिपुकुलकमलेंदुःपुण्यलावण्यपात्रं नय विनय निधानं धाम सौंदर्य लक्ष्म्याः। धरणि तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्ष्मा पतिः सिंह वृत्तिः ॥२ तथा ॥ औत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भुप भवनोचित कार्य वृत्तिः। यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाह्वो-----खंडित दुरत विपक्ष लक्षः ॥३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधुकरेण समस्त गोष्ठिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषण श्रेष्ठि यशोदेव सुतेन सदाज्ञाकारि निज-नृयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरथेन श्रेष्ठि यशोवीर

(२३९)

परम श्रावकेण संवत् १२३९ वैशाख सुदि ५ गुरौ सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमेण परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥ नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पुंसवर्गैर्मुहु र्यस्ये -- -- पाव लोकन परैर्नो तृप्तिरासाद्यते। स्मारं स्मारमथो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं सोत्कंठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतल्लीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः। दृत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्त्तापूरेण पातालं - - - ण महीतलं। तुंगत्वेन नभो येन व्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्जद्व्योमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेषाढ्य सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोद्यद्वृषालंकृतं। ताराकैरवमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नंद्यादसौ मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संघाय ॥

(899)

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढ़स्योपरि प्रभु श्री हेम सूरि प्रबोधित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चौलुक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमार पाल देव कारिते श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल बिंब सहित श्री कुवर विहाराभिधाने जैन चैत्ये। सद्विधि प्रवर्त्तनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्रार्कं समर्प्पिते ॥ सं० १२४२ वर्षे एतद्देशाधिप चाहमान कुलतिलक महाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां० यशोवीरेण समुद्धृते। श्री भद्राजकुलादेशेन श्री देवा चार्य शिष्यैः श्री पूर्ण्ण देवाचार्यैः। सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते। मूल शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पंनप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामचंद्राचार्यैः सुवर्ण्णमय कलशारोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

(900)

संवत् १२६४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देल्हा सलक्षण झांपाख्या: झांवा पुत्रो बीजाकस्तेन देवड़ सहितेन पितृभ्रां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय श्री महावीर जिन चैत्ये करोटि कारिता: ॥ शुभं भवतु ॥

(901)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज श्री चंदन विहारे श्री क्षों व रायेश्वर स्थान पतिना भट्टारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात् मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेचनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(902)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महामात्य: श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महाराज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री मदुनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भ भवेन महं नरपतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव भांडागारे द्रम्माणां शतार्द्धं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्मार्द्धेन नेचकं मासं प्रति करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(903)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्ण्ण गिरौ अद्येह महाराज कुल श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव राज्य धुरामुद्वहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंबड पुत्र ठकुर जस पुत्र सोनी महणसीह भार्या माल्हणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी माल्हण गजसीह तिहुणा पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

पाल सुहडपाल द्वितीय भार्या जाल्हण देवि इत्यादि कुटंब सहितेन भार्या नायक देवि श्रेयोर्थं देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्रा निक्षेप हट्टमेकं नरपतिना दत्तं तत् भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी बलिः कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(904)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अद्येह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पट्ट श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये······मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उसवाल ज्ञातीय सा० जेसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गो परिस्थित श्री मत कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नइणसी सुन्दरदास आस करण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालादि -- पुत्र पोत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर बिंबं प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारक शिथिला-चार वारक साधु क्रियोद्वार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पट्ट प्रभाकर श्री विजय दान सूरि पट्ट शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतिबोधक सद्भूत जगद्गुरू विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक षण्मास अमारि प्रवर्त्तक भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरि पट्ट मुकुटायमान भ० श्री ६ विजय सेन सूरि पट्टे संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शेखरायमाण भट्टा-रक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारकस्य ॥

(905)

संवत् १६८३ आषाढ़ वदि गुरौ श्रवण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महुणोत गोत्र दीपक मं अचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंत दे पु० मं श्री जयल्ला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्म्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय सेन --- ।

(906)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ सूत्रधार ऊद्धारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा । दूहा हांराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(907)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ । महणोत्र गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे समर्पित । श्री सुपार्श्व विंबं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० -- ।

(908)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंब प्र० त० भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(909)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय प्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु ॥

(910)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरो म० लठांक श्री माण विप्र आ० विजयदेव सुरिभिः।

(911)

चौमुखजी का मन्दिर।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरो श्री श्री मुहणोत्र। गोत्र सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणा मादेशेन जय सागर गणिना।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है।

(912)

संवत् १२३१ मार्गा सुदि ८ म० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आत्म श्रेयार्थं प्रदत्तः॥

(913)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-वा० श्री मुनिशेषर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य स्कथा केकृत॥

(914)

संवत् १५४७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विलास म० सोम रात्रे आः --

(915)

श्री थीलि सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा बीर देमिते। महिमा कीर्ति लेखा स्या। तस्य देवेषु दुर्ल्लभा ॥

(916)

-- श्री पउजु वधू असोचय -- वहुया भउजा सुहंकर वणिस्स। सो भन सराविथाए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

---- चंदण वाल नासा --- पा मति सिरी सा -- षी -- लगा कारिता

जूना।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री २ करणे मं० वीरासेल वेलाउल भां० मिगल प्रभृतयो धर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा। श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभयादीप ऊर्द्धं सार्थं प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला। पक्षे भोम प्रिय दर्शविशापक अर्द्धार्द्धेन ग्रहीतव्याः। ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

जूना वेडा (मारवाड)

(919)

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ म्रं पतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण वज्र मानाद्यै र्मिलित्वा सर्व बांधवैः ॥ १ ॥ खत्तके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सूरे प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(920)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उकेस ज्ञातीय बापणे गोत्रे संघवी टीलु भार्या दीडम दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंदा श्री रादुलिया भार्या मन भगोदे पुत्र भोजा भा० ना - - - - श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित तपा गच्छ भट्टारक श्री श्री हीर विज - - - - ।

(921)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री ऊकेश गोत्रे श्री सिद्धा चार्य संताने श्रे० बेल्हू भा० देमलतत्पुत्र श्रे० जन सोहेन सकुटुम्बेन आत्म श्रेयसे पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(922)

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवौ प्र० ग० दोला राजू पु० वीसा भा० विमलादे पु० डुगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री बिमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री मडाहड़ा गच्छे श्री नय कीर्त्ति सूरि भि० माल्हेणसू ग्रामे वास्तव ।

(923)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी बाघणे सागासाहा भी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरसी श्री कुंथुनाथ विंबं श्री हीर

(924)

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति व्य० चाहड भार्या राणी पु० व्य० वेला प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः चुंपरा ग्रामे

(925)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विंबं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

(926)

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढ़ा गोत्र सा० झांझू भा० कपूरी सुत सा० वीरपालेन भा० गांगी पुत्र पनवंल कर्मसी भातृ दिलहादि युतेन श्री संभवनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

(927)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथौ इडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय। मं० श्री। लहुआ सुत मं० जसा मं श्री रामा महा श्राधेन भार्या रला। दम० कहूआ

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । श्री श्रीतपागच्छ युगप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि दशमी दिन ॥

(928)

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ९ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड़ मेरादि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य बिंबं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(929)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

(930)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय वाहड़ा गोत्रे - - - - - संभवनाथ - - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव (मारवाड)

(931)

संवत् १५१६ वर्षे पोसष वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राठउड राज्ये श्री सोभ्र थंम पुत्र श्री श्री वयं रसल्ल नरेस्वरेण बांधव सामंत सल्हा पुत्र हरुव मुख सपरिवारेण तेज बाई भरतार भाटी महिप पुण्यार्थं गोबिंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र धाधल मंडाही पुत्र नाल्हा मं० जाणा मं० दे० ऊट प्रमुख श्री संघ समु मणं पटहो वाद्यमानो चिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लषतं ॥

सांचोर (मारवाड)

(932)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी पाल्हा सुत छोवाकेन वृद्ध भ्रातृ भ० साम वधू धारकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

रतपुर ।

मारवाड़के जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है।

(933)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(934)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोष परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोय कारितः ॥

(935)

ॐ ॥ संवत् १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय्य पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माधव

सुत महं मदन सुत महं धीणा । श्री कुमरसिंह सुत महं ऊदल प्रभृति पंच कुलेन श्री पार्श्वनाथ: देव प्रतिवद्ध श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि शिष्य श्री अजित देव सूरीणा मुपदेशेन हट्ट द्वय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्रार्कं नंदतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदा फलं ।

(936)

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्न पुरे महाराज कुल श्री सांवत सिंह। कल्याण विजइ राज्ये तन्नियुक्त महं० कटुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ प्रतिवद्ध महा महणा श्रे० सांता मह० विजय पाल गो० लषण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां विदितं अक्ष्यराणि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर न्यातीय श्रे० राजा सुत बादा गांगा सुत मंडलिक मदन प्रभृति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद्ध तोडक प्रवेश द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हट्टात् द्वितीय हट्ट श्रे० गांगा श्रेयोर्थं बादा सत्क देव कुलिका बिंब पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकै। र्विदित्तं हट्टं समर्पितं। अस्य हट्ट निक्रइ प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाघकेन वीसल प्रीयथाय एक विंशत्यधिक शत मेकं प्रदत्तं। हट्ट मिदं चतुर्भि गोष्ठिकैः संमिलतै भूत्वा भाट्टक संख्या करणीया स्वात्मीय परिणा श्रेष्ठि बादा भ्रतक सांध विनैः भाट्टके हट्टं कस्यापि नार्पणीयं। तथा सत्क उतपत्ति व्यय कर्ण वाणगोष्ठिकानु विना एकाकिनैः न कर्त्तव्या। उतपत्ति मध्यात् देव कुलिकाया बिंबानां नेचकप देवी० द्र २। ३ वर्षं प्रतिदातव्या उतपत्ति मध्यात् हट्ट पतित दुसित पदे कमठाय कारापनीया। यच्च भाट्टक स्वक द्रव्यं वर्द्धति तत् पोष कल्याणक दिने देव कुलिकाया बिंब भोग करणोय। उरितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ सत्क नालि कायां घवं। न्यां क्षेपनीयं निक्षेप उधार गोष्ठिकै करणीय। अत्र मतानि महा महणा मतं श्रेष्ठि सांता मतं धराणे गभो वा हस्तेन महं विजय पाल मतं। गोष्ठिक लषणा मतं ॥ स

बिलाड़ा (मारवाड)

(937)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अभयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये बृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे। भट्टारक श्री जिन कीर्त्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति। श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तु ंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापित: स्थानको यम: उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृत: कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नायं श्री सुमतिनाथ जी देव लो जात: ---- द्रुघर भीषन कमाभ्यां कृत: उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रतापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन बिब-श्री भंवतु।

बोईया (मारवाड)

(938)

संवत् १२५० आषाढ़ वदि १४ रवा मुडपद्र वास्तव्य श्रावक साम्रण भार्या जिसवई सुत रोहड रामदेव प्रावदेव कुटुंब सहितेन राम्बदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्रा० २०।

(939)

ओं० संवत् १२५० आसाढ़ वदि १४ रवो बहुविध वास्तव्य र० रोहिल सुत धांधल तत्सुत गुण घर सालहणाभ्यां मातृ धिरमति श्रेयार्थे स्तम्भ लता ----- द्रां० २० प्रदत्ता।

कोटार (गोड़वाड़)

(940)

संवत् १२२५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्येह समाण ... सउ ... या प्रा० इनउ .... पयरा मह सज्जन ठ० मह भा .. ठ धणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च कुलेन श्रीधात भिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतुर्विंशति द्रम्माः वर्षं वर्षं प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पालनीया श्च ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ।

(941)

सं० १२२६ वर्षे श्रेष्ठि को सीहन चयपने दसद्र १२३ - यद्र ३६ स - प - १ मु डा - या स्वस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षं वर्षं प्रति - - - - या दातव्याः ॥

किराडू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है। हिन्दुओं के समय में इस स्थान का नाम किराट कूप था और जैनियों के प्रसिद्ध नृपति कुमार पाल ने इस स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कईएक बहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया था। काल के चक्र से इस समय उन देवालयों की बहुत बुरी हालत है और सब लेख भी नष्ट हो गये हैं।

(942)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गम्याय वेधसे । विश्वरूपाय शुद्धाय देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जयंति शंभोः स (श) श्वत् कपाल

विधु (भस्म) विभूषणस्य। गर्व्वः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गौरी जितं च चिर-वल्कल वर्ष दर्यात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - - - भूषिते र्बुद भूधरे। सुरभ्याः परमाराणां वंशो - - - नलं कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - - सिंधु धिराजो महाराज — — — रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गल मिलद्वैरि - - - - - प्रतापो ज्वलदूसलः ॥५॥ शंभुवद्द भूरि भूमीशाभ्यर्च्चनीयो भ — — — — सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो रुवण वैरिहं भवः ॥ - — - — ॥७॥ सिंधु राज धरा धार धरणी धर धाम वान ॥ मा - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया देव राजेश्वर- — — — ॥९॥ — — — मपहाय मही मिमां। मन्ये कल्प द्रुमः प्रायाद दृश्यक — — - ॥१०॥ — — दारणात्। श्री मद्दुर्ल्लभ राजोपि राजेंद्रो रंजितो — — - ॥११॥ - - - धंधुक - तः। येन दुर्व्वार वीर्येण भूषितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोछद्द राजाख्यः स्य - - - स्व - - - - -कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा दुदय राजाख्यो महाराज- - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड़ गौड़ कर्णाट मालवोत्तर पश्चिमं। - - कृ - श्रजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-त्पुनः। तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण मपि यो राज्य मुद्दध्रे भुज वीर्यतः। जयसिंह महिपालात् - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - अतश्च नव गत वर्ष ११८६ १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा ज्जयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर राजेन सिंधु राजपुरोद्भवं। भूपो निर्व्याज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्धृतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश संख्येषु पंचाधिक शते १२०५ व्वलं। कुमार पाल भूपालात् सम्प्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥ किराट कूप मात्मीयं शिव कूप समन्वितं। निजेन क्षत्र धर्म्मेण पालयामास यश्चिरं॥२२॥ अष्टा दशाधिके चास्मिन शत द्वादशकेऽश्विने। प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते दिनात् ॥ २३ ॥ दंडं सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात्। सह पंच नखांश्चैवमय-रादिभिरष्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोट नवसरो दुर्गौ सोमेश्वरो ग्रहात्। उच्चांगवरहा साक्यां चक्रे चैवात्म सादसौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः। पुनः

संस्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रशस्ति मकरो देतां नरसिंहो नृपाज्ञया। लेखको त्रय (णे) देवः सूत्र धारोस्तु जशोधरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१८ अश्विन सुदि १ गुरौ ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

सूंघा पहाड़ी।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तर्फ पहाड़ीके ढलावमें सूंधा माता नामक चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं।

(943)

ओं ॥ श्वेतांभोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तटिन्या गवाक्षः किंवा सौख्यासनं वा महिम मुख महासिद्ध देवी गणस्य। त्रैलोक्यानंदहेतोः किमुदितमनघं श्लाघ्य नक्षत्र मुच्चै शंभोर्भालस्थलेंदुः सुकृति कृतनुतिः पातु वो राज लक्ष्मीं ॥ १ ॥ ईशस्यां-कार्धनिरनुपमानंद संदोह मूला चंचद्वासोंचल दलमयी भूषण प्रौढ पुष्पा। सल्ला-वण्योदय सुफलिनी पार्व्वती प्रेम वल्ली लक्ष्मीं पुष्णात्वनु दिन मति व्यक्त भक्त्या नतानां ॥ २ ॥ विकट मुकुट माद्यत्तेजसा व्योम्नि दैत्यानिव भुवि मणिमय्या मेखलायाः क्रमेण। अनणुरणित लीला हंसकैस्त्रासयंती फणि पति भुवनांतश्चंडिका वः श्रियेस्तु ॥ ३ ॥ श्री मद्वत्समहर्षि हर्ष नयनो द्भूतांवु पूर प्रभा पूर्व्वोर्व्वीधर मौलि मुख्य शिख-रालंकार तिग्मद्युतिः। पृथ्वीं त्रातु मपास्त दैत्य तिमिरः श्री चाहमानः पुरा वीरः क्षीर समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो भवत् ॥ ४ ॥ रत्ना वल्यामिव नृपततौ तत्क्रमे विश्रु-तायां धर्म्मस्थान प्रकर करण प्राप्त पुण्योत्सवायां। श्री नद्दूलाधि पतिर भव ल्लक्ष्मणो नाम राजा लक्ष्मीलीला सदन सदृशाकार शाकंभरींद्रः ॥ ५ ॥ आपातालात्समर जलधिं मद्रो यस्य खड्गो मुष्टिव्याजाद्भुजग पतिना शृंखले नावबद्धः। निर्म्मथ्योच्चैः सपदि कमलां लीलयोद्धृत्य मत्तश्चक्रे नृत्तं रणित कटकः केलि कंपच्छलेन

॥ ६ ॥ तस्माद्धि माद्रि भवनाय यशो पहारी श्रीशोभितो ऽजनि नृपो ऽस्य तनूद्भवोथ । गांभीर्यधैर्य सदनं बाल राज देवो यो मुञ्ज राज बल भंगमचीकरत्तं ॥७॥ साम्राज्यामाप्य रेणुं रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जहु‍ै यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंध्य शैलाय माने । मुक्का शुक्तींदु कांतोज्ज्वल रुचिषु लसत्कोर्त्ति रेवा तटेषु प्रोढ़ाने दोपचारो ऽव्रण पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तत्पितृव्य जतयाथ बांधवः श्री महांदुर जनिष्ट भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायया विरहितं मुखं द्विषां ॥९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु च भुवस्तत्तनुजो ऽथ धवपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्ण चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु तमसा नैव दोषाकरात्मा तेजो भक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ केयूराग्र निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाडंबरं व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता । वीरेषु प्रसृतेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्ल्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निर्म्मल गुणैर्वश्या प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन स्रष्टा यस्य व्यधित यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो र्दंभतश्चारु चेले मध्यस्थायि ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजय-द्रणेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं बलं वाडवानल इवांबुधे र्जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल वसुमती मंडलस्तत्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदथ जितारातिमल्लो ऽणहिल्लः । भीम क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्रे ह्यार्था ऽभोनिधि रघु कृते वह्ने पंक्तिः खलानां ॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण व्यापार पारंगमा । पानानि प्रसभं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य नरेश्वरस्य तुलनां सेनांबु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्व्वीरुह् विटपावलंब्य सुगृही हर्म्येषु दृश्वा दृशं व्यातास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि वनांतरेषु चित-तान्या लोक्य हाहेति वाक् संस्मारा तपवारणानि शतशो यद्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥ दृष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरीं यो बलाज्जग्राहानुजघान मालव पतेर्भोजस्य साढाह्वयं । दंडाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय य-शसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमक्ष्मा-

भृत्चरण युगली मर्द्दन व्याजतो यः। कुर्वन्पीडा मति बलतया मोचयामास कारागा-
राद्भूमी पति मपि तथा कृष्णदेवा भिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्यो जलद भ्रमं दधुरहो सैन्येस्य से-
वारसा यावर्त्तप्रतिमे समुज्ज्वल पटा वासा मराल श्रियं। कंपं वायु वशेन केतु निवहाः
शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां चित्ते तु तापं द्विषः ॥ १९ ॥ श्रीमां-
स्तस्याजनि नर पति बांधवो जिंदुराजो यः संडेरेऽर्क इव तिमिर वैरि वृंदं बिभेद।
यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-
मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूषणानां प्रपाते वाष्पासायै-
र्घनतति तुलां बिभ्रतीनामरण्ये। दूर्वा भ्रांतिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांबूलीय
भ्रममिव चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र मतिमान् यः कर्णु का-
णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद धवला न्यानंद हृद्यानन:। पृथ्वी पाल इति ध्रुवं क्षिति
पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येक्षोऽरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य सैन्या पहः ॥ २२ ॥
यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं स्रवंती पयः स्वच्छंदं सचराचरेपि भुवने शत्रूं-
स्तृणी कुर्वती। धर्मं वत्समिव स्वकीय मनघं वृद्धिं नयंती मुदा कस्यानंद करी बभूव न भुवो-
भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजको भूपतिरस्य बंधु विंवेक सौध प्रबल प्रतापः।
श्वेतात पत्रेण विराजमानः शकस्यार्णाहिल्लाख्य पुरेपि रेमे ॥ २४ ॥ त्यक्त्वा सौधमुदार
केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पल्यंका शयणं करेणुषु मुदां स्थानं समंतादपि। यस्या-
रि क्षितिपाल बाल ललनाः शैले वने निर्झरे स्थूल ग्रावशिरस्सु संस्मृति मगुः पूर्वोपभुक्त
श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा समजनि वसुधा नायक स्तस्य बंधुः साहाय्यं मा-
लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः। तुष्टो धत्ते स्म कुंभं कनक मय महो
यस्य गुप्यद्गुरु स्थं तं हर्तुं नैव शक्तः कलुषित हृदयः शेष भूपाल वर्गः ॥ २६ ॥ उदय
गिरि शिरः स्थं किं सहस्रांशु बिंबं वितत विशद कीर्त्तेर्मूर्ध्नि किंनु प्रतापः। उपरि
सुभग शाया उद्गता मंजरी किं कनक कलश आभाद्यस्य गुप्यद्गुरु स्थः ॥ २७ ॥ कनक
रुचि शरीरः शीलसाराभिरामः फणि पति मयनीयस्यावतारः स विष्णोः। सलिल निधि
सुताया मंदिरे स्कंध देशे दधदवनि मुदाराममग्रिमः पुण्य मूर्त्तिः ॥ २८ ॥ सत्रागार

तड़ाग-कानन-हरप्रासाद्-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्म्ममे द्विज जनानंदी क्षमा मण्डले। धर्म्मस्थान शतानि यः किल बुध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शैल धवलं स्तोतुं यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुभ्रुवां चंचन्मौक्तिक-भूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि। प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुभ्राणि वल्लोकसां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मीं श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रियं बृहद्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः॥ भिषग्वि जयपाल-पुत्र-नाम्व सिंहेन लिखिता। सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्ण्णा ॥

(944)

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नम्रेषु नृपतां। प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तया तया वा देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाह्वो जज्ञे भूभृद्भुवन विदित श्चाहमानस्य वंशे। श्रीनड्डूले शिव भवन कृदुर्म्मं सवस्व वेत्ता यस्सा ह्याय्यं प्रति पद् महो गूर्ज्जरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्साली तमाला गुरु स्फूर्ज्ज च्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्र कर्म्ये गिरौ। सौराष्ट्रे कुटिलोग्र कण्टक भिदास्युद्दाम कीर्त्तिस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तया सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज इह नृपः केल्हणो दक्षिणा शाधीशोदंचद्विलिम नृपते र्मान हृत्सैन्य सिंधुः। निर्भि-द्योच्चैः प्रबल कलितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्रीं सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥३४॥ भ्रातास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद्व भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-वांबु वाहो पमः। यस्खड्गा बुनिधौ हतारि करिणां कुंभस्थलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो मराल ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥३५॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भित्वा शरैरावलं तस्मि न्कासहृदे तुरुष्क निकरं जित्वा रण प्रांगणे। श्री जावालि पुरे स्थितिं व्यरचयन्न-ड्डुल राज्येश्वर श्चिंता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्तत्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः। इन्द्र इव विबुध हृदयानन्दी पुरु- षोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विरचितो येनेह पुण्यात्मना नामा यंत्र मनोज्ञ कोष्ठक ततिर्विद्याधरी शीर्षवान्। किं शेषः फण वृंदमेदुर तनुर्वक्ष स्थले वा भुवो हारः किं भ्रमण भ्रमादुडुगणः किं वेष भेजे स्थितिं ॥ ३८ ॥ कमल वनमिवेदं वप्रशीर्षा लि दंभाल्लिखित विपुल देश श्री समा कर्षणाय। लिखित विशद् बिंदु श्रेणिवन्मत्त वैरि क्षितिपति विफला जिस्तोम संख्या निमित्तं ॥ ३९ ॥ तोलयामास यः स्वर्णैरा- त्मानं सोमपर्वणि। आराम रम्यं समरपुरं यः कृतवानथ ॥ ४० ॥ श्री कीर्त्ति पाल भूपति पुत्रो जावालि पुरवरे चक्रे। श्री रूदल देवी शिव मंदिर युगलं पवित्र मतिः ॥४१॥ श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्य रमणीयः। श्री उदयसिंह भूपतिर भूत्प्रभा भास्व- दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नड्डूल-श्री जावालि पुर-माण्डव्यपुर-वाग्भटमेरु-सूराचंद्र- राटहृद-खेड--रामसैन्य श्री माल-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देशा नामय मधिपतिः ॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्ररूढ रसना भारः समंतादभूत् क्षीराब्धिः परिरब्धु मुद्धुर भुजः कल्लोल माला मिषात्। द्रष्टुं चानि मिषाक्षि-पंकज वनो वास्तोः पतिर्यस्य तां विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां कीर्तिं सितांशूज्ज्वलां ॥ ४४ ॥ श्रीः प्रह्लादनदेवी राज्ञी यस्यां गजं प्रसूते स्म। श्री चाचिग देवाह्वं तथैव चामुंडराजाख्यं ॥ ४५ ॥ धीरो दात्तस्तुरुष्काधिपमदद्लतो गूर्जरेंद्रैर जेयः सेवायात क्षितीशोचित करण पटुः सिंधु राजांतको यः। प्रोद्दामन्याय हेतु भरत मुख महा ग्रन्थ तत्त्वार्थ वेत्ता श्री मज्जावालि संज्ञे पुरि शिव सदन द्वंद्व कर्त्ता कृतज्ञः ॥ ४६ ॥ तत्पट्टोदय शैल भानुरनघप्रोद्दाम धर्म क्रिया निष्णातः कमनीय रूप निलयो दानेश्वरः सु प्रभुः। सौम्यः शूर शिरोमणिश्च सदयः साक्षादिवेंद्रः स्वयं श्री मांश्चाचिग देव एव जयति प्रत्यक्ष कल्प द्रुमः ॥ ४७ ॥ भ्रूभंगेन भयंकरेण विजित प्रत्यर्थि भूमी पतिः श्री मांश्चाचिग देव एव तनुते निर्विघ्न वृत्तिं भुवं। द्वैजिह्व्यं विदधातु पन्नग पतिर्वक्रं वराहो मुखं कूर्मो नक्रततिं करींद्र निवहः संघात सौस्थ्यं परं ॥ ४८ ॥ मेरोः स्थैर्यं वचन रचनं वाक्पते यस्य तुल्यं पृथ्वी भारोद्धरणमसमं पन्नगेंद्रानुषंगि। साक्षाद्रामः किमयमथवा पूर्ण पीयूष रश्मिश्चिंता

रत्नं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेश दलनो यः शत्रु शल्य द्विषंश्चंचत्पातुक पातनैकरसिकः रूंगस्य रंगा पहः । उन्माद्यन्नहरा चल स्य कुलिशाकार स्त्रिलोकी तल भ्राम्यत्कीर्त्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोल्वणः ॥ ५० ॥ श्री माले द्विज जानुवार्टिक कर त्यागी तथा विग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे नित्यार्च्चनार्थं प्रदः । प्रोत्तुंगेप्य पराजितेश भवने सौवर्ण्ण-कुंभध्वजारोपी रूप्यज मेखला वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला तथास्यां रथः कैलास प्रतिमस्त्रिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः । येन क्षोणि पुरंदरेण कृतिना मानंद संवित्तये भाग्यं वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥ कर्णो दान रुचिर्बलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम मधुराकारश्च चिन्तामणिः । श्री मच्चाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णंति यत्तत्कीर्त्तेरपि नूतनत्व मभवद्भूमीभुजां सद्मसु ॥ ५३ ॥ स्फूर्ज्ज न्निर्झर झांकृतेन सुभगं तस्केतकीनां वनं मिश्री भूतमनेक कम्र कदली वृंदेन धत्तेऽत्र यः । आम्राणां विपिनं च देव ललना वक्षोरुह स्पर्द्धये वोद्यत्प्रोढ़ फलावली कवचितं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरौ मेरो स्तुल्यस्त्रिदश ललना केलि सदनं सुगन्धा द्रिर्नानातरु निकर सन्नाह सुभगः । नृपेणेंद्रेणेव प्रसृमर तुरङ्गोच्चय खुर प्रकं प्रोर्व्वी पीठ रतिरस वशात्तेन ददृशे ॥ ५५ ॥ तन्मूर्द्धिन त्रिदशेंद्र पूजित पदां भोज द्वयां देवतां चामुंडा मघटेश्व रीति विदिताम भ्यर्च्चितां पूर्व्वजैः । नत्वा भ्यर्च्य नरेश्वरोथ त्रिदशेश्या मंदिरे मंडपं क्रोडत्किंनर किन्नरी कल रवो न्माद्यन्मयूरी कुलं ॥ ५६ ॥ सम्वत् १३१९ त्रयोदश शते कोन विंशती मासि माधवे । चक्रेऽक्षय तृतोयायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ संपल्लाभं घटयतु शुभं कुंभि वक्त्रो गणेशः सिद्धिं देयादभि मत तमां चंडिका चारु मूर्त्तिः । कल्याणाय प्रभवतु सतां धेनु वर्गः पृथिव्यां राजा राज्यं भजतु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥ स श्रीकरो सप्रक वादि देवा चार्य स्य शिष्योऽजनि रामचन्द्रः । सूरिर्विनेयो जय मङ्गलो ऽस्य प्रशस्तिमेतां सुकृती व्यधत्त ॥ ५९ ॥ भिषग्वर-विजय पाल-पुत्रेण नाम्बसीहेन लिखिता ॥ सूत्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसरविणोत्कीर्ण्णा ॥

घटियाला।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक मे संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था वही यहां पर प्रकाशित किया जाता है।

(945)

घटियाला।

ओं सग्गापवग्गमग्गं पढ़मं सयलाण कारणं देवं । णीसेस दुरिअ दलणं परम गुरुं णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहुतिलओ पड़िहारो आसी सिरिलक्खणोत्तिरामस्स । तेण पड़िहार वंसो समुणई एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विपो सिरि हरिअन्दो भज्जा आसीति खत्तिआ भद्दा । अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि रज्जिलो एत्थ ॥ ३ ॥ अस्सवि णरहड़ णामो जाओ सिरि णहड़ोत्ति एअस्स। अस्सवि तणओ ताओ तस्सवि जसवद्धणो जाओ ॥ ४ ॥ अस्सवि चन्दुअ णामा उप्पणो सिल्लुओ विए अस्स । झोडोत्ति तस्स तणओ अस्स वि सिरि भिल्लुओ जाइ ॥ ५॥ सिरि भिल्लुअस्स तणओ कक्को गुरु गुणेहि गारविओ। अस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिविआसंहसिअं महुरं भणिअं पलोईअं सोम्मं । णमणं जस्सण दीणां रासोथे ओथिरामेत्ती ॥ ७ ॥ णोजम्पिअं ण हसियंण कयं ण पलोइअं णसरिअं । णथिअं णपरिब्भमिअं जेण जणे कज्ज परिहीणं ॥८॥ सुत्थादुत्थादि पया अहमातहउत्तिमा त्रिसोक्खेण । जणणिव्व जेण धरिआ णिच्चं णिय मण्डले सव्वा ॥ ९ ॥ उअरोहराअमच्छर लोहेहिमिणाय वज्जिअं जेण । णअ ओदो एह विसेसो ववहारे कावमण यम्पि ॥ १० ॥ दिअवर दिएणाणुज्जं जेण जणं रज्जिऊण सयलम्पि । णिम्मच्छरेण जणिअं दुट्ठाण विदण्ड णिट्ठवणं ॥ ११ ॥

घनरिद्धि समिद्धाणं वि पउराणं णिअकरस्स अब्भहिअं। लक्खं सयज्झ सरिसं तणं व तह जेण दिट्ठाइं ॥ १२ ॥ णवजोव्वणरूअपसाहिएण सिंगार गुणग रुक्केण। जणवयाणउज्ज मलज्जं जेण णेह संचरिअं ॥ १३ ॥ वालाण गुरु तरु णाण तह सही गय वयाण तण ओव्व। इय सुचरिऐहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणसया सम्माणं गुण थुई कुणं तेण। जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण घणंणिवहं ॥ १५ ॥ मरु माडवल्ल तमणी परिअंका अज्जगुज्जरित्तासु। जणिओजेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिऊण गोहणाइं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ। जणिआओ जेण विस मेवडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं दमहु अविं देहि। वरइच्छुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्ठारह समग्गलेसु चेतम्मि। णक्खत्ते विहु हत्थे वहुवारे धवल बीआये॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण हट्टं महाजणं विप्पयपय इवणि वहुलं। रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किशि विद्धिए ॥२०॥ मड्डोअरम्मे एक्को वीओ रोहिन्स कुअगामंम्मि। जेण जसस्स व पुजांए एत्थम्भा स मुत्थविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठलणं। कारविअ अचल मिमं भवणं भत्तीए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेएं भवणं सिद्धस्स धणेसरस्स गच्छम्मि। तह सन्त जम्ब अम्बय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नवं योवनं। सौभाग्यं गुण भावन शुचि मनः क्षांति यशो नम्रता ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद।

स्वर्गापवर्ग मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं। निःशेष दुरित दलनं परम गुरुं नमत जिन नाथम् ॥१॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य। तेन प्रतिहार वंशः समुन्नतिमत्र संप्राप्तः ॥२॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत इति क्षत्रिया भद्रा। अस्य सुत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट नामा जातः श्री नाग भट इति एतस्य। अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंदुक नामा उत्पन्नः शिल्लुकोपि एतस्य। झोट इति तस्य तनयः अस्यापि श्री भिल्लुको जातः ॥ ५ ॥ श्री भिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्वितः। अस्यापि कक्कुक नामा दुर्लभ देव्यामुत्पन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाशं हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं सौम्यं। नमनं यस्य न दीनं रासः स्थेयः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न प्रलोकितं न संस्मृतम्। न स्थितं न परिभ्रान्तं येन जने कार्यं परिहीनं ॥ ८ ॥ सुस्था दुःस्था द्विपदा अधमा तथा उत्तमा अपि सौख्येन। जनन्येव येन धृता नित्यं निज मण्डले सर्वं ॥ ९ ॥ उपरोध राग मत्सर लोभैरपि न्याय वर्जितं येन न कृतो द्वयोर्विशेषः व्यवहारे कदापि मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञं येन जनं रंजयित्वा सकलमपि। निर्मत्सरेण जनितं दुष्टानामपि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्धि समृद्धानामपि पौराणां निज करस्याभ्यर्थितम। लक्षं शतं च सदृशत्वेन तथा येन दृष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन शृङ्गार गुणज्ञ कक्कुकेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नेह संचरितम् ॥ १३ ॥ बालानां गुरुस्तरुणानां तथा सखा गत वयसां तनय इव। प्रिय सुचरितैर्नित्यं येन जनः पालितः सर्वः ॥ १४ ॥ येन नमता सदा सन्मानं गुणस्तुतिं कुर्वता। जल्पता च ललितं दत्तं प्रणयिभ्यो धन-निवहः ॥ १५ ॥ मरुमाडवल्लत्त मणी परि अंका अज्जगुर्जरेषु। जनितो येन जनानां सच्चरित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोधनानि गिरौ जाला कुलाः पल्लयः। जनिता येन विषमें वटनाणं कमण्डले प्रकटम ॥ १७ ॥ नीलोत्पल दलगन्धा रम्यमाकन्द मधुप वृन्दैः। वेरक्षु पर्णछन्ना एषा भूमिः कृतायेन ॥ १८ ॥ वर्ष शतेषु च नवसु अष्टादश सम ग्रहेषु चैत्रे नक्षत्रे विधु हस्थे बुधवारे धवलि द्वितीयायाम् ॥ १९ ॥ श्री कक्ककेन हट्टं महाजनं विप्र प्रकृति वणिज बहुलम्। रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं कीर्त्ति वृद्धै ॥ २० ॥ मण्डोवरे एको द्वितीयो रोहिन्स कूप ग्रामे। येन यशस इव पुञ्जावेतौ स्तंभौ समुत्तब्धौ ॥ २१ ॥ तेन श्री कक्कुकेन जिनस्य देवस्य दुरित निर्दलनम्। कारितमचलमिदं भवनं भक्त्या शुभ जनकम् ॥ २२ ॥ अर्पितमेतद्भुवनं सिद्धस्य धनेश्वरस्य गच्छे। सह शांत जम्बु आम्बक वनि भाटक प्रमुख गोष्ठ्यै ॥ २३ ॥ श्लाघ्य जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नवं यौवनं। सौभाग्यं गुण भावनं शुचिमनः क्षान्तिर्यशो नम्रता ॥ २४ ॥

पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है। यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर आते हैं।

(946)

ओं ॥ संवत १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे राथि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या धनी पुत्र केल्हा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केल्ला पींडरवाड़ा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। साः जीवा श्रेयोर्थं सा० जीवा दिने ४० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सीरोही नगरे। राथि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या येतलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास – – –– – बाई लाछल दे श्रेयोर्थं पींडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं। श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आणंद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्रा० बा० लाछलदे श्रे०।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोहीं नगरे राथि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या येतलदे।

लाछलदे सवारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन सी रामदास शहंस कर्ण पीडरवा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्रेयोर्थे श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आंणद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सू० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(949)

ॐ ॥ संवत् १६०१ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे राय श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे सा थाथा भार्या गांगादे पुत्र सा – मा भार्या कसमीरदे पुत्री रमी पीडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरो करापितं बाई गांगादे श्रेयोर्थं श्री तपा गच्छ श्री कमल कलस सूरि सुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(950)

ॐ ॥ संवत् १६१२ वर्षे फागुण वदि ११ शुक्रे श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उदइ सिंघ जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण सी सहस करण – – – पींडर वाड़ा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे आणंद विमल सूरि – – – –

(951)

ओंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्राग्वाट वंशे व्यवहारि सागा सूनुः प्रसूनोज्वल कांत कारिः । श्री पुण्य पूणा जनि पूर्ण सिंह स्तस्य प्रिया जाल्हण देवि नाम्नी ॥ १ ॥ भट्टर भट्टारत रोरु – – – – कलापः किल कुर पालः । जाया धर्म मोदिकन्दो प्रमुक्ता तस्या भवत्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ सदयो २ वामामृतैः सुहितौ लोक हितौ सतां मतिः ।

समयो विनयो चिली चणो विजयते तनयो तयोरिमो ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्नं रत्नाभिधो घनं । धनाणढ्य जन मूढ़ – राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्वितीयेंदु कांति कांच गुणोच्चयः । धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी धारल देव्यो जात्यौ तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यो ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५--तेजा धासल वास जाल्हणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिता गुण वर मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार शेखरः । पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी वरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला भिधः सूनु स्तत्पुत्रो भावठोऽशठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सुवित्तः । छींवाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सुदेवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते द्वयो पेते शीलाद्युत्तम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा देवी तनुजो मनुजो चित चारु लक्ष्मणो पेतः । अमरो भ्रमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे धरा धीशे प्राज्य राज्यं – रीक -- ॥ १३ ॥ आस्यामुभाभ्यां धनि पूर पाल लींवाभिधाभ्यां सदुपासकाभ्यां । ग्रामेऽग्रिमे पींडर वाडकाख्ये प्रसाद --- विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥ विक्रमाद्बाण तर्क्काब्धि भूमिते वत्सरे तथा । फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिथौ ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्ध्य भ्युदयैक दायकः, श्री वर्द्धमान श्चरमो जिनेश्वरः । श्री मत्तपः संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आचर्वांदु समयादनया श्री वर्द्धमान जिन नायक मूर्त्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदं वर चैत्यं ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

(952)

राज श्री अमर सिंह जी लषावता देहनारा देहधी आरोहतो – कमनइ कायोछइ । आजक -- वान देरा माहि पोलसइ तिनइ गधइ ढ – गाल छइ संवतु १७२३ वर्षे मगसिर सुदि -- ॥

वीरवाडा (सिरोही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

(953)

सं० १४१० वर्षे श्रे० महणा भा० कपूर दे० पु० जगमालेन भा० सुतलदे पु० कडूया देल्हा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कछोलीवाल गच्छे भ० श्री नरचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगलं ॥ प्राग्वाट ज्ञातीयः ॥

बसंत गढ़ (सिरोही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्त्ति पर ।

(असन के दोनो तरफ पीठ पर)

(954)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये वसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट व्य० झगड़ा भा० मेघादे पुत्र व्य० संडनेन भा० माणिक दे पुत्र कान्हा पौत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट व्य० धणसी भा० लींबी पुत्र व्य० भादाकेन भा० आल्हू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पट्टालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पट्ट प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेषर सूरि गुरुभिः ।

पालडी (सिरोही)

(955)

सं० १२४९ वर्षे माघ सुदि १० गुरो अद्येह श्री नडूले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री जयत सीह देवो विजयी ज-- तत्पादपद्मोपजीविन महा

श्रीरमय वाल्हण प्रभृति पंच कुलेन महं सुम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर प्रदत्त द्र० १ पाइयुली मध्यात्। बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वरषे जेठ सुदि १० सोमे अद्येह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आल्हण सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री पेता प्रभृति पंच कुलं शासन मभि लिख्यते यथा महं श्री पेताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - - श्री पार्श्व नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० ब्रा अलिपाव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे सणा - - - - - - - - - कल्हा।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ओं। श्री भिल्लमाल निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्गो ल (क्ष्मीं) – राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां बंधु पद्म दिवाकरः जज्जुकस्तस्य पुत्र स्यात् नम्मराम्मे ततो परी ॥ जज्जु सुत गुणाद्यो वामनेन प्रसादूयम्। दृष्ट्वा चक्रे गृहं जैनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्वत् १०९१ – – – – सपुने - ।

उथमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ़ वदि ५ गुरौ श्री नाणकीय गच्छे उथण सदधिष्ठाने। श्रीपार्श्व-नाथ चैत्ये ॥ धनेश्वर पुत्रेण देव धरेण धीमता। सयुक्तेन यशोभद्र आल्हा पाल्हा

सहोदरैः। यसो भटस्य पुत्रेण। सार्द्धं यरा घरेण भा पुत्र पौत्रादि युक्तेन धर्म्म हेतु मह मंना ॥ भगनी धारमत्याख्या। मृतश्चैव यशो भटः। कारितं श्रेयसे ताभ्यां। रम्येद्रस्तुंग मंडप ॥ छ ॥

वघीणा (सिरोही)

(959)

संवत् १३५९ वर्षे वैशाख सुदि १० शनि दिने न – – – ल देशे वाघ सीण ग्रामे महाराजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काले वर्त्तमाने सोलं० षाभट पु० रजरसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोल० सी माल पु० कुंताधारा सो० माला पु० मोहण त्रिभुवण पद्मा सोहरपाल सो० धूमण पर्ट पायत् वणिग् सोहा सर्व सोलंकी समुदायेन वाघसीण ग्रामीय अर – – हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ तथा धूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति गोधूम सेई ४ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महोत्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दातव्यं पालनीयं च। आचंद्रार्कं ॥ यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

लाज-नीतोड़ा (सिरोही)

(960)

संवत् १२ वर्षे ४४ माह सु० ६ श्रे० जेतू आसल प्रति पतेमधिक कुअर सीह पतिना। पाऊ त्नु।

(961)

मन्दिर घर लषम सिंघेन करावी।

नोदिया (सिरोही)

(962)

संवत् ११३० वैसाष सुदि १३ नंदियक चैत्य साले वापी निर्म्मापिता सिव गणैः।

(963)

ॐ॥ सतिणि सील वंता च। सद्भाव भक्ति संयुता॥
जिन गृहे सैल स्तंभा द्वौ। मंडप मूले थापिताः॥ १॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर।

(964)

ओं॥ संवत् १२०१ भादवा सुदि १० सोम दिने निबा भार्या वरा पुत्र मोतिणिया स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते॥ संवत् १२९८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुत रा० कमण श्रेयोर्थं पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः॥ श्री ---- सूरि श्री --।

कोटरा (सिरोही)

(969)

॥ पूर्वं डीडिला ग्राम मूल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय श्री विजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात वीर पल्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे पिप्पालचार्य श्री वीर प्रभ सूरिभिः स्थापितः। संवत् १४६५ वर्षे।

वरमांण (सिरोही)

(967)

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण भा० राल्हू पु० पून सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन भा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

(968)

ओं० संवत १४४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्माणीय गच्छे भट्टारक श्री मदन प्रभ सूरि पट्टे श्री नंदिश्वर सूरि पट्टे श्री विजय सेन सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेम तिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरोही)

(969)

संवत १३०८ वर्षे उदे सीह सुत पदम सीह ।

माकरोरा [सिरोही]

(970)

श्री सुविधि जिन प्रासादात् माक्रोड़ा मध्येः । संवत् १७९० वरषे कमल कलसा गच्छे भट्टारिक श्री मत् रत्नसूरि प० कमल विजय गणि वेठाणा ७ संघाति चौमासु रह्या । मंहुता

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जगन्नाथसा० लषमा सा० राजा लाघा संघा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जगी समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ॥

धवली [सिरोही]

(971)

॥ सं० । १९६१ वैशाख शुक्ल ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंबा उमा सा । तलका वाला प्रमुख कारापितम् तस्यो परी ध्वज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश भट्टा० । श्री विजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० डुंगर विजय वां० । नथु प्रमुख, इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरोही]

(972)

संवत् १६६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुसल कातिक चौमासु कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जरावल पार्श्वनाथ [सिरोही]

(973)

संवत् १४८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुङ्ग सूरीणां पदोद्धरण श्री जय कीर्त्ति सूरीश्वर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

डीया सा० संग्राम सुत सा० सलषण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा० डीडा सा० षीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीडा सुत सा० नाग राज सा० काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर सिंह भार्या कउनिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ स्य चैत्ये देहरी १ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्तुमान भद्रं मांगलिक्यं भूयात् ॥

(974)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कल वर्ग्गा नगरे कोठारी बाहड सामंत सं ताने को नरपति भा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ ओं कटारिया गोत्र वर महीयं नार्स्तु पिता मे जननी देमाई। श्री सोम सुंदर गुरुर्गुरव श्रद्वेयाः श्री छालज मंडन मात्र शार्ल ॥ १ ॥

(975)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्ग्गा नगरे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० घणसी संताने सा० जयता भा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मांषसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका कारापिता। शुभं भवतु। श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात्।

(976)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्णा पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्ग्गा नगरे ओसवाल ज्ञातीय मं० मलुसी संताने सं० रतन भार्या बा० वीरू सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता। शुभं भवतु श्री पार्श्वनाथ प्रसादात ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज।

(977)

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे भट्टा० श्री रत्नाकर सूरीणामनुक्रमेण श्री अभयसिंह सूरीणा पट्टे श्री जय तिलक सूरीश्वर पट्टावतंस भट्टा० श्री रत्न सिंह सूरीणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्वय मंडन श्रे० पेत सीह नंदन श्रे० देवल सीह पुत्र श्रे० पोपा तस्य भार्या सं० प्रणकु देव्ये तयोः सुता सं० साङ्गा सं० दादा सं० मूदा सं० दूधाभिधै रेतैः कारि।

(978)

स्वस्ति संवत १५०८ वर्षे आषाढ़ सुदि १२ शनै सू० झाला सुहडा नरसी जीमा मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांचा सूरा नित्य प्रणमय अष्टांग सकुटुंब।

(979)

ओं॥ सं० १८५१ वर्षे आसाढ़ सुदि १५दिने श्री जीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार कारापितः सकल भट्टारक पुरंदर भट्टारक जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ – श्वर राज्येन जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया परचीयो नाल लीघो श्री जीरावल वास्तव्य मु०। षजा। को। दला। सा० कला। सा० रत्ना। सा० सघा। सा० जोयत सा० अणला। सा० वारम। सा० रामल । – – – यकी काम कारापितः। जोसी दुरगा। झालू राजा जात्रा सफलः॥

श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

(930)

ईर्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ बुधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वैराग्य सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पाति शाहि श्री अकबराभिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेश बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश कर्णन पूर्वकं पुस्तक कोश समर्पणं डावराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्षे षड्मासिकामारि प्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंज तीर्थे मुंडकाभिधान कर निवर्त्तनं जीजियाभिधान करकर्त्तनं निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनं सदैव बंद्य रुण निवारणं वित्यादि धर्म कृत्यानि प्रवर्त्त तेषां श्री शत्रुंजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद शुक्लैकादशी दिनेजात निर्वाणां शरीर संस्कार स्थानासन्न फलित सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्वराणां प्रति दिनं दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दर्शनादिकै जीय प्रभावाः स्तूप सहिताः पादुकाः कारिताः पं० मेघेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः ओं श्री विमल हर्ष गणि ओं श्री कल्याण विजयगणि ओं श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पुज्यमानाश्चिरं नन्दतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं भवतु ॥

श्री कापड़ा पार्श्वनाथ ।

(931)

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथौ सोमवारे स्वाती महाराजाधिराज महाराजश्री गजसिंह विजय राज्ये ऊकेशे रायलाखण संताने भांडागारिक गोत्रे अमरा पुत्र भांनाकेन भार्या भगतादेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोढा। पौत्र तारा चंद खगार–नेमि दासादि

परिवार सहितेन श्री श्रीकर्पटहेटके स्वयंभु पार्श्वनाथ चैत्ये श्री पार्श्वनाथ ……… ……… …… …… …… …… ……सिंह सूरि पट्टालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः सुप्रसन्नो भवतु।

अलवर।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है।

(982)

सं० १२५५ माघ सुदि ६ - - - -।

(983)

सं० १२९४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - - वंशे पिता महो प्याऊपितु पितृ सोला श्रेयोर्थं पुत्र नाग दिन् – न भा० जागश्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्श्वनाथो बिंबं कारितः। प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनदेव सूरिभिः।

(984)

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्रे० १ माला भार्या सिंगारदेवी पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठि० श्री सिंहदत्त सूरिभिः।

(985)

सं० १३२४ वैशाख सुदि ३ थरुपति कुलेन साणे छोता - - - - -

(986)

सं० १३७८ जेष्ट वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग -। गोत्रे - - - सा० खिंम घर सिर पाल भार्या पुत्र कोल्हा मुणि चंद्र लाहड बाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंब का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः।

(987)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० – – उ० छत्रवाल गोत्रे सा० तिहुणा पु० सोना भा० सोनादे - - - - - - - शांति नाथ बिंबं - - - - - - -

(988)

सं० १४९९ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकरिया गोत्र सा० सधारण तत्पुत्र_ सा० सांगा श्री आदिनाथ बिंबं करापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(989)

सं० १५०१ पोष वदि ६ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय षरज गोत्रे ठ० कडुआ भा० कामल दे सुत ठकुर षीमा भा० रूपिणी – – सुसीया षीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० चमकू सुत लखमा धरमा धना वना देवी। करमा भा० गांगी लखमा भार्या भोली एवं समस्त परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ बिंबं कारापितं स्व पुण्यार्थं प्र० श्री सर्व सूरिभिः।

(990)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भार्या पूना पु० हांसा- केन निज पूर्वजा षेमधर माहा प्रीत्यर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे भ० श्री देव सुंदर सूरि पदे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(991)

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० खडबड गोत्रे सा० पाल्हा भार्या पाल्हादे पुत्र सं० साधु सायर सोठारय आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः।

(992)

सं० १५१९ वर्षे अषाढ़ वदि ९ शनौ भरतपुर ज्ञा० डीघोडीया - - - सा जगसी सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु० नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः।

(993)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे षेता पु० रुल्हा भार्या रजलदे खुकांषर अमरा - - - - श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः।

(994)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वाछत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल पु० सुर जल सींहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पूज्य बिंबं करापितं प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः।

(995)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल ज्ञातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रनू सुत हेमा हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री महूकर गच्छे श्री धन प्रभ सूरिभिः। मेलिपुर नगरे।

(996)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ़ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० मेढ़ा पुत्र सा० हेफकिन भ्रातृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः।

(997)

संवत् १५५८ वर्षे --सु० ११ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र सा० तध सुत साहवू-हडेन महराज महिय -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः।

(998)

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढ़ा गोत्रे तउधरी लाधा भार्या मेहराणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयोर्थं श्री अञ्चल गच्छे श्री भाव सागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंवं का० प्र० श्री र --

(999)

सं० १६६१ वै० सु० अ० भ० सपटी ---।

(1000)

सं० १९३१ माघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथौ १२ बुधे श्री ऋषभ जिन विंवं कारित अलवर नगर वास्तव्य श्री संघेन मलधार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जिन चंद सागर सूरि पट्टालंकार शोभित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं मधुबन मध्ये।

पटना म्युज़ियम।

(525)

संवत् १८७४ शाके १७३९ प्रवर्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः॥

(634)

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ सुदि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पाद न्यासः । प्रतिष्ठितः खरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पास कुमारजी ॥

उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह "जैन लेख संग्रह" एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारको आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्त्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रर्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनोंसे निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान है, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनोंने "संग्रहमें" मदद दी है उन सभीका मै कृतज्ञ हूं । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता
ई० सं० १९१८

संग्रह कर्त्ता

श्रावकों की ज्ञाति–गोत्रादि की सूची ।

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
गांधि	५१-६२, ७५, २०८, २४०, २४६-२५५, २५६, ४२५, ६४८, ७५२
गुगलिया	५४६, ७५७, ८२०
गोखरू	८६, ६३, ४८५
गोलेच्छा	१४२, ३४०
चलकरिया	६८
चंडलीया	५९२
चरवड़िया	४४७
चोरवेड़िया	५५८
चोरड़ीया	१८१, ३०१, ५८१
चंदालिया,	८२२
चोपड़ा	५०१
चोपड़ा (गणधर)	७७१, ७८५, ७८७
छाजलानि	३१, ४२१, ४३६
छत्रधात्र	६८७
छाजहड़	५३३, ७१२
छाब	२८२
जड़िया	१२०, ४७०
जारलड़िया	३३
जसमड़	२२५
जांगड़ा	४८०
जारउड़ा	६२७
जाणेचा	४
टप	४६८, ६७८, ७५८
डागा	१२१
डागलिक	४१७
ढींक	४७
तातहड़	१२८, ४७७, ५३१
तिलहरा	६२५
तीवट	५५०
दणवट	७७६
दूगड़	३६, ४४, ५७, ६८, ८५, १४६, १४८, १५०-१६४, १६५, १६६-१६७, १७४, १७७, १७६, १८४, २०४, ३०४, ३०६, ३३६, ३४१, ३५२, ४३४, ४७०, ७३४
दुधेड़िया	३२,६६२
दोसी	२२०
धनेरिया	५३७
धाड़ेवा	१८३
धीर	३०३
धुल	७५७
नवलखा	२६४, ३४३
नाहटा	४७३, ४६६
नाहर	५, ४६६, ४६२, ६१५, ६५८, ६६६, ६६३
पमार	५००
पामेचा	६०७
पावेचा	६१६
बालड़ेचा	४६७
पीपाड़ा	२६४, २६५
पीहरेचा	६७२, ६७६
पोसालेचा	६३
बच्छस	५७३
बरड़ा	१२६
बर्द्धन	६७१
बरहुड़िया	६२

आचार्यों के गच्छ और संवत की सूची।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	अंचल गच्छ।		१४४६	श्री सूरि	६३
१४४७	मेरुतुंग सू०	६२८	१४४८	कुंथकेसरि सू०	२८५
१४४६	,,	२	१५५६	भाववर्धन गणि	७६२
१४८१	जयकीर्त्ति सू०	४११		**आगम गच्छ।**	
१४८३	,,	६७३	१४३८	जयतिलक सू०	७६५
१५०३	जयकेसरि सू०	४१६	१५०६	हेमरत्न सू०	३६१
१५०७	,,	६७३	१५१२	,,	७४१
१५१६	,,	५७८	१५०७	शीलरत्न सू०	४७६
१५२२	,,	१२३	१५१०	जिनरत्न सू०	१००
१५२३	,,	४१	१५१५	पावप्रभ सू०	६६०
१५३०	,,	६६४	१५१७	देवरत्न सू०	५५७
१५३१	,,	६६५।६७४	१५४५	सोमरत्न सू०	४२३
१५३२	,,	१०८	१५७५	आनंदरत्न सू०	१११
१५३६	,,	६६६		**उपकेश गच्छ।**	
१५५१	सिद्धान्तसागर सू०	११९	१२५६	कक्क सू०	७६१
१५६१	भावसागर सू०	६६८	१३४३	देवगुप्त सू०	६२१
१५६५	,,	५६८	१४०५	कक्क सू०	४००
१५७४	,,	५००	१४४५	सिद्ध सू०	४६०
१५७६	,,	२६२	१४७१	देवगुप्त सू०	७७४
१६७१	कल्याणसागर सू०	३०७-३१२।४३३	१४८०	सिद्ध सू०	७७
१८५६	धर्ममूर्त्ति सू०	७४३	१४८५	,,	३८९
१६२१	रत्नसागर सू०	६५२।६५४।६५५	१४८८	,,	५५०
१४४७	श्री सूरि	६२८	१४९५	,,	५३१

संवत्	नाम	लेखांक
	खरतर गच्छ ।	
१४१२	जिनचंद्र सू० हरिप्रभगणि मोदमूर्तिगणि हर्षमूर्तिगणि	२३६
१४३८	जिनराज सू०	२११
१४४१	,,	६१५
१४५९	,,	५८२
१४६६	जिनवर्द्धन सू०	२ ,२
१४७९	जिनभद्र सू०	४६५
१४८४	,,	११६
१४६५	,,	२७५
१४६७	,,	८
१५०३	,,	६२०
१५०४	,,	७३१
१५०७	,,	२१४।४७३।७६७
१५०९	,,	५०१।७३१।७३२
१५११	,,	१२१
१५१२	,,	४७८
१५१५	,,	१२१।७४६
,,	जिनचन्द्र सू०	४७
१५१७	,,	५५६
१५१६	,,	१०३।१८६।२१५।२१७।४१६
१५२८	,,	२१८। ६१०
१५२९	,,	७८
१५३२	,,	१०७
१५३४	,,	४४५
१५३५	,,	५६२
१५३६	,,	२९।४८८
,,	जिनसमुद्र सू०	६१७
१५३७	,,	७३५
१५४८	,,	२२०
१५५१	,,	४१
१५५३	,,	४६३
१५५८	जिनहंस सू०	१०
१५६०	,,	४४७
१५६३	,,	२८६
१५६५	,,	१८७
१५६८	,,	४६१।७६३
१५७[illegible]	,,	४२
१५७९	,,	५६५
१६५६	जिनचन्द्र सू०	७८०
१६५७	,,	४३
१६६१	,,	५२३
१६६६	,,	७२३
१६६८	,,	१३५
१६६९	,,	७०३
१६७६	जिनराज सू०	७४७
१६७७	जिनराज सू०	७७१।७८५।७८७
१६८६	,, उ० अभयधर्म	२७१
१६८८	,,	१७६
१६६०	जिनराज सू० उ० कमल लाभ पं० लब्धकीर्त्ति पं० राजहंस	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१८२१	जिनलाभ सू०	६००
१८४४	जिनचन्द्र सू० वा० अमृतधर्म वा० क्षमाकल्याण	४५
१८४८	जिनचन्द्र सू०	६२७।६३३
१८४६	,,	३५८
१८५६	,,	१३८।१४४
१८५५	जिनहर्ष सू०	३३८
१८६१	,,	६३
१८७१	,,	८७।५२७
१८७४	,,	२६१।२६२।५२५
१८७५	,,	१६६
१८७७	,,	२२४।३३८।३४०
१९००	जिनसौभाग्य सू०	१२।३०६
१९०३	,, पं० हीराचंद	६६६
१९०४	जिनसौभाग्य सू०	५६६
१९०७	,,	१४७
१९१०	,,	३४७
१९५७	जिनकीर्त्ति सू०	३८५
१५०४	वा० शुभशीलगणि	१७१।२३६। २५६।२७०
१६११	धर्मसुन्दरगणि	७१०
१८५७	उ० हीरधर्मगणि	४२५
१५१५	जिनसुन्दर सू०	४८०
१५१६	,,	४८२
१५१६	जिनहर्ष सू०	४८।१६१। २१६।२८१।४१८
१५२७	,,	१०१५२
१५२८	,,	६६२
१५३१	,,	२८४
१५५१	,,	१७४
१५२४	उ० कमलसंयम	२५७
१५२७	,,	२५८
१५६२	जिनतिलक सू० पट्टे जिनराज सू० श्रीभिः	४१४
१५६६	जिनचंद्र सू०	२६०।२२४
१५६७	,,	५६१
१५७१	जिनरत्न सू०	१६२
१६६६	आचार्य सिंह सू०	७२३
१६८६	रत्नतिलक सू० वा० लब्धिसेन गणि	२६६।२७२
१७०७	कल्याणकीर्त्ति	२४५
१७८०	जिनरंग सू०	२०५
१७८१	,,	२०४
,,	वा० भुवनचंद्र	२०३
१८०६	जिनकीर्त्ति सू० करमचन्द हरखचन्द प्रतापसी	८३७
१८२१	महेंद्रसागर सू०	६७
१८४६	रूपविजय	२०६
१८७६	उ० रत्नसुन्दरगणि	६८
१८८७	कीर्त्युदयगणि	३८२

संवत्	नाम	लेखांक
१८८८	जिनअक्षय सू० पट्टे जिनचन्द्र सू०	३४३
१८९७	जिनमहेंद्र सू० कुशलचन्द्रगणि	२००।३४५
१९००	जिननंदिवर्द्धन सू० वा० विनयविजय शिष्य पं० कीर्त्युदय	२४२।२४३।२६३–२६७
१९११	जिनमहेन्द्र सू०	२४४.२६८।६३४
१९१२	,,	३६६
,,	मु० मोहनचन्द्र	६४६
१९२६	जिनकल्याण सू०	५२८
१९७२	जिनरत्न सू०	५२९

चन्द्र गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३३६	पूर्णभद्र सू०	८९९

चंद्रप्रभाचार्य गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१९६०	... ...	४५६

चित्रवाल गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६	मुनितिलक सू०	२१३
१५०८	,,	२७७
१५१३	गुणाकर सू०	१०१०
१५२९	सोमकीर्त्ति सू०	४३२
१५४८	सोमदेव सू०	६७५
१५८६	रत्नचंद सू० वा० तिलकचंद्रमु०	८३०

चैत्र गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३३२	अजितदेव सू०	९३५
१५१९	गुणाकर सू०	९९२
१५०३	जरपल्लीयगच्छ उदयचन्द्र सू०	३६६
१५३२	सागरचंद सू०	५९२

तपा गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४७५	सोमसुंदर सू०	१२१
१४८५	,,	८३६
१४८६	,,	४६६
१४९६	,,	७००
१४९९	,,	५५३।७०३
१४८१	रत्नसिंह सू०	६७७
१४९९	,,	६६
१४८३	भुवनसुंदर सू०	६७४–६७६
१४८५	हेमहंस सू०	५४८
१४९०	,,	३३
१५०७	,,	६२५
१५०१	मुनिसुन्दर सू०	७०४
१५०३	जयचन्द्र सू०	६४७।६६८
१५०४	,,	६६१
१५०७	उदयनंदि सू०	४७५
,,	रत्नशेखर सू०	४७७
१५१०	,,	४१२६।७०५
१५१२	,,	४२५
१५१३	,,	८१८
१५१४	,,	२७१।७४५
१५१५	,,	४०१।५७३।६२६
१५१६	,,	५५२
१५१३	रत्नसिंह सू०	३४

संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	विजयतिलक सू० पट्टे विजयधर्म सू०	७०७
१५१७	लक्ष्मीसागर सू०	२८०।४८३
१५१९	,,	६।६३५
१५२१	,,	४४४।५३५
१५२२	,,	५८१
१५२३	,,	१४
१५२४	,,	१०५।१०६।१२८३।५६०
१५२५	,,	४८४।६२४
१५२७	,,	३९८।७३६
१५२८	,,	६६३
१५३०	,,	७०।४८५।६२४
१५३२	,,	७०७
१५३३	,,	५८।३११
१५३४	,,	३६।५३
१५३५	,,	५०७
१५३६	,,	७१।४४६
१५३७	,,	४८१
१५३८	,,	२८२
१५१७	हेमसमुद्र सू०	७६०
१५२१	,,	४४३
,,	सोमदेव सू०	४४४
,,	उदयवल्लभ सू०	५३६
१५२७	जिनरत्न सू०	५१८
१५३२	,,	७५५
१५२८	क्षेमसुन्दर सू०	७५३
१५३०	विजयरत्न सू०	६५३
१५३२	उदयसागर सू०	६८२

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	,,	४२०
१५४६	,,	७११
१५५१	,,	७१७
१५४५	सोमरत्न सू०	४१०
१५३०	,,	४२१
१५५२	सोमसुन्दर सू० इन्द्रनन्दि सू० कमलकलश सू०	७०१
१५५३	हेमविमल सू० कमलकलश सू०	१५
१६०३	कमलकलश सू०	६४३
१५५६	हेमविमल सू०	५८०
१५६४	,,	९२
१५६६	,,	२९१
१६७१	,,	६४६
१५७६	,, पं० अनंतहंसगणि	६६१
१५७०	वनरत्न सू०	५८०
१५७६	सौभाग्यसागर सू०	२६५
१५७८	राजरत्न सू०	२९४
१५८२	धनरत्न सू०	६१८
१६०३	विशालसोम सू०	१५३
,,	विजयदान सू०	६४६–६४८
१६१२	,,	६५०
१६११	हीरविजय सू०	७१३
१६२३	,,	६२७
१६२८	,,	६२०
१६३०	,,	२१।८३।८२५

संवत्	नाम	लेखांक
१६३४	हीरविजय सू०	१२४
१६३८	,,	६०५
१६४४	,,	९२०।९३०
१६४७	,,	७१४
१६११	विजयसेन सू० शि० धर्मविजयगणि	७१३
१६४३	विजयसेन सू०	२२३।५०४
१६५२	,,	९८०
१६५३	,,	७८२
१६६७	,,	१२०
१६८६	,,	८२६।८२७
१६५७	विनयसुन्दर गणि	७५२
१६५८	कल्याणविजय गणि	११३
१६६६	सा० लब्धिसा० उदयसा० महजसा० जयसा०	८७४
१६६८	विजयसेन सू० विजयदेव सू०	७२५
१६७४	विजयदेव सू०	५८१।८५३
१६७५	,,	४५२।७५० ७५५।७८४
१६८३	,,	५४२।९०५।९०६
१६८४	,,	९०८
१६८५	,,	६९४
१६८६	,,	७८३।८२५।८२१।८३७
१६८७	,,	५४३।७५६
१६९४	,,	१३०।६६९।६७०
१७००	,,	७७२।८२८
१७०३	,,	५१४

संवत्	नाम	लेखांक
१६८१	जयसागर गणि	९०४।९११
१६८४	विजयसिंह सू०	९०६
१६८६	,,	८३८।८५६
१६८७	,,	४५५
१६८८	,,	५८२
१६९३	,,	६५६
१६९७	,,	११४
१७०१	,,	२९५।५०६
१७६२	चन्द्रकुशल गणि	३३४
१७६५	विजयरत्न सू०	६४३
१७७१	,, जयविजय गणि	३००
१८०१	सुमतिचन्द्र गणि	६४४
१८०८	वीरविजय सू०	१३६
१८४५	विजयजिनेंद्र सू०	३१
१८७३	,, पं० मोहनविजय	६४५
१९०३	पं० रूपविजय गणि	७४४
१९४९	विजयराज सू०	३५५

कुतुबपुरा गच्छ ।

[तपा]

संवत्	नाम	लेखांक
१५६९	इन्द्रनन्दि सू०	८५९
१५७१	प्रमोदसुन्दर सू०	८५०।८५१
१५९१	सौभाग्यनन्दि सू०	५४

लावकीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०५	शांति सू०	८८७

संवत्	नाम	लेखांक
	त्रिभविया गच्छ ।	
१४२०	धर्मदेव सू० सं० } धर्मरत्न सू० }	४२७
	देवानंदित गच्छ ।	
१३०३	सिंहदत्त सू०	६८४
	धर्मघोष गच्छ ।	
१४०६	सागरचन्द्र सू०	४०६
१४५८	मलयचन्द्र सू०	६०७
१४५६	,,	४१०
१४८२	पद्मशेखर सू०	४२८।४६६
१४६२	,,	५५२
,,	महेंद्र सू०	५०८
१५०३	विजयनरेंद्र सू०	५८७
१५०५	साधुरत्न सू०	१७
१५१७	,,	५
१५०७	पद्मसिंह सू०	४७४
१५२६	महेंद्र सू०	९६३
१५२६	पद्मानन्द सू०	७१६
१५३१	,,	७३७
१५५१	पुण्यवर्द्धन सू०	४६२
१५५२	,,	११०
१५५४	,,	६०२
१५५६	नंदिवर्द्धन सू०	५६५
१५७०	उदयप्रभ सू०	३८
१५८७	नयचंद्र सू०	२६
	नागेंद्र गच्छ ।	
१०८८	... ...	७६२
१४४६	रत्नप्रभ सू०	६८६
१४८१	सिंहदत्त सू०	५२१
१५१५	विनयप्रभ सू०	४८१
१५१७	गुणदेव सू०	५१०
१५२९	सोमरत्न सू०	८१६
१५७२	गुणवर्द्धन सू०	६७७
	नाणकीय गच्छ ।	
१२३५	शांति सू०	८६२
१३२३	धनेश्वर सू०	६०२
—	वीरचन्द्र सू०	८६६
	नाणवाल गच्छ ।	
१५३६	धनेश्वर सू०	१०९
	निगमा विभावक गच्छ ।	
१५५६	इन्द्रनंदि सू०	४०४
	पल्लिवाल गच्छ ।	
१५०८	... ...	५७७
१५१३	यश सू०	५३३
१५२८	नन्न सू०	५३६
१५४८	उज्जोयण सू०	६७१
१६६८	... ...	७८७
१६७८	... .	७२६
	पवीर्य गच्छ ।	
१५०७	यशोदेव सू०	४१२
	पार्श्वनाथ गच्छ ।	
१७८६	... ...	३१६
१८२१	... ...	८३
१८३०	जिनहर्ष सू०	५९
,,	भानुचन्द्र सू०	६०

संवत्	नाम	लेखांक
	पिप्पल गच्छ ।	
१२०८	विजयसिंह सू०	९६६
१४६५	वीरप्रभ सू०	,,
१४६१	उदयदेव सू०	४३०
१५१३	गुणरत्न सू०	६०८
१५३६	अमरचन्द्र सू०	६
१७१८	धर्मप्रभ सू०	६६५
	पूर्णिमा गच्छ ।	
१४७१	जिनवल्लभ सू०	३
१५११	जयचंद्र सू०	६१२
१५१५	,,	६२८
,,	मतितिलक सू०	४८३
१५१६	साधुरत्न सू०	५५४१
१५१६	जयभद्र सू०	४३
१५२२	विजयचन्द्र सू०	७२
१५२८	,,	३५
१५२७	साधुसुन्दर सू०	७६८
१५३२	,,	५६१
१५३१	पुण्यरत्न सू०	६६
१५६३	... ...	५६५
१५७७	मुनिचन्द्र सू०	१३२
१५६८	विनयचन्द्र सू०	६०४
१६००	मुनिरत्न सू०	५५
	प्रभाकर गच्छ ।	
१५७२	लक्ष्मीसागर सू०	७६४
	ब्रह्माणीय गच्छ ।	
१५४४	... ...	८११

संवत्	नाम	लेखांक
११८५	यशोभद्र सू०	७०१
१४३६	बुद्धिसागर सू०	५७२
१४४६	हेमतिलक सू०	९६८
१४५६	उदयानंद सू०	६५
१५११	विमल सू०	११७
१५१७	उदयप्रभ सू०	५८८
१५१६	वीर सू०	१०५।६६३
१५२०	शीलगुण सू०	४२२
१५६६	गुणसुन्दर सू०	४४८
	भावडार गच्छ ।	
१४६६	वीर सू०	६१६
१५३२	भावदेव सू०	११८
	भिन्नमाल गच्छ ।	
१५	... ...	८१६
	मलधारि गच्छ ।	
१२५९	देवनंद सू०	८६
१३७८	तिलक सू०	६८४
१४८५	विद्यासागर सू०	४०६
१५१२	गुणसुन्दर सू०	६९१
१५४६	गुणकीर्त्ति सू०	४१३
१५५३	श्री सू०	४९४
१५५८	लक्ष्मीसागर सू०	६४८
१५७०	,,	५९६
	महाहडीय गच्छ ।	
१५०७	नयकीर्त्ति सू०	६२२
१५५६	मतिसुन्दर सू०	४६६

संवत्	नाम	लेखांक
		१५१।२७८
१४८६	,,	
१५१३	ईश्वर सू०	७६४
१५३२	सालि (शांति ?) सू०	२८०
१५३४	शांति सू०	७५१
१५४५	,,	८२४
१५५७	,,	५६४
१५६३	,,	६६२
१५६५	,,	५६६
१५७२	,,	६११
१५९६	साल सू०	१७०
१५९७	ईश्वर सू०	८५२
१६०३	शांति सू०	६७८
१६४७	सू० नयसुन्दर ग०	७
१७२०	देवसुन्दर सूरि	७१५
,,	जिनसुंदर सू०	७१६

सागर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५२०	अमृतचन्द्र सू०	३०४
१६०४	शांतिसागर सू०	५६।७
१६४५	,,	५२६

सिद्धान्ति गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५६५	देवसुन्दर सू०	५६७

हुंबड गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३०	सिंघदत्त सू० } सू० शीलकुंजर ग० }	६५

[जिनके गच्छोंके नाम नहीं लिखे हैं]

संवत्	नाम	नं०
९९६	बलभद्र सू०	८९८
१०११	देवदत्त सू०	१३४
१०५३	शांतिभद्र सू०	८६८
११४४	ऐन्द्रदेव सू०	६१६
११४६	जिनचन्द्र सू०	८८१
११५०	महेश्वराचार्य	३८७
१२०३	महंत सू०	८८५
१२३०	आनन्द सू०	८९२।८९३
१२३१	नेमिचन्द्र सू०	६१२
१२३४	देव सू०	७२८
१२३६	बुद्धिसागर	६०६
१२५१	सुमति सू०	८७६
१२५७	महेष्ठीराचार्य	४०८
१२६८	रामचन्द्राचार्य	८६६
१२९६	पूर्णचन्द्रोपाध्याय	८६३
१३१४	चन्द्र सू०	६८६
१३१८	भावदेव सू०	५७८
१३६८	धर्मदेव सू०	६८३
१३७३	मणिभद्र	६८७
१३७५	हेमप्रभ सू०	६१
१३७६	महेन्द्र सूरि	५४५
१३८७	महातिलक सू०	६८८
१४२२	सूरप्रभ सू०	९२६
१४२३	उदयानन्द सू०	६१४
१४३३	गुणभद्र सू०	४५६
१४३८	जिनराज सू०	२११
१४६३	जयप्रभ सू०	६९७

संवत्	नाम	नं०
१४७१	विजयप्रभ सू०	६६
१४८०	विद्यासागर सू०	५८४
१४८१	सोमसुन्दर सू०	५४६
१४८१	पद्मशेखर सू०	५४७
१४८२	सुविप्रभ सू० / वीरभद्र सू०	४६७
१४८६	हेमहंस सू०	६५८
१४८६	नरसिंह सू०	६०१
१४८६	रत्नप्रभ सू०	४७०
१४९०	हेमहंस सू०	४२९
१४९९	नयचन्द्र सू०	६८८
१५०१	श्री सू०	५८५
१५०७	श्री सू०	५३२
१५०३	नयचन्द्र सू०	६७
१५१३	श्री सू०	३८३
१५१४	सर्वानन्द सू०	१०२
१५१४	रत्नशेखर सू०	६४
१५१६	वा० सोमदराज गणि	६३१
१५१७	दयारत्न	६१३
१५१८	पद्मानन्द सू०	१७५
१५१९	उदयवल्लभ सू०	६६१
१५२०	भ० विजयकीर्त्ति सू०	७४६
१५२१	सुविहित सू०	५७४
१५२६	साधुसुन्दर सू०	१२५
१५२७	श्री सू०	१५२
१५२७	भावदेव सू०	५६१
१५३४	श्री सू०	८२२
१५४०	साधुरत्न सू०	७४५
१५४७	श्री सू०	५६३
१५४८	भ० हेमचन्द्र सू०	४६१
१५५६	श्री सू०	१२७
१५६२	साधुसुन्दर सू०	४९८
१५६३	श्री सू०	२५
१५८०	सुमतिरत्न सू०	७४७
१५८६	सुविहित सू०	४८७
१६०५	जिनभद्र सू०	५१२
१६१५	तेजरत्न सू०	६६
१६४५	कनकविजय ग०	१८१
१७००	शुभकीर्ति	८७
१७०२	जिनचन्द्र सू०	१९८
१७१०	विजयानन्द सू०	३५
१७२१	भ० हीरविजय सू०	८५४
१७६१	कुशलविजय	८५०
१७७१	विजयऋद्धि सू०	३६३
१७८०	कर्पूर विजय ग०	८१
१८४१	श्रीसुन्दर सू०	६१३
१८४८	अमृतधर्म	८४६
१८४८	अमृतधर्म वाचनाचार्य	३८५
१८८३	विजयजिनेन्द्र सू०	७६६
१८८७	वा० चारित्रनंदि गणि	३४१
१८८८	जिनचन्द्र सू०	३४२
१८९७	वा० चारित्रनन्दन ग०	४३५
"	"	४३६

संवत्	नाम	लेखांक
,,	जिनमहेंद्र सू०	४४०
१९१०	,,	१६३।१६६
१९२०	अमृतचन्द्र सू०	५७
,,	वा० सदालाभ	४४
१९२४	सागरचन्द्र ग०	१७९
,,	उ० सदालाभ ग०	१७७
१९३०	सागरचन्द्र ग०	१७४
१९३५	मुनिपद्मजय	१८२।१८३
१९३१	जिनमुक्ति सू० बालचंद्र गणि	२३३
[illegible]	जिनचन्द्र सू०	१६३

मूलसंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	गुणभद्र सू०	३८८
[illegible]	जिनचंद्र देव भ०	३२३
[illegible]	देवकीर्ति	२७६
[illegible]	जिनचन्द्र सू०	४७२
१५३५	विद्यानन्द	२८६
,,	भ० ज्ञानभूषण	४८७
,,	,,	५९२
१५३८ ...	... ...	१९३
,, ...	... ...	२८८
१५४८	भ० जिनचन्द्र देव	३२४
[illegible]	भ० जिनचन्द्रदेव	७१
[illegible] ...	... ...	४९५
१६२७	सुमतिकीर्ति सू०	६३१
१६८३	भ० रत्नचन्द्र जयकीर्ति उ०	३५१

मूलसंघ [सरस्वती गच्छ]

संवत्	नाम	लेखांक
१५२३	भ० विद्यानन्दि	६८०
१५२४	भ० विमलकीर्ति	५८०
१५२५	विमलेन्द्रकीर्ति	६४६
१६०४	भ० देवेन्द्रकीर्ति	३२५
१६०८	भ० शुभचन्द्र	५०२
१६३८	भ० मेरुकीर्ति	२२१
१६६०	विद्दकीर्ति	४५१
१६६६ ...	... ...	९५८
१७०० ...	... ...	५८५
१७११ ...	... ...	६४०
१७४६ ...	... ...	६४५
१८५०	कनककीर्ति	२३४

मूलसंघ-नन्दिसंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८०	भ० सकलकीर्ति	५५१

मूलसंघ-काष्ठासंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१७३४	त्रिभुवनकीर्ति	६४१

काष्ठासंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३ ...	... ...	५३१

काष्ठासंघ [माथुर गच्छ]

संवत्	नाम	लेखांक
१७३२	भ० रूपचन्द्र	३३१
१८८१	जगत्कीर्ति भ०	१८५
१९१०	राजेन्द्रकीर्त्ति देव	३२१